ALONE IN MAJESTY
As
EKMATRAPRATAPIPARMESHWAR
by William MacDonald

Copyright: Christian Missions in Many Lands, Inc.
P.O. Box 13, Spring Lake, NJ 07762, USA.
English OriginallPublished by Gospel Folio Press, 304 Killaly St W, Port Colborne, ON, L3K 6A6, Canada
Under ISBN: 978-18-93579-07-7
This Indian Edition is brought out with the kind permission granted by the copyright owners.
First Hindi Print 2016: 2000 copies

Published by
Operation Barnabas (For Project Ezra)
'Benaiah' Kalkeri Road, Ramamurthy Nagar, P.O. Box 1633
Bangalore 560016 India, Tel: (080) 25654427, Fax: (80) 25651166
Translated and Coordinated by
Project Ezra
C/o Nishant Sidh
Near Khan Nursing Home, Stadium Road, Rajnandgaon, 491441, (C.G.) India,
Tel: 07744 224713, 9406330075, projectezra@rediffmail.com
Project Coordinator
Atulya Prashant Masih
Rehoboth Christian Assembly, "Anugrah Nilayam", AB-2 Nehru Nagar
Rajnandgaon, 491441>, (C.G.) India, 07744224720, 9301726085.
Acknowledgement
Atulya Prashant Masih & Nishant Sidh (Translators)
Cover design is adopted with kind permission from the Indian English Edition, published by Moriah Ministries, Chennai.
With Sincere Love and Prayers
Project Ezra Committee
Dr. Johnson C Philip, Dr. Matthew Varghese, Dr. Babu Varghese, Bro. Roy T Daniel,
Bro. Babu Thomas, Dr. Shalu T Nainan, Bro. Rabbi John, Bro. Sam Siju Philip,
Bro. Atulya Prashant Masih.

विषय–सूची

एकमात्र प्रतापी परमेश्वर

प्रस्तावना 7

भाग एक: परमेश्वर के अद्वितीयविशिष्ट गुण

1. एकमात्र सच्चा परमेश्वर 11
2. त्रिएक परमेश्वर 15
3. जीवन का अनसृजा स्त्रोत 23
4. अपने आप में परिपूर्ण परमेश्वर 25
5. उसका अपार ज्ञान 29
6. एकमात्र सर्वशक्तिमान 37
7. सर्वत्र सदैव उपस्थित: सर्वव्यापी परमेश्वर. 45
8. अनादि और अनन्त राजा 49
9. परमेश्वर मर नहीं सकता 53
10. उसे मापा नहीं जा सकता 55
11. सर्वाधिकारी सर्वोच्च शासक 57
12. अत्यन्त सर्वोपरि 63
13. इतना महान कि उसे पूरी तरह से समझ पाना असम्भव है 67
14. उसका सिद्ध पूर्वज्ञान 69
15. सदा एक सा 73

भाग दो: परमेश्वर के वे गुण जिन्हें वह दूसरों के साथ बाँटता है

16. परमेश्वर आत्मा है 79
17. उसका अद्‌भुत प्रेम 83
18. अचम्भित कर देने वाला उसका अनुग्रह 91
19. करुणा से भरपूर 101
20. उसका भयानक क्रोध 109

21. पवित्र परमेश्वर 109
22. वर्णन से बाहर उसकी बुद्धि 117
23. परमेश्वर भला है 121
24. उसकी अपार उदारता 125
25. निष्पक्ष, न्यायी, सीधा 131
26. उसकी ईश्वरीय जलन 135
27. उसकी सच्चाई महान है 137
28. धीरज खो देने में धीमा 141
29. प्रभु महान है 145

समापनः ऐसा है हमारा परमेश्वर 151

सहायक पुस्तकों की सूची 155

विलियम मैकडोनाल्ड

(7 जनवरी, 1917 – 25 दिसम्बर, 2007)

''अनजानों के सदृश्य . . . तौभी प्रसिद्ध . . .'' (2 कुरि. 6:9)

स्काटिश मूल के विलियम मैकडोनाल्ड का पालन–पोषण परमेश्वर का भय मानने वाले एक परिवार में हुआ था। बाल्यावस्था में वे बड़ी मुश्किल से मरते–मरते बचे। काफी कम आयु में ही उन्होंने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया। बैंक में उन्हें मिल रहे एक ऊँचे पद को अस्वीकार करअपनी युवावस्था में ही उन्होंने अपना जीवन प्रभु की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। पचास वर्षों से भी अधिक समय तक उन्होंने मसीही विश्वास के आधारभूत विषयों को लेकर सिखाने, उपदेश देने, और लिखने के द्वारा अपनी सेवा दी। उन्होंने बाइबल की सच्चाइयों को स्पष्ट, सटीक, और सरल शैली में निडरतापूर्वक प्रस्तुत किया।

यद्यपि सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों के लेखकों की सूची में आज उनका नाम नीचे की ओर है, फिर भी, उनकी 84 पुस्तकें, जिनमें ''सच्ची शिष्यता'' भी शामिल है, विश्वासियों की अनेक पीढ़ियों पर प्रभाव डालती रही हैं। उनके द्वारा लिखी गई, ''बिलिवर्स बाइबल कॉमेन्ट्री'' का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया जा चुका है। कुछ देशों में सिर्फ यही टीका पुस्तक, बाइबल की एकल–संस्करण टीका के रूप में उपलब्ध है। उन्होंने सैकड़ों ट्रैक्ट्स भी लिखे हैं, जैसे ''*आई मस्ट टेल यू दिस,*'' जिससे अनेक लोगों के जीवन परिवर्तित हुए। कुछ वर्ष पहले ही उन्होंने सुसमाचार की दो सीडियाँ – *''नथिंग हैप्पन्स बाइ चान्स''* और *''द वर्ल्ड्स बिगेस्ट लाई''* तैयार की, जिनका वितरण हजारों लोगों द्वारा हुआ।

उनके उपदेश से संसार भर के हजारों लोग प्रभावित हुए हैं, तथा आज भी आप voicesforchrist.org पर उनके द्वारा दिये गये संदेशों को सुन सकते हैं। वे इम्माऊस बाइबल स्कूल में अध्यक्ष के रूप में सक्रियता से जुड़े हुए थे, साथ ही वे *डिसाइपलशिप इन्टर्न ट्रेनिंग प्रोग्राम, ओ.एम.,* और *न्यू ट्राइबल मिशन्स* के साथ भी जुड़े रहे। उन्होंने अनगिनत सभाओं, सेमीनार, और स्थानीय कलीसियाओं की आराधनाओं और गतिविधियों में भाग लिया। विदेश के मिशन क्षेत्रों में उनकी यात्राएं कभी कभी जोखिम–भरी और अक्सर कठिन हुआ करती थीं। यद्यपि वे सबके प्रति परोपकार का भाव रखते थे, किन्तु सच्चाई के पक्ष लेने में वे कभी भी कोई समझौता नहीं करते थे। उन्होंने जैसा प्रचार किया, वैसा ही सचमुच में उनका जीवन भी था। अनुग्रह और सच्चाई के बीच ऐसा व्यावहारिक संतुलन रखने वाला उनके समान कोई दूसरा व्यक्ति मिल पाना काफी कठिन होगा।

हे मेरे परमेश्वर, तू कितना है अद्‌भुत,
तेरे प्रताप का क्या ही है तेज!
तेरी दया का सिंहासन क्या ही है सुन्दर,
जलते प्रकाश की गहराईयों में कैसा मनोहर!

कितना अद्‌भुत, कितना सुन्दर,
होगा तेरे दर्शन का दृश्य!
तेरी अपार सामर्थ्य, तेरी अनन्त बुद्धि
तेरी पवित्रता कर देती विस्मित!

– फ्रेड्रिक विलियम फ़ेबर

क्योंकि यह परमेश्वर,
सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है,
वह मृत्यु तक
हमारी अगुवाई करेगा।

– भजन संहिता 48:14

प्रस्तावना

परमेश्वर का अस्तित्व सारे धर्म का आधार है।
– स्टीफ़न शेरनोक

परमेश्वर के अस्तित्व की सच्चाई का अर्थ यह है कि हम (जो सृष्टि हैं), मानव प्राणियों के रूप में परमेश्वर (जो सृष्टिकर्ता है) के प्रति जबावदेह हैं। यदि एक सर्वोच्च सृष्टिकर्ता और पालनहार का अस्तित्व है, तो उसकी सृष्टि की उसके प्रति जवाबदेही है। अमरीकी प्रवक्ता डेनियल वेबस्टर ने एक बार कहा था कि उनके मन में अब तक का सबसे गूढ़ विचार यह आया है कि वे परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं।

यदि क्रमिक विकासवाद की धारणा सही होती, तो समाज के लिए कोई नैतिक मापदण्ड नहीं होता। यदि हमारा अस्तित्व संयोग, या अणुओं के अचानक मिल जाने का परिणाम होता, तो कोई भी व्यक्ति युद्ध, हत्याओं, चोरियों, या किसी भी असामाजिक आचरण में त्रुटि नहीं पाता। किसी उच्च अधिकार के प्रति लोगों की कोई जवाबदेही नहीं होती।

पौलुस प्रेरित ने रोमियों की पत्री के पहले अध्याय में यह ध्यान दिलाया है कि हर व्यक्ति जानता है कि कोई एक परमेश्वर है। सृष्टि परमेश्वर के अस्तित्व को प्रगट करती है; सृष्टि का अपने अस्तित्व में होने के लिए, एक सृष्टिकर्ता का होनाअनिवार्य है, सृष्टि को सुव्यवस्थित रूप दिए जाने के लिए एक रूप देने वाले की आवश्यकता है। और यह बात विवेक में प्रगट होती है; हम सब के भीतर एक विवेक है जो हमें सही और गलत की चेतावनी देता है। व्यवस्था में जिन कार्यों की मांग की गई है, वे हमारे हृदयों में लिखे हुए हैं।

एकमात्र सच्चे परमेश्वर को न मानने वाले लोग उसे अपने मन और ज्ञान में बसाना नहीं चाहते। वे यह जानते हैं कि ऐसे परमेश्वर पर विश्वास करने से उनकी जीवन–शैली गड़बड़ा जाएगी। इसलिए वे मूर्तिपूजा की ओर फिर जाते हैं। वे लोगों की, पक्षियों की, पशुओं की, और साँपों की प्रतिमा बनाते हैं और फिर उनकी पूजा–आराधना करते हैं। इस क्रम में हम देख सकते हैं, कि चूंकि हर एक ऐसी मूर्ति सृष्टि के क्रम में एक पायदान नीचे की ओर जाने लगती है, इसका अर्थ यह है कि शुद्ध जीवन जीने के प्रति उन लोगों की जवाबदेही समझने का अंश भी कम होता जाता है। यदि साँप उनका परमेश्वर है, तो फिर वे कैसा भी जीवन व्यतीत करें, यह कोई महत्व नहीं रखता। यह मूर्तिपूजा और व्यभिचार के बीच के निकट सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। मानव प्राणी के द्वारा बनाई गई मूर्तियाँ अपने आराधकों के सामने कोई नैतिक मांग नहीं रखतीं।

हम जिसकी आराधना करते हैं, हम उसी के समान बनते जाते हैं। हम चाहे धन की आराधना करें, पापमय मानवता की, शरीर की अभिलाषाओं की, भौतिक सम्पत्तियों की, या खोदी गई मूरतों की, हम इन्हीं के समान बनते जाते हैं। दूसरी ओर, जब हम परमेश्वर की आराधना जितनी अधिक करते हैं, उतना ही अधिक हम उसके स्वरूप में बदलते जाते हैं (2 कुरि. 3:18)।

हमारा विश्वास हमारे आचरण को तय करता है। इसलिए परमेश्वर के प्रति सच्चे विचार का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे विचार उसके प्रति जितने ऊँचे होंगे, हमारा जीवन भी उतना ही ऊँचा, पवित्र, और महिमामय होगा।

परमेश्वर के कुछ विशिष्ठ गुण सिर्फ उसी में पाए जाते हैं। उन्हें *दूसरों को नहीं दिया* जा सकता, अर्थात्, हम उन गुणों के भागी नहीं हो सकते। उदाहरण के लिए, सिर्फ परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, और सर्वव्यापी है। हम कभी भी अपरिवर्तनीय या असीमित नहीं बन सकते। यद्यपि विश्वासी हमेशा के लिए जीवित रहेंगे, फिर भी उन्हें अनादि–अनन्त नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनका एक आरम्भ है। भाग एक में, हम परमेश्वर के इन्हीं अद्वितीय गुणों के बारे में चर्चा करेंगे, जो सिर्फ उसी में पाए जाते हैं, और दूसरे जिन गुणों के भागी नहीं हो सकते।

परन्तु परमेश्वर अपने कुछ गुणों और चरित्रों को मानव जाति के साथ बांटता भी है। इन्हें दूसरों को दिए जा सकने वाले गुण कहा जा सकता है। हम भाग दो में इन गुणों पर चर्चा करेंगे। नि:सन्देह, हम इन गुणों में कभी भी सिद्ध नहीं हो सकते। हमारे गुण हमेशा परमेश्वर के गुणों के निर्बल और फीकी झलक ही होंगे। परन्तु हम प्रेम कर सकते हैं, पवित्र बन सकते हैं, और दया दिखा सकते हैं। हम न्यायसंगत और सच्चे हो सकते हैं, अनुग्रह और भलाई कर सकते हैं। और इसलिए क्योंकि हम ऐसा कर सकते हैं, हमें अवश्य ही ऐसा करना चाहिए। इसी तरह से हम परमेश्वर के सदृश बन सकते हैं (इफि.5:1)।

हमारे अध्ययन का उद्देश्य सिर्फ परमेश्वर के गुणों के विषय में ज्ञान हासिल करना नहीं है, परन्तु हमारे प्रतिदिन के मसीही जीवन में उसके उन गुणों को विकसित करना है जिन्हें वह हमारे साथ बाँटता है।

अब समय आ चुका है कि हम परमेश्वर के विशिष्ठ गुणों का अध्ययन आरम्भ करें। साधारणत: हम परमेश्वर के विशिष्ठ गुणों का वर्णन करके ही हम उसे परिभाषित करते हैं। उदाहरण के लिए, *संक्षिप्त मसीही मौलिक शिक्षा (शार्टर केटाकिस्म)* में लिखा है, ''परमेश्वर एक (परम) आत्मा है, वह अपने अस्तित्व, अपनी बुद्धि, सामर्थ, पवित्रता, अपने न्याय, अपनी भलाई, और सच्चाई में असीमित, अनन्त, और अपरिवर्तनीय है।''

परमेश्वर की चारित्रिक–विशेषताओं पर गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करने के द्वारा, निश्चय ही, हम और अधिक सच्चाई से उसकी आराधना कर सकेंगे, उस पर पूर्ण रूप से भरोसा रख सकेंगे, उसकी सेवा और अधिक विश्वासयोग्यता से कर सकेंगे, और अपने सारे तौर–तरीकों में उसकी समानता में, और अधिक ढलते जाने का प्रयत्न करेंगे।

भाग एक

परमेश्वर के अद्वितीय विशिष्ठ गुण

"हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य, और आश्चर्यकर्म का कर्ता है।"

– मूसा के गीत का एक लघुअंश
(निर्गमन 15:11)

–1–

एकमात्र सच्चा परमेश्वर

हे इस्राएल सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है,
यहोवा एक ही है!
– व्यवस्थाविवरण 6:4

बाइबल हमें यह बताती है कि एक ही परमेश्वर है, और वही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। यह वही परमेश्वर है जिसने अपने आप को अब्राहम और उसके वंशजों पर प्रगट किया था। परन्तु समय के आरम्भ से ही, वे सब लोग उसे जानते हैं जो अनेकेश्वरवाद (बहुत से ईश्वरों के अस्तित्व पर विश्वास) और मूर्तिपूजा के विरुद्ध थे।

आधुनिक विचारधारा यह है कि लोग बहुत से ईश्वरों पर विश्वास करते थे, और धीरे–धीरे, इब्री भविष्यद्वक्ताओं की दीप्त–प्रतिभा के कारण, एकेश्वरवाद (एक ही ईश्वर की धारणा) पर विश्वास करने लगे। बाइबल इसके ठीक विपरीत शिक्षा देती है: आरम्भ से ही परमेश्वर ने यह प्रगट कर दिया था कि वह एक ही है – और वही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है।

इस अध्याय के शीर्षक के साथ दिया गया पद यहूदीवाद का विश्वासमत है, इस विश्वासमत को *शेमा* कहा जाता है; इब्रानी भाषा के इस शब्द का अर्थ है, ''सुनना,'' और यह यहूदी–विश्वासमत का पहला शब्द है।

जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर एक है, तो हमारे कहने का अर्थ यह है कि वह पूरी तरह से आत्मा है, वह अलग–अलग भागों से नहीं बना है, जैसा कि हम (आत्मा, प्राण, और देह)।[1] परन्तु जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर एक है, तो यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इब्रानी भाषा में एकत्व के लिए दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है, एक शब्द पूरी तरह से संख्यात्मक दृष्टि से एक को दर्शाता है, और दूसरा एकता को दर्शाता है: जैसे कि हमारे द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द *संयुक्त*। यह दूसरा शब्द परमेश्वर के लिए प्रयोग में लाया जाता है।[2]

पुराना नियम के पद जो परमेश्वर की अद्वितीयता और एकता पर जोर देते हैं, उनमें एक पद यह है जो मन्दिर के समर्पण के समय सुलैमान राजा के द्वारा कहा गया: ''और इस से पृथ्वी की सब जातियाँ यह जान लें, कि यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा

नहीं'' (1 राजा 8:60)। वैसे ही छोटे भविष्यद्वक्ताओं में से एक ने भविष्यद्वाणी करते हुए कहा था,

> तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा,
> और उस समय एक ही यहोवा और
> उसका नाम भी एक ही माना जाएगा (जक. 14:9)।

परमेश्वर अद्वितीय है। वह एक है – सिर्फ एक। उसकी महिमा का भागी कोई नहीं बन सकता, कोई प्रधान स्वर्गदूत भी नहीं, कुंवारी मरियम भी नहीं, या कोई संत, भविष्यद्वक्ता, या प्रेरित भी नहीं।

नया नियम में पुराना नियम के एकेश्वरवाद (यह धारणा कि ईश्वर एक ही है), को कायम और जारी रखा गया है, जैसा कि निम्नलिखित पदों से स्पष्ट होता है:

मरकुस 12:29–30 में यह बताया गया है कि प्रभु मसीह अपने यहूदी हमवतनों के तरह ही, *शेमा* को सच्चे धर्म का आधार मानता था: ''यीशु ने उसे उत्तर दिया, 'सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है, ''हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।'' ' ''

यूहन्ना 17:3 में, प्रभु ने अपनी महायाजकीय प्रार्थना में, एकमात्र सच्चे परमेश्वर की एकता और अद्वितीयता का उल्लेख इस तथ्य के साथ जोड़ते हुए किया है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, और परमेश्वर को मसीह के द्वारा जानने में अनन्त जीवन है। यह विश्वास से होता है, जैसा कि सम्पूर्ण बाइबल बताती है (उदाहरण के लिए, उत्प. 15:6 और इफि. 2:8–9 देखें)।

संसार में झूठे ईश्वरों की भरमार के विषय में, पौलुस प्रेरित लिखता है,

> सो मूरतों के सामने बलि की गई वस्तुओं के खाने के विषय में – हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात्, पिता जिस की ओर से सब वस्तुए हैं, और हम उसी के लिए हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात्, यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं (1 कुरि. 8:4–6)।

यद्यपि यह सत्य है कि सिर्फ एक ही परमेश्वर है, पर अब जबकि उद्धारकर्ता जगत में आ चुका, हमें परमेश्वर पिता तक पहुँचने के लिए परमेश्वर पुत्र को जानने की आवश्यकता है: ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात्, मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमु. 2:5)। यह पद इस बात को भी खारिज कर देता है कि प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल, यूसुफ, कुंवारी मरियम, या कोई भी अन्य सन्त बिचवई हो सकते हैं।

यहूदी, मसीही, और इस्लाम[3] जैसे व्यवस्थित धर्म एकेश्वरवाद की शिक्षा देते हैं, अर्थात् यह कि परमेश्वर सिर्फ एक है। यह अच्छी बात है, परन्तु यही पर्याप्त नहीं है। याकूब हमें स्पष्ट रूप से यह बताता है: ''तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है। तू अच्छा करता है। दुष्टात्मा भी विश्वास रखते – और थरथराते हैं'' (याकूब 2:19)।

एकमात्र सच्चे परमेश्वर के प्रति हमें एक सच्चा सम्बन्ध रखना चाहिए, यह बात इब्री *शेमा* से प्रेरित इन पंक्तियों में व्यक्त की गई है:

प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है;
हमारे बहुत से ईश्वर नहीं हैं;
वह अद्वितीय और अविभाजित है,
महिमा और प्रताप सिर्फ उसी के हैं।

उससे हमें अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम रखना चाहिए,
अपने सारे प्राण से उसकी सराहना करनी चाहिए,
अपनी बुद्धि और शक्ति का सर्वोत्तम उसे देकर,
सदा–सर्वदा उसकी स्तुति–आराधना करनी चाहिए!

टिप्पणियाँ

1. अवश्य ही, देहधारण के समय, परमेश्वर पुत्र ने कुंवारी से जन्म लेने के आश्चर्यकर्म के द्वारा मानव देह को पहिन लिया। सारे अनन्तकाल तक एक परमेश्वर–मानव सिंहासन पर होगा – महिमा दी गई एक आत्मिक देह के साथ।

2. इब्रानी शब्द क्रमशः *एकाद* और *याचिद* हैं। शेमा में शब्दों का चुनाव त्रिएकत्व के सिद्धान्त के लिए मार्ग प्रशस्त करता है (अगला अध्याय देखें)। *एकाद* शब्द संयुक्त एकता को दर्शाता है, जैसे कि अंगूरों का गुच्छा – अनेक अंगूर मिल कर एक गुच्छा बनाते हैं। दूसरा शब्द *याचिद* का प्रयोग यिर्मयाह 6:26 में एकलौते पुत्र के लिए किया गया है।

3. पुराना नियम में वर्णित इब्रियों का परमेश्वर वह है जो हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता परमेश्वर है। इस्लाम धर्म का ईश्वर अल्लाह, जिसकी शिक्षा मोहम्मद साहब के द्वारा दी गई, वह स्वभाव में (बाइबल के) परमेश्वर से पूरी तरह भिन्न है।

–2–

त्रिएक परमेश्वर

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।

– मत्ती 28:19–20

संसार से विदा होते समय प्रभु के द्वारा कहे गए ये वचन यह दर्शाते हैं कि बपतिस्मा–सूत्र, जो एक विश्वासी पर एक मसीही होने का अधिकारिक छाप लगाता है और उस व्यक्ति को कलीसिया अर्थात् मसीह की देह के साथ एक करता है, त्रिएकत्व को दर्शाने वाला सूत्र है। इसका अर्थ यह है कि इस सूत्र में यह स्वीकार किया गया है कि परमेश्वर त्रिएक है, या और सरल शब्दों में, परमेश्वर एक त्रिएकता है।

परन्तु इसका अर्थ क्या है कि हमारा परमेश्वर त्रिएक है?

एक बात निश्चित है: इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग तीन ईश्वर (त्रिदेववाद) की आराधना करते हैं! कुछ त्रिएकत्व–विरोधियों ने यह दोष लगाया है। जैसा कि हमने देखा कि हमारा परमेश्वर एक है। परन्तु वह तीन भी है। यह कैसे सम्भव है कि परमेश्वर एक भी है और उसी समय तीन भी है? इसका उत्तर यह है कि वह जिस तरीके से तीन है, उससे भिन्न तरीके से वह एक है। जहाँ तक उसके सारतत्व की बात है, निश्चय ही परमेश्वर एक है। परमेश्वर एक ही है। तौभी यह एक परमेश्वर स्वयँ को तीन व्यक्तियों में कायम रखता या उनमें विद्यमान रहता है; परमेश्वरत्व में तीन व्यक्तित्व हैं।

साथ ही, इसका अर्थ यह भी नहीं है कि परमेश्वर एक है परन्तु सिर्फ अपने आप को प्रगट करने में वह अलग–अलग समयों पर तीन अलग अलग–तरीकों या माध्यमों को अपनाता है। कुछ झूठे शिक्षकों ने यह कहा है कि पिता पुत्र है और पुत्र पवित्र आत्मा है। इस प्रकार की झूठी शिक्षा को रूपवाद *(मोडलिज़्म)* नाम दिया गया है, क्योंकि इनका मानना है कि एक परमेश्वर इतिहास में तीन भिन्न रूपों (*मोड्स)* में प्रगट होता है।

कुछ लोग जो त्रिएकत्व का विरोध करते हैं (लगभग सभी अप्रमाणिक मत या गलत शिक्षाएं देने वाले समूह ऐसा करते हैं) उनका कहना है कि *त्रिएक* शब्द का प्रयोग बाइबल में नहीं किया गया है। ठीक है, हम उनकी बात को मान लेते हैं। परन्तु धर्मविज्ञान के अनेक अन्य उपयोगी शब्दों, जैसे, सहस्राब्दि, कुंवारी से जन्म, अनन्त सुरक्षा, का प्रयोग भी बाइबल में नहीं किया गया है, जबकि ये सभी बाइबल की शिक्षाओं के सारांश हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि त्रिएकत्व की सच्चाई की शिक्षा बाइबल में दी गई है। त्रिएक शब्द अंग्रेजी के *ट्रिनिटी* का अनुवाद है जो लैटिन शब्द *ट्रिनिटास* से आया है, इस शब्द को तीसरी शताब्दी में रूप दिया गया है। अंग्रेजी का *ट्राय–यूनिटी* (तीनों में एकता) शब्द अधिक उपयुक्त शब्द होता, परन्तु एक हजार सात सौ वर्ष पुराने एक शब्द को बदलने में अब काफी देर हो चुकी है।

जैसा कि हमने देखा, पुराना नियम में परमेश्वर की एकता पर जोर दिया गया है। किन्तु, वहाँ भी परमेश्वर के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले इब्रानी शब्द **एक** का अर्थ पूर्ण रूप से संख्यात्मक और एकल या अकेले के अर्थ में एक नहीं, बल्कि संयुक्त भाव में एक है। पुराना नियम के लोगों के सामने परमेश्वर ने अपने एक होने पर इसलिए जोर दिया था, क्योंकि मेरा मानना है, कि इस्राएल चारों ओर से पूरी तरह अनेकेश्वरवादी अन्यजाति मूर्तिपूजकों से घिरा हुआ था। इससे पहले कि उन्हें परमेश्वर के त्रिएकत्व के बारे में बताया जाता, उन्हें उसके एक होने और उसकी आत्मिकता के विषय में ठोस शिक्षा देना आवश्यक था। बाबुल की बन्धुआई के बाद ही इस्राएल बहुत से अन्यजाति देवताओं के पीछे भागने की बीमारी से चंगा हो पाया।

बाइबल का सबसे पहला पद, ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्प. 1:1), कम से कम, मूल इब्री भाषा में, परमेश्वर की त्रिएकता की ओर संकेत करता है। यहाँ पर परमेश्वर के लिए *एलोहीम* शब्द का प्रयोग किया गया है, यह एक पुर्लिंग बहुवचन संज्ञा है जिसका अनुवाद मूर्तिपूजा के सन्दर्भ में ''देवताओं'' या ''ईश्वरों'' किया जाता है। तौभी जिस क्रिया *(बारा)* का अनुवाद *''सृष्टि की''* किया गया है, वह एक पुर्लिंग एकवचन क्रिया है। एक बहुवचन संज्ञा के साथ एक एकवचन क्रिया का होना सम्भव नहीं है। (यह हिन्दी में कुछ इस तरह हो जाएगा, ''व्यक्तियों जाता है।'') अनेक विद्वान इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि *एलोहीम वैभव और प्रताप* को दर्शाने वाला *बहुवचन* है। यह व्याकरण के दृष्टिकोण से सही हो सकता है। किन्तु, उत्पत्ति में आगे, परमेश्वर ने अपने आप के लिए ''हम'' और ''अपनी (हमारी) समानता'' का प्रयोग किया है (1:26; 3:22; 11:7)। यहाँ पर बहुवचन में व्यक्तियों की एकता को एक परमेश्वर के रूप में सशक्त रीति से दर्शाया गया है।[1] चाहे जो भी हो, यह एक ऐसा प्रकाशन है जो धीरे–धीरे खुलता

जाता है, अर्थात्, जैसे–जैसे बाइबल का प्रकाशन नया नियम की ओर आगे बढ़ता जाता है, त्रिएक परमेश्वर के बारे में प्रकाशन और भी स्पष्ट होता जाता है। अंतत: नया नियम में परमेश्वर के तीन व्यक्तित्वों को स्पष्ट रूप से प्रगट कर दिया गया है।

पुराना नियम में परमेश्वर के स्वभाव के विषय में दिया गया एक और प्रकाशन जो त्रिएकत्व की शिक्षा के अनुरूप है, प्रभु (यहोवा) के स्वर्गदूत (या दूत) के प्रगट होने से सम्बन्धित है। वह लोगों के सामने मनुष्य रूप में प्रगट होता है, तौभी उनके द्वारा परमेश्वर के रूप में पहिचाना जाता है। उदाहरण के लिए, हाजिरा ने उसे देखा और उसे एक ऐसे परमेश्वर के रूप में पहिचाना जो उसे देखता है (उत्प. 16:7–14)। जलती हुई झाड़ी वाले अत्यंत महत्वपूर्ण दृश्य में, यही यहोवा का दूत मूसा के सामने परमेश्वर के रूप में प्रगट हुआ। कुछ समय बाद भी, परमेश्वर ने ''एक दूत'' को अपने लोगों के आगे आगे भेजने के विषय में कहा है (निर्ग.33:2,3)। साथ ही होशे ने याकूब के विषय में लिखा कि ''वह परमेश्वर के साथ लड़ा। वह *दूत* से लड़ा'' (होशे. 12:3–4)।

यहोवा का दूत एक ही समय में परमेश्वर और उसका दूत कैसे हो सकता है? यदि परमेश्वर संख्यात्मक रूप से एक ही प्राणी होता, तो यह असम्भव होता। परन्तु इस प्रकाशन को त्रिएकत्व के सिद्धान्त की सहायता से समझा जा सकता है। यहोवा का दूत वास्तव में परमेश्वर है – परमेश्वर पुत्र अपने देहधारण से पहले के रूप में। वह परमेश्वर पिता से, जिसने उसे भेजा है, भिन्न व्यक्ति है। वे अलग अलग व्यक्ति हैं, तौभी पवित्र आत्मा के साथ मिलकर, वे एकमात्र सच्चा परमेश्वर बनते हैं।

पुराना नियम में त्रिएक परमेश्वर से संबंधित अन्य संकेत भी पाए जाते हैं। गिनती 6:24–26 में, हारून की प्रार्थना में, ''यहोवा'' नाम का प्रयोग तीन बार किया गया है। यशायाह 6:3 में, साराप एक दूसरे को पुकारते हुए कह रहे हैं,

सेनाओं का यहोवा
    पवित्र, पवित्र, पवित्र है;
सारी पृथ्वी उसके तेज़ से भरपूर है!

ये प्रचलित पद त्रिएकत्व को प्रमाणित तो नहीं करते, परन्तु निश्चय ही इस सच्चाई से पूरी तरह से सहमत होते हैं।

पुराना नियम का एक सुन्दर पद है, जिसे त्रिएकत्व के माननेवालों को अवश्य ही जानना चाहिए, इस पद में ''प्रभु यहोवा परमेश्वर (पिता),'' ''उसकी आत्मा,'' और वह जो

''भेज दिया'' गया (''मुझे'' अर्थात्, पुत्र, शामिल हैं):

> मेरे निकट आ कर इस बात को सुनो,
> आदि से लेकर अब तक मैंने कोई बात गुप्त में नहीं कही;
> जब से वह हुआ, तब से मैं वहाँ हूँ।
> और अब प्रभु यहोवा ने और उसकी आत्मा ने
> मुझे भेज दिया है। (यशायाह 48:16)।

न्यू किंग्स जेम्स वर्शन की पाद–टिप्पणी *(फुट नोट)* में बताया गया है, कि इब्रानी में ''भेजा है'' के लिए एकवचन क्रिया का प्रयोग किया है, जो व्यक्तियों की एकता को दर्शाता है।[2]

नया नियम में, पवित्र त्रिएकत्व के विषय में प्रकाशन बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिया गया है।

हमारे प्रभु के बपतिस्मा के अवसर पर, तीनों ईश्वरीय व्यक्तित्व उपस्थित थे:

> उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।
> और जब वह पानी से निकल कर ऊपर आया, तो तुरन्त उसने आकाश को खुलते
> और आत्मा को कबूतर के समान अपने ऊपर उतरते देखा। और यह आकाशवाणी
> हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ। (मरकुस 1:9–11)

पुत्र यरदन नदी में खड़ा था, पिता की उपस्थिति आकाशवाणी के रूप में प्रगट हो रही थी, और आत्मा अपने आप को परमेश्वर के पुत्र के ऊपर कबूतर के रूप में उतरता हुआ प्रगट कर रहा था। यह दृश्य त्रिएक परमेश्वर की सक्रियता का चित्रण प्रस्तुत करता है।

गलातियों 4:4–6 में, हम त्रिएक परमेश्वर को हमारे उद्धार के लिए मिलकर कार्य करता हुआ पाते हैं:

> परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा और
> व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा
> ले, और हमको लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो इसलिए परमेश्वर ने
> अपने पुत्र के आत्मा को जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है हमारे हृदय में भेजा है।

अन्य स्थल जिनमें त्रिएक परमेश्वर के तीनों व्यक्तियों को एक साथ दर्शाया गया है उनमें 1 कुरिन्थियों 12:3–6; इफिसियों 4:4–6; और 1 पतरस 1:2 शामिल हैं।

उपरौठी कोठरी के अपने प्रसिद्ध और सुन्दर उपदेश में, हमारे प्रभु ने त्रिएक परमेश्वर के व्यक्तियों के बीच के कुछ रिश्तों को प्रगट किया। दो पद एक समान हैं, तौभी आंशिक रूप से भिन्न हैं, ये पद हैं – यूहन्ना 14:26 और 15:26.

> परन्तु सहायक, अर्थात्, *पवित्र आत्मा* जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।
>
> परन्तु जब सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास *पिता* की ओर से भेजूंगा, अर्थात् *सत्य का आत्मा* जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।

चूंकि त्रिएकत्व का सिद्धान्त समझने में कठिन है, बाइबल के कुछ विद्वानों ने इसे समझाने के लिए प्रकृति से तीन गुणों वाले चरित्रों के उदाहरणों का सहारा लिया है। वास्तव में, इस सिद्धान्त को समझने में बहुत कठिनाई का होना यह दर्शाता है कि यह मनुष्य के द्वारा बनाई गई शिक्षा नहीं, बल्कि एक ईश्वरीय प्रगटीकरण है जिसे ग्रहण करने के लिए विश्वास अतिआवश्यक है। मनुष्य के द्वारा बनाया गया कोई भी धर्म कभी भी किसी ऐसी सच्चाई को सामने नहीं ला पाया है जो तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती।[3]

प्रकृति से उदाहरण लेकर त्रिएकत्व की सच्चाई को समझाने के प्रयास में पेट्रिक द्वारा तीन में एक परमेश्वर के चरित्र को समझाने के लिए *शमरॉक* (तिपतिया, तीन भागों वाली एक पत्ती वाले पेड़) का उदाहरण सबसे जाना पहिचाना उदाहरण है। शायद पेट्रिक के समय यह एक आकर्षक और प्रभावशाली उदाहरण रहा होगा, परन्तु वर्तमान में शायद ही यह काम आएगा।

स्थान, द्रव्य, और समय अवधि को लेकर भी अन्य उदाहरण दिए जाते हैं। स्थान का नाप त्रिगुणी या तीन पहलू वाला होता है, ऊँचाई, चौड़ाई, और गहराई। द्रव्य भी त्रिगुणी या तीन पहलू वाला होता है, यह तरल, ठोस, और गैस के रूप में होता है। पानी इसका सबसे अच्छा उदाहरण होता है, तरल (पानी), ठोस (बर्फ), या गैस (भाप)। समय भी त्रिगुणी या तीन पहलू वाला होता है, भूतकाल, वर्तमान काल, और भविष्यकाल, और तौभी ये सब समय ही हैं।

प्रकृति के ये तीन पहलुओं वाले उदाहरण अवश्य ही ईश्वरत्व के त्रित्व को अप्रत्यक्ष रीति से व्यक्त करते हैं, परन्तु इनकी कमजोरी यह है कि इन सबका कोई व्यक्तित्व नहीं है।

एक व्यक्ति आत्मा, प्राण, और देह से मिलकर बना है (1 थिस्स. 5:23), यह एक बेहतर उदाहरण है। मानव प्राणी तीन भागों से बना हुआ एक वास्तविकता है। जब परमेश्वर

ने हमें अपने स्वरूप में बनाया, तो तीन गुणों वाला यह स्वभाव शायद कम से कम इस अर्थ का एक हिस्सा था कि हम किस प्रकार से परमेश्वर के समान हैं।

संत अगस्टीन ने त्रिएक परमेश्वर *(डे ट्रीनीटेट)* पर अपने विद्वतापूर्ण व्याख्या में दो उदाहरणों का प्रयोग किया है जो सामान्य उदाहरणों से बेहतर हैं। वह पूरी तरह से उनसे सन्तुष्ट नहीं था, परन्तु इससे बहुत से समझदार मसीहियों को सहायता मिली, इसलिए आइये हम संक्षेप में इन दोनों उदाहरणों को देखें।

एक उदाहरण यह है कि त्रिएक परमेश्वर बोलने वाला (*स्पीकर,*वक्ता), बोला गया (*स्पोकन,* उच्चारित वचन), और बोलना (*स्पीकिंग*) के समान है। परमेश्वर–शीर्ष (त्रिएक परमेश्वर) में पिता, बोलने वाला या वक्ता है (जो कि भेजने वाले, स्त्रोत, और पहल करने वाले के रूप में प्रस्तुत किया जाता है)। पुत्र, बोला गया या वक्ता का वचन है। यह बात यूहन्ना 1:1 से मेल खाती है, जहाँ मसीह परमेश्वर के विचारों का जगत के सामने व्यक्त किया जाने वाला वचन है। पवित्र आत्मा, जो त्रिएक परमेश्वर का पृथ्वी पर सक्रिय अभिकर्ता (*एजेंट*) है, वह बोलने (*स्पीकिंग*) को दर्शाता है , विशेष कर अभी जबकि मसीह स्वर्ग को जा चुका है। अपनी प्रेरणा से लिखे गये पवित्रशास्त्र के द्वारा तथा अपने आत्मा से परिपूर्ण मानवीय–अभिकर्ताओं के द्वारा पवित्र आत्मा आज भी जगत से बातें कर (बोल) रहा है। और तौभी, ये सभी सार में एक ही हैं: बोलनेवाला (*स्पीकर*), बोला गया वचन (*स्पोकन*), और बोलने की क्रिया (*स्पीकिंग*)।

दूसरा उदाहरण अधिक लोकप्रिय है और यह इस सच्चाई पर आधारित है कि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। संत अगस्टीन एक बहुत बुद्धिमान (*ब्रिलियेंट*) विचारक थे, उनके मन में यह प्रश्न उठता था कि सृष्टि से पहले परमेश्वर अतीत–अनन्त से किस प्रकार प्रेम हो सकता है जब उसके पास कोई ऐसा (प्रेम का पात्र) नहीं था जिससे वह प्रेम करे। प्रेम करने के लिए आवश्यक है कि कोई ऐसा (पात्र) हो जिससे प्रेम किया जा सके, और सिद्ध प्रेम, परस्पर प्रेम पाने वाले पात्र के लिए प्रेम की माँग भी करता है। उदाहरण के लिए, एक पति और एक पत्नी एक दूसरे से गहरा प्रेम रख सकते हैं और अपने प्रेम में आनन्दित रह सकते हैं। परन्तु जब एक बच्चा, जो उनके परस्पर प्रेम का फल होता है, उनके साथ आ जाता है, तो उनके प्रेम के इस विस्तार के लिए उनके द्वारा बांटा जाने वाला प्रेम सिद्ध हो जाता है। नया नियम में इस बात पर जोर दिया गया है पिता प्रेम करना वाला (प्रेमी) है; पुत्र प्रेम का पात्र (''मेरा प्रिय पुत्र'') है; और उन दोनों के बीच सक्रिय रचनात्मक बन्धन को पवित्र आत्मा (प्रेम) के रूप में देखा है।

धन्य त्रिएक परमेश्वर का सिद्धान्त अद्वितीय रूप से एक मसीही शिक्षा है। आधुनिक यहूदी, इस्लाम, और ''उदारवादी'' मसीहत, और झूठे पंथों के उल्लेख की आवश्यकता नहीं है – आधुनिक और प्राचीन दोनों – इस महान सच्चाई का इंकार करते हैं। कोई भी समूह जो त्रिएक परमेश्वर के सिद्धान्त का इंकार करता है, वह मसीहत के सच्चे झुण्ड से बाहर है। कलीसिया के आरम्भिक दिनों से ही, त्रिएक परमेश्वर की शिक्षा की समझ मसीही विश्वास की पहचान रही है।

त्रिएक परमेश्वर का सिद्धान्त धर्मविज्ञान की मात्र एक शिक्षा नहीं है, परन्तु यह बाइबल की मूलभूत सच्चाई है कि परमेश्वर ने किस रूप में अपने आप को प्रगट किया है – वास्तव में वह कैसा है – ''एक परमेश्वर समान रूप से तीन भिन्न व्यक्तियों में, धन्य त्रिएक परमेश्वर।'' यदि परमेश्वर त्रिएक व्यक्तित्व वाला न हो, तो वह मनुष्य के त्रिभागीय पहलू को संतुष्ट नहीं कर सकता। हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं। जैसा कि हमने देखा कि इस स्वरूप का एक भाग त्रि–एकत्व भाग है।

अंग्रेजी के कवि और उपदेशक जॉर्ज हर्बट ने इन सच्चाइयों को अपनी काव्य–पंक्तियों में अति उत्तम रीति से व्यक्त किया है:

> सारा का सारा संसार
> हृदय के तीन कोनों को भर पाने के लिए पर्याप्त नहीं है;
> परन्तु तौभी यह इसके लिए तरसता है;
> सिर्फ त्रिएक परमेश्वर जिसने इसे बनाया है
> मनुष्य के विशाल त्रिकोणिय हृदय में संतोष दे सकता है।

पौलुस प्रेरित द्वारा नया नियम में त्रिएक परमेश्वर के एक अन्य स्पष्ट उल्लेख के साथ ही मैं इस अध्याय का समापन करता हूँ: ''प्रभु यीशु का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे'' (2 कुरि. 13:14)।

टिप्पणियाँ

1. ध्यान दें कि उत्पत्ति 1:2 में परमेश्वर के आत्मा का उल्लेख किया गया है, जिसके विषय में बाद में हम यह देखते हैं कि यह पवित्र आत्मा है, त्रिएक परमेश्वर का तीसरा व्यक्ति।

2. अंग्रेजी और हिन्दी व्याकरण के अनुसार यहाँ पर बहुवचन क्रिया होनी चाहिये।

3. यह दावा कि हिन्दूधर्म में एक त्रिएक परमेश्वर होता है, सही नहीं है। तीन व्यक्तित्व के एक समूह की तरह हिन्दू देवता, तीन हैं, तीन में एक नहीं है। बल्कि, ''सृजक'' और ''विनाशक'' इस शिक्षा में काफी विचित्र हैं। तीन देवताओं के इस समूह में इस प्राचीन धर्म के हजारों देवी–देवताओं में से सिर्फ तीन देवताओं को लेकर एक समूह बनाया गया है।

–3–

जीवन का अनसृजा स्त्रोत

क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि वह अपने आप में जीवन रखे।

– यूहन्ना 5:26

जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा कहा गया उपरोक्त वचन यह दर्शाता है कि त्रिएक परमेश्वर सब के जीवन का एकमात्र सोता है।

परमेश्वर की अनन्तता उसके स्व–अस्तित्व से जुड़ी हुई है। अपने अस्तित्व के लिये परमेश्वर, स्वयँ के बाहर किसी भी व्यक्ति या किसी भी बात पर निर्भर नहीं है। उसका जीवन असृजित है। उसका जीवन कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे उसे किसी ने दिया हो। उसके अस्तित्व का स्त्रोत पूरी तरह से उसी में है।

स्व–अस्तित्व का यह गुण उसके नाम में ही प्रगट है: ''**मैं जो हूँ, सो हूँ**'' (निर्गमन 3:14)[1] यद्यपि इस नाम के बहुत से अर्थ हैं, परन्तु इस नाम में यह सच्चाई भी निहित है कि परमेश्वर के अस्तित्व में उससे बाहर का कोई भी कारण शामिल नहीं है।

परमेश्वर के स्व–अस्तित्व पर मनन करना हमें उसकी स्तुति और आराधना करने के लिये प्रेरित करे। वह क्या ही महान परमेश्वर है! उसकी श्रेष्ठताएं वर्णन से बाहर हैं! उसका व्यक्तित्व क्या ही अतुलनीय है!

साथ ही साथ, हमें जीवन के इस एकमात्र स्त्रोत के प्रति धन्यवादी रहना है कि उसने हमें जीवन देने के लिए चुना। जीवन परमेश्वर का एक वरदान है। हमारी हर एक साँस उसकी दया का वरदान है: '' . . . वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है . . . क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते–फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरित 17:25,28)। आइये हम उसके द्वारा दिये गए स्वाभाविक जीवन के लिए, और उससे भी बढ़कर, अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से दिए गए अनन्त जीवन के वरदान के लिए परमेश्वर के प्रति सदैव धन्यवादी बने रहें।

एक और लोकप्रिय भजन[2] में त्रिएक परमेश्वर का दूसरा व्यक्ति (पुत्र–परमेश्वर) को सब के जीवन या अस्तित्व का सोता या स्त्रोत कहा गया है:

हे यीशु, तू है आनंद प्रेमी हृदयों का,
मनुष्यों की ज्योति और जीवन का सोता।
दुनिया के सर्वोत्तम आनन्द से मुड़कर,
आते तेरी ओर हृदय खाली लेकर।

टिप्पणियाँ

1. परमेश्वर का नाम, यहोवा, जो वाचा के सन्दर्भ में प्रयोग किया गया है, शायद इब्रानी क्रिया *हायाह* (होना) से आया है। अंग्रेजी बाइबल के अनेक प्रमुख संस्करणों में इसका अनुवाद *''लॉर्ड''* (प्रभु) किया गया है।

2. यह भजन सन् 1150 के आसपास लिखा गया और इसे इसकी मूल भाषा लैटिन में *जेशु ड्यूलसिस मेमोरिया* कहा जाता है। इसका लेखक अक्सर क्लेरवेक्स के बर्नार्ड (1090–1153) को बताया जाता है। अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद रे पाल्मर (1808–87) द्वारा किया गया।

–4–

अपने आप में परिपूर्ण परमेश्वर

वह (परमेश्वर) किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा नहीं लेता है,क्योंकि वही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।

– प्रेरितों के काम 17:25

हमारा प्रभु सम्पूर्ण रीति से आत्मनिर्भर परमेश्वर है। वह अपनी प्रसन्नता के लिए किसी भी व्यक्ति या वस्तु पर जो उससे बाहर की है निर्भर नहीं है। उसे अपनी सृष्टि की किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं है।

भजन 50:10–12 में, हम उसे यह कहते हुए सुनते हैं,

> क्योंकि वन के सारे जीव जन्तु और हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे ही हैं।
> पहाड़ों के सब पक्षियों को मैं जानता हूं,
> और मैदान पर चलने फिरनेवाले जानवर मेरे ही हैं।
> यदि मैं भूखा होता तो तुझे से न कहता,
> क्योंकि जगत और जो कुछ उस में है वह मेरा है।

दाऊद ने भी परमेश्वर की आत्मनिर्भरता या स्व–परिपूर्णता को स्वीकारा है: ''तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है'' (1 इतिहास 29:14)।

जे. आई पैकर ने लिखा है,

> परमेश्वर मनुष्य को बनाने से पहले से ही उसके बिना प्रसन्न था; उसकी प्रसन्नता तब भी कायम रह सकती थी यदि मनुष्य द्वारा पाप किए जाने पर उसने उसे सीधे सीधे नाश कर दिया होता; परन्तु जैसा कि हम जानते हैं कि उसने अपना प्रेम कुछ व्यक्तिगत पापियों पर दृढ़ बनाए रखा है, और इसका अर्थ यह है कि, उसने स्वेच्छा से यह चुना, कि वह अब कभी भी सिद्ध और अमिश्रित प्रसन्नता का आनन्द नहीं लेगा जब तक कि वह उन पापियों में से हर एक को स्वर्ग में न ले आए। यह कहना

> उचित होगा कि उसने यह संकल्प लिया है कि अब से अनन्तकाल तक उसकी प्रसन्नता हमारी प्रसन्नता पर निर्भर करेगी। इस तरह से परमेश्वर न सिर्फ अपनी महिमा के लिए, परन्तु अपनी प्रसन्नता के लिए भी पापी का उद्धार करता है। इससे यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है कि जब एक पापी मन फिराता है तो स्वर्गदूतों के सामने (परमेश्वर को) इतना आनन्द क्यों होता है (लूका 15:10), और यह भी कि जब परमेश्वर अपनी पवित्र उपस्थिति में अन्तिम दिन हमें निर्दोष खड़ा करेगा तब वह क्यों मगन होगा (यहूदा 24)। यह विचार समझ से परे और अविश्वसनीय है, परन्तु इस बात में कोई सन्देह नहीं कि, पवित्रशास्त्र के अनुसार, परमेश्वर का प्रेम ऐसा ही है।[1]

परमेश्वर की आत्मनिर्भरता का सिद्धान्त एक ऐसा सिद्धान्त है जो उसकी बड़ी महिमा करता है। परमेश्वर अपनी आत्मनिर्भरता में वैभवशाली और प्रतापी है। उसमें वह सब कुछ पाया जाता है जिसकी उसे आवश्यकता है, और उसे कोई भी ऐसी वस्तु नहीं दी जा सकती जिसे उसने स्वयं पहले से न दिया हो। ए.डब्ल्यू. टोज़र ने इस बात को बहुत ही सुन्दर रीति से व्यक्त किया है:

> यदि सारी मानवजाति अचानक अन्धी हो जाए, तौभी दिन में सूर्य, और रात में तारे चमकते रहेंगे, क्योंकि ये उन अरबों लोगों से कुछ नहीं लेते जो इनके प्रकाश का लाभ प्राप्त करते हैं। इसलिए, यदि पृथ्वी का प्रत्येक व्यक्ति नास्तिक बन जाए, तो इससे परमेश्वर को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वह जो कुछ भी है, अपने आप में अपनी क्षमता से ही है और उसे किसी की आवश्यकता नहीं है। उस पर विश्वास करना उसकी सिद्धता में कोई वृद्धि नहीं करता, उस पर सन्देह कर हम उसका कुछ भी घटा नहीं सकते।[2]

यह सिद्धान्त हमें हमारी हैसियत बता देता है। यह मनुष्य के अहंकार पर घातक प्रहार करता है। परमेश्वर को हमारी सहायता की आवश्यकता नहीं है। उसे आवश्यकता नहीं है कि हम उसका बचाव करें। उसे हमारी सेवकाई की आवश्यकता नहीं है। जब हम उसे कुछ देते हैं, तब हम उसे वही देते हैं जो पहले से उसका है। यद्यपि परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आराधना करें, पर वह हमारी आराधना के बिना भी रह सकता है, और वह इस स्थिति में सदियों से रहा है। आज कुछ लोगों की बात सुनकर, शायद आप यह समझ बैठें, कि जब कोई प्रतिष्ठित, प्रतिभाशाली व्यक्ति मसीही विश्वासी बन जाता है, तो यह परमेश्वर का सौभाग्य है। यह अंहकारपूर्ण बकवास है! सारे लाभ सिर्फ हमें ही प्राप्त होते हैं, परमेश्वर को नहीं।

तौभी वह हमसे संगति करना चाहता है। जैसा कि प्रभु यीशु ने सामरी स्त्री से कहा, ''परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है, जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढता है'' (यूहन्ना 4:23)।

और यद्यपि हम इस बात पर जोर देना जारी रखें कि परमेश्वर को उसकी सृष्टि की जरूरत नहीं है, तथापि एक कवि, जिनका संक्षिप्त नाम टी.पी. है, ईश्वरीय आवश्यकता की बात कर सकते हैं और उपरोक्त विचार से बच सकते हैं:

मेरे मन में यह विचार आया,
क्या यह हो सकता है कि महिमा में,
वह खोए हुओं के लिए तरस रहा था,
जिसे उसने अपने अनमोल रक्त से खरीदा है?
इसी कारण *उसकी* आवश्यकता उसे यहाँ तक खींच लाई,
वह शापित पेड़ पर नीचे उतर आया?
उसकी गहरी करुणा से भी गहरा
अद्भुत विचार! *उसे* मेरी ज़रूरत!

ऐनी जॉनसन फ्लिंट आत्म-निर्भर परमेश्वर के संबंध में विरोधाभासी पंक्तियों को जारी रखते हुए हमें स्मरण दिलाती हैं:

मसीह के पास हमारे हाथों के सिवाय और कोई हाथ नहीं हैं
कि हम आज उसका काम करें;
उसके पास हमारे पाँवों के सिवाय और कोई पाँव नहीं हैं
कि मनुष्यों को परमेश्वर के मार्ग पर चलने में अगुवाई करें;
उसके पास हमारे होंठों के सिवाय और कोई होंठ नहीं हैं
कि हम लोगों को बताएं कि वह कैसे मरा;
उसके पास हमारे सिवाय और कोई सहायता करने वाला नहीं है
कि वह लोगों को अपने पास ले कर आए।[3]

भले ही ये काव्य की पंक्तियाँ हों, परन्तु यह तथ्य कायम है कि परमेश्वर आत्मनिर्भर है, और उसे अपने आप से बाहर के किसी भी व्यक्ति या वस्तु की आवश्यकता नहीं है।

हम परमेश्वर की आत्मनिर्भरता का आनन्द उठाते हैं। यदि हम परमेश्वर को परमेश्वर मानते हैं, तो हमें इस सच्चाई को पूरी तरह से एक आज्ञा की तरह स्वीकार करना है। हम उसकी अद्वितीय स्वतंत्रता का विचार कर विस्मय और सराहना के भाव से भर जाते हैं। यह हमें उसकी आराधना और उपासना करने के लिए प्रेरित करता है । जोहान स्केफलर ने परमेश्वर के चरित्र की इस अद्‌भुत विशेषता को कुछ इस तरह से व्यक्त किया है:

हे भलाई के सोते, तुझसे सारी आशीषें फूट कर बहती हैं;
तेरी भरपूरी किसी भी बात की घटी नहीं है;
वह कौन सी चीज़ है जिसकी तू इच्छा करता है?
यद्यपि तू आत्मनिर्भर है,
तू मेरे मूल्यहीन हृदय को चाहता है;
यही, और सिर्फ यही तेरी इच्छा है।

टिप्पणियाँ

1. जे.आई. पैकर, *नोइंग गॉड,* पृ. 138।
2. ए.डब्ल्यू. टोज़र, *द नॉलेज ऑफ द होली,* पृ. 40 ।
3. स्क्रिप्चर प्रेस की अनुमति से उपयोग में लाया गया है।

–5–

उसका अपार ज्ञान

परमेश्वर . . . सब कुछ जानता है।

– 1 यूहन्ना 3:20

परमेश्वर सर्वज्ञ है; उसके पास हर बात का सिद्ध ज्ञान है। ऐसी कोई भी बात नहीं है जिसे वह न जानता हो। उसने कभी भी इन बातों को कहीं से नहीं सीखा, न ही कभी सीख सकता है। यह कहना पर्याप्त नहीं है कि यदि वह चाहे तो वह सब कुछ जान सकता है। वह पहले से ही सब कुछ जानता है! वह हमेशा से ही सर्वज्ञ था, और रहेगा। ए.डब्ल्यू. टोज़र इस बात को इस तरह से समझाते हैं:

> परमेश्वर तुरन्त और सहज ही सब बातों को और हर एक बात को, सारे के सारे मन को और हर एक के मन को, सारे के सारे प्राण को और हर एक के प्राण को, सारे के सारे अस्तित्व को और हर एक के अस्तित्व को, सारे प्राणीजगत को और हर एक प्राणी को, सारी की सारी संख्याओं को और हर एक संख्या को, सारे के सारे नियमों को और हर एक नियम को, सारे के सारे सम्बन्धों को और हर एक सम्बन्ध को, सारे के सारे विचारों को और हर एक विचार को, सारे के सारे भेदों को और हर एक भेद को, सारी की सारी पहेलियों को और हर एक पहेली को, सारी की सारी भावनाओं को और हर एक भावना को, सारी की सारी इच्छाओं को और हर एक इच्छा को, सारे के सारे छिपे हुए रहस्य को और हर एक रहस्य को, सारे के सारे सिंहासन और प्रभुताओं को, सारी की सारी प्रधानताओं को, स्वर्ग की और पृथ्वी पर की गति, स्थान, समय, जीवन, मृत्यु, भलाई, बुराई, स्वर्ग और नरक से सम्बन्धित सारी दृश्य और अदृश्य बातों को जानता है।[1]

परमेश्वर की सर्वज्ञता के विषय में पवित्रशास्त्र के प्रमुख पदों में से एक है, भजन 139:1–6:

> हे यहोवा, तू ने मुझे जांचकर जान लिया है।
> तू मेरा उठना बैठना जानता है;
> और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।
> मेरे चलने और लेटने की तू भली–भांति छानबीन करता है,

और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।
हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं
जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।
तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है,
और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है।
यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है;
यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है।।

जब भजन का रचयिता प्रभु के अपार ज्ञान के विषय में विचार करता है, तो मानों उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ इस विचार के भार को उठा नहीं पातीं। वह ऐसे ज्ञान को समेट नहीं पाता; यह अत्यंत विस्मित कर देने वाला ज्ञान है।

प्रभु यीशु ने परमेश्वर की सर्वज्ञता के विषय में एक शान्ति देने वाली गहरी शिक्षा दी जब उसने इस बात की ओर ध्यान खींचा कि एक गौरैया भी पिता की जानकारी के बिना भूमि पर गिर नहीं सकती (मत्ती 10:29)। डॉ. हेरी ए. आयरनसाइड ने इसका मार्मिक चित्रण करते हुए कहा है: ''परमेश्वर हर एक गौरैया की दफन क्रिया में शामिल होता है।'' इस बात पर विचार करें! आकाशगंगाओं और अधिनव तारों का परमेश्वर, महत्वहीन लगने वाली गौरैया में रूचि रखता है। तो फिर वह अपने लोगों की कितनी चिन्ता करता होगा! माबेल ब्राऊन डेनिसन ने इस सच्चाई को इस तरह से व्यक्त किया है:

परमेश्वर की सारी विस्मित कर देने वाली समझ से परे बातों में,
सबसे अद्‌भुत बात मैं यह देखता हूँ,
कि ऐसी अपार महानता का परमेश्वर
गौरैयों की चिन्ता करता है – और मेरी भी।

रोमियों 11:33–36 में, पौलुस भावुकतापूर्ण परमेश्वर के ज्ञान की प्रशंसा करता है:

आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! प्रभु की बुद्धि को किस ने जाना? या उसका मंत्री कौन हुआ? या किसने पहिले उसे कुछ दिया है जिसका बदला उसे दिया जाए। क्योंकि उसकी ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन।।

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक हमें यह स्मरण दिलाता है कि ''जिस से हमें काम है, उस की आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और बेपरद हैं'' (इब्रानियों 4:13)।

परमेश्वर के सारे ज्ञान के बारे में विचार करना हमारे लिये अप्रतिरोध्य जैसा है। हमारी पीढ़ी में, हमने ज्ञान का महाविस्फोट देखा है। विज्ञान, साहित्य, दर्शनशास्त्र, भूगोल, इतिहास, और हर एक क्षेत्र में, नई पुस्तकें असीमित ज्ञान उण्डेलती जा रही हैं। हमारे ग्रंथालयों में पुस्तकों की भरमार है।

विशिष्ट योग्यता हासिल करना एक खेल बन चुका है। विशेषज्ञ एक छोटे से ही क्षेत्र में माहिर होते हैं; वे कभी भी पूरे के पूरे क्षेत्र को नाप पाने की कल्पना नहीं कर सकते। परन्तु परमेश्वर के पास स्वर्ग और पृथ्वी पर की हर एक वस्तु का पूरा पूरा ज्ञान है, और वह लोगों को छोटी छोटी मात्रा में इस ज्ञान को बांटता है। जब कभी वह ऐसा करता है, तो इन लोगों को तुरन्त ही खोजकर्ताओं की मान्यता देकर हाथों हाथ उठा लिया जाता है।

परमेश्वर अब भी ऐसा बहुत कुछ है जिन्हें हम नहीं जानते। यद्यपि हम चन्द्रमा तक की यात्रा कर सकते हैं, परन्तु हम यह नहीं समझ पाते कि एक मक्खी किस तरह से उड़ती है। यद्यपि हम मानवहृदय प्रत्यारोपण कर लेते हैं, परन्तु एक सामान्य सी सर्दी का कोई इलाज नहीं ढूंढ़ सके हैं। हम बाहरी क्षेत्र पर तो विजय पाते हैं, परन्तु भीतरी क्षेत्र को जीत नहीं सकते। हम युद्ध तो लड़ सकते हैं, परन्तु शान्ति स्थापित नहीं कर सकते। हम इतना कुछ जानते हैं, और तौभी हम बहुत कम जानते हैं। परमेश्वर के सामने कुछ भी रहस्य नहीं है, कोई भी ऐसी समस्या नहीं है जिसका हल उसके पास न हो, कोई भी पहेली नहीं है,जिसे वह बूझ न सके।

और जो बातें परमेश्वर पिता पर लागू होती हैं, वे ही बातें परमेश्वर पुत्र पर भी लागू होती हैं। तब भी, जब वह इस पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में था, त्रिएकत्व का यह दूसरा व्यक्ति परमेश्वर पुत्र सर्वज्ञ था। जब एक स्त्री ने उसके वस्त्र की छोर को छुआ, तो उसने यह जान लिया कि यह विश्वास का स्पर्श है, उस पर गिरती–पड़ती भीड़ का नहीं (लूका 8:43–48)। वह इस बात को ठीक ठीक जानता था कि गलील की झील पर मछलियाँ कहाँ पर हैं (यूहन्ना 21:26)। वह जानता था कि लोग क्या सोच रहे हैं (मत्ती 9:4)। वह जिनसे मिलता था उनके चरित्र और इतिहास के विषय में जानता था (यूहन्ना 1:47; 4:16–18)। वह भविष्य बताने की सामर्थ रखता था, यहाँ तक कि वह उसे पकड़वाये जाने, उसका इंकार किए जाने, उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने, उसके पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण, और दोबारा आगमन के विषय में भी जानता था (यूहन्ना 13:11; मरकुस 14:30; लूका 9:22; यूहन्ना 14:2–3)।

उसके चेलों को पूरा विश्वास था कि वह सब कुछ जानता था (यूहन्ना 16:30)।

यह सत्य है कि कुछ पदों को पढ़ कर ऐसा लगता है कि उसका ज्ञान सीमित था। उदाहरण के लिए, लूका कहता है कि ''यीशु बुद्धि और डील–डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया'' (लूका 2:52)। एक व्यक्ति जिसके पास सिद्ध ज्ञान है, बुद्धि में कैसे बढ़ सकता है? और मरकुस यह संकेत देता है कि यीशु अपने दूसरे आगमन के समय को नहीं जानता (मरकुस 13:32)। यह कैसे हो सकता है यदि वह सर्वज्ञ है?

यहाँ पर हमारा सामना सीधे सीधे देहधारण के भेद के साथ होता है: ''भक्ति का भेद गम्भीर है''(1 तीमु. 3:16)। ईश्वर और मानव किस प्रकार से एक व्यक्ति में एक साथ अस्तित्व में रह सकते हैं, यह हमारी समझ से परे है। इसे इस उदाहरण की सहायता से समझें: हम यह जानते है कि परमेश्वर मर नहीं सकता, और हम यह जानते है कि यीशु परमेश्वर है। तौभी यीशु मरा। यह कैसे हो सकता है? यह एक भेद है। एक अर्थ में, हम मसीह के व्यक्तित्व को नहीं समझ सकते; सिर्फ पिता उसे जान सकता है (मत्ती 11:27)। धर्मज्ञानियों द्वारा इस भेद को सुलझाने के प्रयास में बहुत सी गम्भीर रूप से झूठी शिक्षाएं उभर कर सामने आ गईं। इन प्रयासों का परिणाम सिर्फ यही हो सका कि इन झूठी शिक्षाओं ने उसके ईश्वरत्व, उसके मनुष्यत्व, या दोनों से ही बहुत से लोगों को भटका दिया।

परन्तु हम यह बात जान सकते हैं कि यद्यपि मनुष्य बनने के लिये उसने स्वर्ग का अपना पद त्याग कर अपने आप को शून्य कर दिया, फिर भी उसने कभी भी अपने ईश्वरत्व के गुणों का त्याग नहीं किया। वह अपने कुछ गुणों का त्याग कर परमेश्वर से कुछ कम नहीं बन गया; ऐसा तो असम्भव है। बल्कि, परमेश्वर के अलावा मनुष्य भी बना। उसने अपने ईश्वरत्व की महिमा का त्याग नहीं किया; बल्कि उसने इस महिमा को, मानव देह को पहिन कर ढांक लिया। यदि एक राजकुमार अपने राजमहल को त्याग कर किसी झोपड़ी में रहने के लिए चला जाए, तो उसका पदस्थान तो बदल जाता है, परन्तु उसका व्यक्तित्व वही रहता है। वह अपने विशेषाधिकार के स्थान को त्याग सकता है, परन्तु वह अपने व्यक्तित्व को त्याग नहीं सकता। ऐसा ही प्रभु यीशु मसीह के साथ भी हुआ। उसने स्वर्ग में पिता के तुल्य होने के अपने पद को हर हाल में अपने वश में रखने की वस्तु नहीं समझा। बल्कि, वह एक मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर आया कि मनुष्यजाति के लिए अपना प्राण दे। परन्तु वह सब वस्तुओं का पूरा पूरा ज्ञान रखने से वंचित नहीं था।

इसलिए यदि कुछ पदों को देख कर ऐसा लगे कि उसका ज्ञान असीमित था, तो हम इस

समस्या को स्वीकार करते हैं परन्तु किसी भी ऐसे स्पष्टीकरण का इंकार करते हैं जो सब समयों में उसकी सिद्ध सर्वज्ञता का इंकार करता है। हम इस सच्चाई पर कायम हैं कि ''उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलु. 2:9), और इसका अर्थ यह है कि वह हमेशा से ही ईश्वरत्व के चरित्र के सारे गुणों और विशेषताओं को धारण किए हुए है। उसके पास हमेशा से ही सारी बातों का सिद्ध ज्ञान है।

यह आवश्यक है कि परमेश्वर के इन सहज विशेष गुणों के द्वारा हमारे जीवनों पर गहरा असर हो। जब हम प्रभु के ज्ञान के अपार आयामों पर मनन करेंगे, तो उसका आदर करने के लिए प्रेरित होंगे! हम उसकी स्तुति का गीत गा उठेंगे!

इस सच्चाई के कारण कि परमेश्वर सब कुछ जानता है, हम पाप से दूर रहें। चूंकि छिपा हुआ पाप जैसी कोई भी चीज़ नहीं है, हमें कभी भी यह सोच कर अपने आप को मूर्ख नहीं बनाना चाहिए कि इस विषय में किसी को पता नहीं चलेगा। जैसे कि यह कहावत है, ''पृथ्वी पर किया जाने वाला छिपा हुआ पाप स्वर्ग के लिए एक खुला हुआ कलंक है।'' परमेश्वर जानता है (उत्पत्ति 16:13)। हम पाप करके कभी भी इसके परिणामों से बच नहीं सकते (गिनती 32:23)। परन्तु साथ ही साथ, हम उसे कोई ऐसा क्रूर और क्रोधी व्यक्ति भी न समझें जो एक एक गलती के लिए हम पर टूट पड़ने के लिए तैयार बैठा है। बल्कि, वह एक प्रेमी स्वर्गीय पिता है जिसकी आज्ञाएं उसके नहीं, बल्कि, हमारे कल्याण और सुख के लिए तैयार की गई हैं। जो उसके बारे में यह सोचते हैं कि वह कठोर है और उसे प्रसन्न कर पाना कठिन है, वे वास्तव में उसे जानते नहीं हैं।

परन्तु यह बात भी हमें एक बड़ी शान्ति प्रदान करती है कि परमेश्वर जानता है (भजन 56:8)। वह जानता है कि उसके लोग किस परिस्थिति का सामना कर रहे हैं – वह उनके दुखों को, उनकी कठिनाइयों को, उन पर आने वाले सतावों को, और उन के विरुद्ध होने वाले अपराधों को जानता है (अय्यूब 23:10)। एक कवि ने लिखा है, ''हर वेदना जो हृदय को चीरती, दुःखी पुरुष को भी सहभागी बनाती।'' प्रभु यीशु ने स्मुरना की कलीसिया को लिखा है, ''मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूँ'' (प्रका. 2:9)। उसके शब्दों, ''मैं . . . जानता हूँ'' में संवेदना और शान्ति पाई जाती है।

यह समझ पाना क्या ही शान्ति और प्रोत्साहन की बात है कि परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता था, और तौभी उसने हमें बचा लिया और हमारा उद्धार किया! वह जानता था कि हम असफल और निष्फल हो जाएंगे, वह जानता था कि हम उससे भटक कर उसका

हृदय तोड़ देंगे। और तौभी उसने अपनी प्रेमी भुजाओं को फैला कर हमें समेट लिया और अपने अनुग्रह से सेंतमेंत हमारा उद्धार किया।

यह समझ पाना कितना अद्‌भुत है कि परमेश्वर यह जानता है कि हम अपने हृदयों में उसके लिए आराधना और स्तुति का क्या भाव रखते हैं, परन्तु उसे व्यक्त कर पाने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। और वह जानता है कि हम उसके लिए क्या करना चाहते हैं, परन्तु किसी न किसी कारण से ऐसा नहीं कर पाते। उदाहरण के लिए, दाऊद प्रभु के लिए एक मन्दिर बनाना चाहता था। प्रभु ने कुछ इस प्रकार से कहा, ''नहीं, दाऊद, तुम इसे नहीं बना सकते – परन्तु परेशान न हो, यह अच्छी बात है कि यह बात तुम्हारे मन में थी।'' दाऊद को निश्चय ही मन्दिर बनाने पर मिलने वाले प्रतिफल का एक हिस्सा दिया जाएगा, भले ही सुलैमान को मन्दिर बनाने का सुअवसर मिला था। इसी तरह से, ऐसे लोग भी होते हैं जो मिशन क्षेत्रों में सेवकाई के लिए जाना चाहते हैं, परन्तु जा नहीं पाते। ऐसे उदार मसीही भी होते हैं जो प्रभु के कार्य के लिए और अधिक देना चाहते हैं, परन्तु उनके पास देने के लिए उतना नहीं रहता। परमेश्वर इन सारी बातों को जानता है और वह ऐसी इच्छा रखने के लिए प्रतिफल देता है।

परमेश्वर के ज्ञान की महानता पर विचार करें – वह इतनी सारी भाषाओं में प्रार्थनाओं को सुन और समझ सकता है। हम ऐसे अनेक लोगों को जानते होंगे जो अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं। राबर्ट डिक विल्सन, बाइबल के एक विद्वान थे, उन्होंने चालीस से भी अधिक प्राचीन और दुर्लभ भाषाओं को सीखा ताकि वे पुराना नियम के अनेक जटिल विषयों को स्पष्ट कर सकें। परन्तु परमेश्वर के सिवाय कोई भी सारी की सारी भाषाओं को नहीं जानता।

परमेश्वर के विशिष्ठ गुणों का अध्ययन करते हुए, हमें उन में से अनेक का अनुकरण करने का प्रयास करना चाहिए – जैसे, उसका प्रेम, उसकी दया, और उसका अनुग्रह। हम कभी भी उसके बराबर ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, यहाँ तक कि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सकते, परन्तु हमें अपनी बुद्धि का सर्वोत्तम उसके लिए समर्पित कर देना चाहिए। हमें निरन्तर परमेश्वर के ज्ञान में, प्रभु यीशु के ज्ञान में, और पवित्रशास्त्र के ज्ञान में बढ़ते रहना चाहिए।

परमेश्वर की सर्वज्ञता के विषय में एक अन्तिम बात। जब परमेश्वर हमें क्षमा करता है, तो वह हमारे पापों को भूल जाता है। वह उन्हें अपने भुलक्कड़पन के सागर में दफन कर देता है; वह उन्हें अपने पीछे छोड़ देता है – उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उतनी ही दूर वह

हमारे पापों को भी कर देता है। वह उनका स्मरण फिर से नहीं करता। एक सर्वज्ञ परमेश्वर भूल कैसे सकता है? मुझे इसका उत्तर नहीं मालूम, परन्तु मैं यह अवश्य जानता हूँ कि उसे इसका उत्तर मालूम है। यदि हम यह मान भी लें कि वह हमारे पापों को इस अर्थ में भूल जाता है कि वह उनके लिए फिर कभी हमें दण्ड नहीं देगा, तौभी यह सच्चाई उतनी ही अद्‌भुत बनी रहती है।

कितना महान है हमारा परमेश्वर ! उसकी महानता की थाह नहीं पाई जा सकती। वह अति स्तुति के योग्य परमेश्वर है:

> क्योंकि यह परमेश्वर
> सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है,
> वह मृत्यु तक
> हमारी अगुवाई करेगा (भजन 48:14)

उसके पास हर विषय की पूरी पूरी जानकारी है, जैसा कि एक अज्ञात लेखक ने लिखा है:

> यद्यपि है उसकी महिमा अपार, और उसका वैभव महिमामय
> तौभी वह बालू के प्रत्येक कण की अनन्त कहानी जानता है।

टिप्पणी

1. ए.डब्ल्यू. टोज़र, *द नॉलेज ऑफ द होली,* पृ. 62।

–6–

एकमात्र सर्वशक्तिमान

प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है!

– प्रकाशितवाक्य 19:6

जब हम परमेश्वर को सर्वशक्तिमान कहते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि हम उसका नाम ले रहे हैं क्योंकि उसके पास सारी शक्ति है। वह सर्वसामर्थी है। ऐसा कोई भी कार्य नहीं, जिसे वह नहीं कर सकता। वह प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान[1] है।

इस बात पर कोई सन्देह नहीं कि परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता बाइबल के लेखकों का एक प्रिय विषय रहा है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित पदों की ओर ध्यान दें:

> मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं, मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा (उत्प. 17:1)।
>
> क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है (उत्प. 18:14)?
>
> मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है और तेरी युक्तियों में से कोई रूक नहीं सकती (अय्यूब 42:2)।
>
> > परमेश्वर ने एक बार कहा है
> > और दो बार मैंने यह सुना है
> > कि सामर्थ्य परमेश्वर का है (भजन 62:11)।
>
> हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है (यिर्म. 32:17)।
>
> मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है (मत्ती 19:26)।
>
> क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता (लूका 1:37)।

स्टीफ़न शेरनॉक ने इस विषय पर लिखा है, ''परमेश्वर की सामर्थ्य वह क्षमता और

शक्ति है जिसके द्वारा वह जो चाहे, जो कुछ उसकी अपार बुद्धि निर्देश दे, जो कुछ उसकी इच्छा की असीमित शुद्धता निर्णय ले, वह कर सकता है।''[2]

वह हमें बना सकता है और ''सब पवित्रों में साझी करके मीरास'' दे सकता है (प्रेरित 20:32)। वह हमें ''सब प्रकार का अनुग्रह बहुतायत से दे सकता है'' (2 कुरि. 9:8)। ''वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है'' (फिलि. 3:21)। ''वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिन की परीक्षा होती है'' (इब्रानियों 2:18)। ''जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है'' (इब्रानियों 7:25)। वह हमें ''ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है'' (यहूदा 24)।

जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर सब कुछ कर सकता है, तो इसका अर्थ स्पष्ट है कि वह अपने नैतिक गुणों और अपने मूलभूत स्वभाव के अनुरूप ही सब कुछ करता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता (गिनती 23:19; इब्रा. 6:18)। ''वह आप अपना इंकार नहीं कर सकता'' (2 तीमु. 2:13)। ''न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है'' (याकूब 1:13)। वह पाप को अनदेखा नहीं कर सकता या उसका पक्ष नहीं ले सकता (हबक्कूक 1:13)। चूंकि वह समय से बन्धा हुआ नहीं है और वह अमर है, वह बूढ़ा नहीं हो सकता और मर नहीं सकता। वह अपने से किसी बड़े की शपथ नहीं खा सकता (इब्रा. 6:13), इसलिए क्योंकि उससे बड़ा कोई नहीं है। परन्तु ये बातें ज़रा भी उसकी सर्वशक्तिमत्ता को प्रभावित नहीं करतीं। और न ही इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण प्रश्न कि, क्या परमेश्वर किसी पत्थर को इतना भारी कर सकता है कि वह स्वयं ही उसे उठा न सके? ऐसे प्रश्न बौद्धिक विसंगतियाँ हैं, और गम्भीरता से ध्यान देने योग्य नहीं हैं।

परमेश्वर की सामर्थ्य विश्व और मानवजाति की सृष्टि में दिखाई देती है। उसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि तुरन्त कर दी, इसके लिए उसने किसी भी कच्चे माल का प्रयोग नहीं किया, किसी औजार का भी प्रयोग नहीं किया, उसने सिर्फ अपने वचन के द्वारा इन सारी वस्तुओं की सृष्टि की। उस सामर्थ्य कि कल्पना करें जिसने आकाश को चमचमाते तारों, ग्रहों, और आकाशगंगाओं से जड़ दिया जो खरबों प्रकाशवर्ष तक अंतरिक्ष में फैले हुए हैं। उस सामर्थ्य की कल्पना करें जिससे वह माँ की कोख में मनुष्य की देह को रचता है (भजन 139:13–18)। उस सामर्थ्य की भी कल्पना करें, जो सारी वस्तुओं को अपने में स्थिर रखता है, उस सामर्थ्य की कल्पना करें जिससे वह विश्व को सम्भाले रखता है (कुलु. 1:17; इब्रा.

1:3), ग्रहों को उनकी कक्षाओं में बनाए रखता है, अपने प्राणियों को बचाए रखता है, और प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

हम बाढ़, भूकम्प, ज्वालामुखी, तूफान, हवा, और लहरों में परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता को देख सकते हैं। हम एक पापी के उद्धार में, बीमारियों से चंगाई में, और दुष्टों के न्याय में उसकी सर्वशक्तिमत्ता को देख सकते हैं।

लोग शक्ति की माप मेगाटन से करते हैं, विस्फोट की ताकत ट्राईनाइट्रोटॉलुइन (टी.एन.टी.) के दस लाख टन के बराबर होती है। परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य को मापने के लिए मानव के शब्दकोष में कोई शब्दावली नहीं है।

जब पुराना नियम के पवित्र लोग (परमेश्वर के सभी लोग) परमेश्वर की सामर्थ्य की बात करते थे, तो वे निर्गमन की घटना का स्मरण करते थे जब परमेश्वर ने ''अपने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से'' उन्हें मिस्र से छुटकारा प्रदान किया था (निर्ग. 26:8)।

नया नियम में परमेश्वर की सामर्थ्य का सबसे विराट प्रदर्शन प्रभु यीशु मसीह के पुनरूत्थान में देखा गया। पौलुस इसे ''और उसकी सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर . . . बैठाया'' कहता है (इफि. 1:19–21)। ऐसा लगता है कि शैतान और उसकी सारी सेना यरूशलेम के बाहर कब्र पर डेरा डाले हुई थी, और सुनिश्चित थी कि प्रभु यीशु अब कभी जी नहीं उठेगा। तभी परमेश्वर बड़ी सामर्थ्य के साथ उतरा, नरक की सेनाओं को खदेड़ दिया, और मसीह को फिर से जीवित कर दिया। इस पूरे दृश्य का सजीव चित्रण भजन 18:7–19 में किया गया है।

कभी कभी ऐसी शिक्षा दी जाती है कि जब प्रभु यीशु इस जगत में आया तब उसने अपनी सर्वशक्तिमत्ता को त्याग दिया। या फिर यदि उसने इसे नहीं त्यागा, तो कम से कम, उसने इसका प्रयोग नहीं किया। अर्थात्, उसने अपने सारे आश्चर्यकर्म पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से किया।

मैं अवश्य ही यह स्वीकार करूंगा कि कुछ अवसर पर उसने जान–बूझ कर अपनी सामर्थ्य का प्रयोग नहीं किया। उदाहरण के लिए, वह अपने शत्रुओं को किसी भी क्षण खत्म कर सकता था, परन्तु वह इस उद्देश्य से जगत में नहीं आया था। वह नाश करने के लिए

नहीं, बल्कि बचाने के लिए आया था। और साथ ही साथ, चूंकि वह नैतिक रूप से सिद्ध था, वह ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता था जो उसके पिता की इच्छा के विरुद्ध था (यूहन्ना 5:19)।

यह सच्चाई कि उसने अपने आश्चर्यकर्म पवित्र आत्मा की सामर्थ से किया (मत्ती 12:28) उसकी सर्वशक्तिमत्ता को प्रभावित नहीं करती, क्योंकि उसी समय में वह विश्व को अपनी सामर्थ्य के वचन से सम्भाले हुए था (इब्रा. 1:3)।

कुछ अवसरों पर उसने स्वयं की सामर्थ्य का उपयोग करने के विषय में कहा, ''इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा'' (यूहन्ना 2:19)। एक बार फिर से उसने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में बातें करते हुए कहा, ''पिता इसलिए मुझ से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूँ, कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ; मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है'' (यूहन्ना 10:17-18)।

प्रभु यीशु जब जगत में आया तब उसने अपनी सर्वशक्तिमत्ता का त्याग नहीं किया। यह मानव की दृष्टि से छिपा हुआ था, परन्तु यह हमेशा ही सृष्टि करने में, सम्भालने में, प्रबन्ध करने में, मार्गदर्शन करने में, और प्रबल होने में सक्रिय रहा।

जब हम अपने प्रभु की सर्वशक्तिमत्ता पर मनन करते हैं तो हमारे हृदय आराधना और उसके प्रति भय से भर जाएं। अक्सर हम उसकी *भौतिक* सामर्थ्य पर विचार करने लगते हैं, परन्तु हमें उसकी *नैतिक* सामर्थ्य को अनदेखा नहीं करना चाहिए, जैसा कि इ. स्टेनली जोन्स ने कहा है, ''संसार एक ऐसे व्यक्ति के सामने झुक जाता है जिसके पास पलटवार करने की क्षमता है, परन्तु जिसके पास पलटवार न करने की क्षमता है, वही सामर्थी है - सबसे बड़ा सामर्थी।'' उसके पास सामर्थ्य थी कि वह स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं को बुला ले, और तौभी सर्वशक्तिमान अपने आप को बचा न सका, क्योंकि पापियों की मुक्ति के लिए यह आवश्यक था, जैसा कि अलबर्ट मिडलेन ने कहा है,

> वह अपने आप को बचा न सका,
> अनिवार्य था उसे क्रूस पर मरना,
> नहीं आ पाती दया,
> बर्बाद हो चुके पापियों के पास;
> जी हाँ, अनिवार्य था परमेश्वर के पुत्र - मसीह का लोहू बहना
> ताकि मिल सके पापियों को पाप से छुटकारा।

परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता के विषय में हम अनेक व्यावहारिक शिक्षाओं को सीख सकते हैं। पहली शिक्षा यह है कि एक व्यक्ति कभी भी परमेश्वर के विरुद्ध लड़ कर सफल नहीं हो सकता। यह कुछ ऐसा होगा, कि एक मच्छर लोहे को पिघलाने वाले किसी धधकते हुए बड़े भट्ठे से भिड़ने का प्रयास कर रहा हो। ''यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है'' (नीति. 21:30)।

दूसरी शिक्षा यह है कि जो परमेश्वर के मित्र हैं, वे परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का लाभ पाते हैं इसलिए वे विजयी पक्ष की ओर हैं। कभी कभी लहरें हमारे विपरीत आती दिखाई दें, परन्तु ज्चारभाटा की विजय सुनिश्चित है। हमें इस बात से नहीं डरना चाहिए कि दूसरे हमारा क्या बिगाड़ कर सकते हैं। जब तक परमेश्वर ऐसा कुछ होने की अनुमति न दे, हमारे साथ कुछ नहीं हो सकता। हम विश्वासी तब तक मर नहीं सकते, जब तक हमारा काम पूरा नहीं होगा। परमेश्वर हमारे शत्रुओं की भावनाओं, बुद्धि, और इच्छा को नियंत्रित रख सकता है ताकि वे हमारे सिर के एक बाल को भी छू न सकें। निर्गमन 34:23 में, परमेश्वर ने इस्राएल के सारे पुरुषों को आज्ञा दी थी कि वे हर वर्ष यरूशलेम के वार्षिक पर्वों में भाग लेने को जाएं। परन्तु जब वे जाते थे, तो उन्हें अपनी पत्नियों और बच्चों को शत्रुओं के आक्रमण के खतरों में छोड़ कर जाना पड़ता था। इसलिए परमेश्वर ने पद 24 में एक असाधारण प्रतिज्ञा की: ''मैं तो अन्यजातियों को तेरे आगे से निकाल कर तेरे सिवानों को बढ़ाऊंगा, और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपना मुँह दिखाने के लिए वर्ष में तीन बार आया करे, तब कोई तेरी भूमि का लालच न करेगा।'' सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही अपने शत्रुओं की इच्छाओं पर नियंत्रण करने की गारंटी दे सकता है।

एक अन्य शिक्षा जिसे हम विश्वासियों को अपने मन में बैठा लेनी चाहिए, वह है, कि हम कभी भी सर्वशक्तिमान नहीं बन सकते। हम परमेश्वर के इस विशिष्ट गुण के भागी नहीं बन सकते। परन्तु परमेश्वर ने सामर्थ्य हमारे लिए उपलब्ध कराई है, कम से कम एक निश्चित मात्रा में। यदि हम उड़ सकते हैं, तो हमें रेंगने की आवश्यकता नहीं है। यदि हम अपनी सामर्थ्य पर निर्भर रह कर जीवन बिताते हैं, तो हम कभी भी माँस और लोहू से ऊपर नहीं उठ पाते। परन्तु यदि हम उसकी आत्मा को अनुमति देते हैं कि वह हमें सामर्थ्य प्रदान करे, तो हमारे जीवन में अलौकिकता फूट पड़ती है।

किसी ने कहा है कि लोग सर्वशक्तिमत्ता के सबसे निकट तब होते हैं जब वे प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना कर रहे होते हैं। यह गवाही सच है। जब हम प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं, तो यह उसी तरह से है कि प्रभु यीशु पिता से निवेदन कर रहा था।

इस बात को जानने के बाद भी, यह आश्चर्य की बात होगी, यदि हम प्रार्थना में अधिक समय नहीं देते।

इस विषय पर अन्तिम शिक्षा जिसे मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ वह यह है कि परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता उसके लोगों को शान्ति और ढाढ़स प्रदान करती है। यह बात क्या ही राहत प्रदान करती है कि हमारा परमेश्वर कुछ भी कर सकता है, और उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है! ओसवाल्ड जे. स्मिथ हमें स्मरण दिलाते हुए कहते हैं कि *उसके* पास कोई भी समस्या नहीं है, वह उन सभी समस्याओं से निपटने में सक्षम है जिनका हम सामना कर रहे हैं:

> उद्धारकर्ता हल कर सकता है हर एक समस्या,
> जीवन की उलझनों को है वह सुलझा सकता।
> कोई भी बात कठिन नहीं यीशु के लिए;
> कुछ भी ऐसा नहीं जिसे वह कर नहीं सकता।

एलिज़ाबेथ इलियट चाइना इनलैण्ड मिशन होम की दीवार पर लिखे एक उद्देश्यकथन (*मोटो*) का उल्लेख करती है:

> सूर्य थम गया। लोहा तैरने लगा।
> यह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है।
> वह मृत्यु तक हमारी अगुवाई करता रहेगा।

वे इस पर टिप्पणी करते हुए कहती हैं,

> यह परमेश्वर, जिसने एक साधारण व्यक्ति की प्रार्थना पर सूर्य को थमा दिया, जिसने गुरुत्वाकर्षण के अपने ही नियम को निलम्बित करते हुए कुल्हाड़ी को तैराया, यही वह परमेश्वर है जिसके पास मैं आती हूँ, यही वह परमेश्वर है जिसकी प्रतिज्ञा के कारण मैं जीवित हूँ। क्या वह मुझे मेरी दुर्दशा से निकाल सकता है? मेरी दशा चाहे जैसी भी हो, जैसे ही मैं इसकी तुलना सूर्य और कुल्हाड़ी के आश्चर्य से पहले वाली दशा से करती हूँ, तो मेरे मन के सन्देह हास्यास्पद लगने लगते हैं।[3]

मेबल ब्राऊन डेनीसन ने प्रेरणा पाकर इस पद को लिखा:

> हमारा प्रभु महान है, उसकी सामर्थ्य महान है।
> सारी वस्तुएं उसी के हाथों के द्वारा सम्भाली गईं हैं।

विश्व उसी के आदेश से कार्य करता है,
और उससे हल्का सा संकेत पा कर ही थम जाता है।

आइज़क वाट्स ने परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रचार इन पंक्तियों के माध्यम से किया है:

मैं परमेश्वर की महासामर्थ्य का गीत गाऊंगा
जो पहाड़ों को खड़ा करती है,
जो दूर दूर तक समुद्रों को फैलाती है
जिसने ऊँचे आकाश को बनाया।
मैं उस बुद्धि की स्तुति का गीत गाऊंगा
जिसने सूर्य को दिन पर प्रभुता करने के लिए ठहराया;
सूर्य उसके आदेश पर अपने पूरे तेज के साथ चमकता है,
और तारागण उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।

टिप्पणियाँ

1. *ओमनीपोटेन्ट* और *ऑलमाइटी* हूबहू समानार्थी हैं, जिनका अर्थ सर्वशक्तिमान है, एक लैटिन से और दूसरा एंग्लो–सेक्सन भाषा से आया है।
2. स्टीफ़न शेरनॉक, *द एक्ज़िसटेन्स एण्ड एट्रिब्यूट्स ऑफ गॉड,* पृ. 364।
3. एलिज़ाबेथ इलियट, *ए स्लो एण्ड सर्टन लाइट,* 33–34 पृष्ठों में।

–7–

सर्वत्र सदैव उपस्थित:
सर्वव्यापी परमेश्वर

मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं?
वा तेरे सामने से किधर भागूं?
यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है!
यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं
तो वहां भी तू है!
यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर
समुद्र के पार जा बसूं,
तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा,
और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।

– भजन 139:7–10

परमेश्वर सर्वव्यापी है। वह एक ही समय में सब स्थानों में उपस्थित रहता है। वह स्वर्ग और पृथ्वी को अपनी उपस्थिति से भर देता है।

यिर्मयाह 23:23–24 में, प्रभु यह कहता है,

> क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूं,
> जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूं?
> फिर यहोवा की यह वाणी है,
> क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है,
> कि मैं उसे न देख सकूं?
> क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?

इसी से मिलता जुलता एक और पद है: ''क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उन के बीच में होता हूं'' (मत्ती 18:20)।

ये पवित्रशास्त्र के अनेक पदों में से दो पद हैं जो यह शिक्षा देते हैं कि परमेश्वर एक ही समय में प्रत्येक स्थान पर है। वह हर स्थान पर है और उससे बच कर भागा नहीं जा सकता।

किन्तु परमेश्वर की सर्वव्यापिता और सर्वेश्वरवाद *(पैंथिइज़्म)* अलग अलग शिक्षाएं हैं। सर्वेश्वरवाद परमेश्वर को वस्तुओं, शक्तियों, और नियमों की बराबरी पर खड़ा कर देता है। सर्वेश्वरवाद (''सर्व'' और ''ईश्वर'') की शिक्षा यह कहती है कि परमेश्वर तुम्हारे बगीचे के पेड़ में है; इसलिए उस वृक्ष की आराधना करो। एक अन्य प्रकार का सर्वेश्वरवाद कहता है कि ईश्वर अनेक हैं, और इसलिए उन सब ईश्वरों की आराधना की जानी चाहिए। सर्वव्यापिता की शिक्षा सिर्फ एकमात्र सच्चे परमेश्वर पर लागू होती है। यह शिक्षा कहती है कि परमेश्वर को किसी भौगौलिक स्थान में सीमित नहीं किया जा सकता। वह प्रत्येक स्थान में है, और लोग उसकी उपस्थिति से छिप नहीं सकते।

एक बार एक नास्तिक ने दीवार पर लिखा, ''God is nowhere (परमेश्वर कहीं नहीं है)।'' एक बच्चा वहाँ आया और उसने बीच में एक खाली स्थान बनाते हुए उसे इस तरह से बदल कर पढ़ा, ''God is now here'' (परमेश्वर अब यहाँ है)। जॉन ऐरोस्मिथ एक गैरमसीही दार्शनिक के विषय में बताते हैं जिसने एक बार पूछा, ''परमेश्वर कहाँ है?'' मसीही ने उत्तर दिया, ''पहले आप मुझे बताइये कि वह कहाँ नहीं है?''[1]

थॉमस वाटसन ने लिखा है, ''परमेश्वर का केन्द्र प्रत्येक स्थान पर है, उसकी परिधि कहीं नहीं है।''[2] इसी तरह से जॉर्ज स्विनॉक कहते हैं, ''परमेश्वर को न किसी चीज़ के भीतर बंद किया जा सकता है, न ही कहीं से बाहर निकाला जा सकता है।''[3]

यद्यपि परमेश्वर प्रत्येक स्थान में उपस्थित है, पर वह प्रत्येक स्थान में दिखाई नहीं देता। कभी कभी उसकी उपस्थिति अन्य समयों की तुलना में अधिक स्पष्ट प्रतीत होती है। कभी कभी, जैसा कि कवि रॉबर्ट लोवेल ने कहा है, ''अनजाने धुंधलेपन के पीछे, परछाई में परमेश्वर खड़ा होता है, और अपने लोगों पर दृष्टि लगाए रहता है।'' चाहे हम उसे पहचान पायें या नहीं, सच्चाई कायम रहती है: वह वहाँ है।

जब हमारा ध्यान इस बात की ओर जाता है कि प्रभु यीशु देहधारी परमेश्वर है, तो हमारे सामने एक प्रश्न समस्या ले कर आता है कि क्या पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान वह सर्वव्यापी था? क्या उसने अपने आप को एक समय में एक ही स्थान पर सीमित नहीं कर दिया था – चाहे वह बैतलहम हो, या नासरत में, या कफरनहूम, या यरूशलेम में? इसका उत्तर एक विरोधाभास है। एक ही समय में वह इनमें से प्रत्येक स्थान पर भी उपस्थित था, वह सर्वव्यापी था। जब वह इस संसार में आया तो उसने अपनी सर्वव्यापिता को एक किनारे नहीं कर दिया। बल्कि, उसने एक और विशेषता धारण कर ली कि अब वह एक समय में, अपने

देहरूप में एक ही स्थान पर उपस्थित रहेगा। इस तरह से वह एक स्थान में रह कर भी किसी दूसरे स्थान पर एक व्यक्ति को चंगाई दे सकता था (मत्ती 8:13)। वह पृथ्वी पर रहते हुए भी ''पिता की गोद में'' (यूहन्ना 1:18) था। वह अपने चेलों को यह आश्वासन दे सकता था कि वह सदैव उनके साथ है (मत्ती 28:20), यद्यपि वह यह जानता था कि वे भिन्न-भिन्न स्थानों में तितर बितर हो जाएंगे (यूहन्ना 16:32)।

हमारा मस्तिष्क अवश्य ही इन मेल न खाने वाली बातों के मध्य मेल बिठाने में कठिनाई महसूस कर रहा होगा, परन्तु जैसा कि फ्राँसिसी गणितज्ञ पास्कर ने कहा है, ''हृदय के अपने तर्क होते हैं, जिन्हें स्वयँ तर्क नहीं समझता।''[4] और यही बात विश्वास पर भी लागू होती है!

परमेश्वर की सर्वव्यापिता का सिद्धान्त हमारे जीवन को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकता। उदाहरण के लिए, हम परमेश्वर से छिप नहीं सकते। योना ने तर्शीश जाने वाले जहाज में चढ़ कर परमेश्वर से छिपने का प्रयास किया, परन्तु परमेश्वर बड़ी मछली के पेट में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

आयरलैण्ड के एक युवा ने अपनी मसीही पृष्टभूमि को त्याग दिया और संयुक्त राज्य अमरीका को चला गया। बाद में उसने यह गवाही दी कि जब वह जहाज से न्यूयार्क पहुँचा, तब मसीह बन्दरगाह पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। शीघ्र ही उसने मन फिराया। अपनी सबसे प्रिय कविता में, अंग्रेज कवि फ्राँसिस थॉम्पसन उस जवान के उस व्यक्ति के पास से भाग जाने के व्यर्थ प्रयास का वर्णन करता है जिसे वह ''पीछा करने वाला स्वर्गीय जन'' कहता है:

> मैं उससे दूर भाग गया, रात रात और दिन दिन;
> मैं उससे दूर भाग गया, वर्षों के आगोश में;
> मैं उससे दूर भाग गया, भूलभुलैया से भरे मार्गों में;
> अपने मन से, और आँसुओं के बीच
> मैं उससे छिप गया, यह हास्यास्पद था।[5]

कम से कम, वह उससे छिपने का प्रयास किया! परन्तु बहुत से अन्य लोगों के समान, उसने पाया कि यह असम्भव है। जब थॉम्पसन अपने भगौड़ेपन से थक कर रूक गया, तो उसे परमेश्वर सामने खड़ा हुआ दिखाई दिया।

परन्तु सच्चाई का एक दूसरा पहलू भी है। यद्यपि परमेश्वर की सर्वव्यापिता की सच्चाई सामान्य रूप से संसार के लिए एक चेतावनी है, परन्तु साथ ही साथ परमेश्वर के लोगों के लिए यह एक शान्तिदायक बात है। भले ही परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों, वह उनके साथ है। अनेक लोगों ने मुझ से यह प्रश्न किया, ''परमेश्वर कहाँ था जब कॉन्सनट्रेशन कैम्पों में

परमेश्वर के लोगों को नरसंहार करने के लिए कैद कर दिया गया था और क्रूर यातनाएं दे देकर उन्हें निष्ठुरतापूर्वक मारा जा रहा था?'' मेरा उत्तर था, ''परमेश्वर भी इन कैम्पों में अपने लोगों के साथ कष्ट झेल रहा था।'' जब वे आग और बाढ़ के कारण पीड़ित होते हैं, तब वह उनके साथ होता है। वह उन्हें कभी नहीं छोड़ता जिनसे वह प्रेम रखता है। वे कभी अकेले नहीं होते।

यह तथ्य कि परमेश्वर सर्वव्यापी है हमें पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित करे। वह रात के अंधकार में भी उपस्थित है। वह उस स्थान में भी उपस्थित है जो स्थान मनुष्य की दृष्टि से छिपा हुआ है। वह उपस्थित है जब हम घर से बाहर अपने प्रियजनों से दूर हैं। मैं जो कुछ करता हूँ, मुझे अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिए, यह कार्य परमेश्वर की उपस्थिति में करने से कैसा रहेगा? यह हम सब के आचरण की एक वास्तविक कसौटी है। एच.सी. फिश ने इस विषय पर यह कहा है:

मैं तेरी उपस्थिति से कैसे भागूं,
तेरी आत्मा से भाग कर मैं कहाँ जाऊं,
क्योंकि तू ऊपर, नीचे, आगे, पीछे
पूरी तरह से विद्यमान है?
यदि मैं ऊपर आकाश की ओर जाऊं,
तो मैं अनन्तकाल में तुझसे मिलूंगा।

टिप्पणियाँ

1. *द गोल्डन ट्रेज़री ऑफ प्यूरिटन कोटेशन्स,* डी.इ. थॉमस द्वारा संकलित, पृष्ठ 120।
2. तत्रैव, पृष्ठ 119।
3. तत्रैव।
4. *तर्क* पर शब्द–क्रीड़ा पास्कल की मूल फ्रांसिसी कविता में बिल्कुल स्पष्ट समझ में आती है: ''ले कोयर ए सेस *रेयसन ला रेयसन* ने कोनैट पाइंट।''
5. फ्राँसिस थॉम्पसन, *पोइटिकल वर्क्स,* पृ. 89।

–8–

अनादि और अनन्त राजा

हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक
हमारे लिए धाम बना है।
इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए,
वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की,
वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक
तू ही ईश्वर है।

– भजन 90:1–2

परमेश्वर का कोई आरम्भ (भजन 93:2) या अन्त (व्य.वि. 32:40; भजन 102:27) नहीं है। वह सदा था और सदा रहेगा (प्रका. 4:9–10)। इसलिए यह कहना सही होगा कि परमेश्वर का जीवनकाल (अनादि से) अनन्तकाल है। हमारा मस्तिष्क एक न सृजे हुए अस्तित्व को समझ पाने के लिए बहुत जोर लगाता है। हमारे मन में यह प्रश्न आता है कि परमेश्वर को किसने बनाया। परन्तु परमेश्वर के अनादि और अनन्त होने का विचार हमारे समझ पाने के लिए बहुत विशाल है। उसका कोई आरम्भ नहीं था और उसका कोई अन्त नहीं होगा। वह समय से ऊपर है।

परमेश्वर का अनादि होना और उसकी अनन्तता ''वह अवधि है जिसका न आरम्भ है न अन्त; उसका अस्तित्व सीमाओं और आयामों से परे है। परमेश्वर का अनादि होना और उसकी अनन्तता ऐसा युवाकाल है जिसमें न तो शैशवस्था है और न वृद्धावस्था; बिना जन्म और मृत्यु का जीवन; बीते हुए कल या आने वाले कल के बिना का आज।''[1]

वह अनादि और अनन्त का राजा है (भजन 10:16; 1 तीमु. 1:17), जो सर्वदा राज्य करता है (भजन 66:7; 146:10), उसका राज्य सदा बना रहने वाला राज्य है (दानि. 4:3, 34), उसका सिंहासन अनन्तकाल तक स्थिर रहने वाला सिंहासन है (विलापगीत 5:19)।

सबसे पहली बार इब्राहीम ने उसे ''सनातन'' कहा था (उत्प. 21:33)।

मूसा ने परमेश्वर को अनादि और अनन्त बताते हुए कहा था, ''अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है, और नीचे सनातन भुजाएं हैं'' (व्य.वि. 33:27)।[2]

एलीहू उसकी स्तुति करते हुए कहता है:

> देख ईश्वर महान
> और हमारे ज्ञान से कहीं परे है,
> और उसके वर्ष की गिनती
> अनन्त है (अय्यूब 36:26)।

और दाऊद ने उसके विषय में कहा, ''परन्तु यहोवा सदैव सिंहासन पर विराजमान है'' (भजन 9:7)।

यशायाह ने प्रभु को ''अनन्तकाल का पिता'' (यशा. 9:6), और दानिय्येल ने उसे ''अति प्राचीन'' कहा (दानि. 7:9, 13, 22)।

परमेश्वर से दोहाई देते हुए हबक्कूक पूछता है, ''क्या तू अनादि काल से नहीं है'' (हब. 1:12)।

पौलुस ने भी उसे ''सनातन परमेश्वर'' कहा है (रोमि. 16:26)।

इब्रानियों की पत्री के लेखक ने परमेश्वर को उसके पुत्र को सम्बोधित करते हुए उद्धरित किया, ''तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त न होगा'' (इब्रा. 1:11–12)।

परमेश्वर समय की सीमा में नहीं रहता है, परन्तु समय की भाषा का प्रयोग करता है कि वह हमारी समझ के अनुसार अपने आप को ढाल ले: ''क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं, जैसा आज का दिन जो बीत गया'' (भजन 90:4)। पतरस यह स्मरण दिलाता है कि ''हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है'' (2 पतरस 3:8)। प्रभु समय के अनुसार उस तरह से नहीं चलता, जिस तरह से हम चलते हैं। एक लेखक ने अपना अनुभव इस तरह से लिखा है,

> परमेश्वर की दृष्टि में घटनाएं अधिक महत्व रखती है, बजाए कि वे समय जब ये घटनाएं घटती हैं। उदाहरण के लिए, अपने वचन में, परमेश्वर ने लगभग 400 वर्ष की उस अवधि को अनदेखा कर दिया है जो मलाकी के बोझ और यीशु के जन्म के बीच

> का समय है। परन्तु उसने उस एक सप्ताह को, जब हमारा प्रभु मरा था, इतना महत्व दिया कि इसका वर्णन करने के लिए उसने 25 से अधिक अध्यायों का प्रयोग किया है। परमेश्वर समय का पालन वैसा नहीं करता, जैसा हम करते हैं। और वह न ही समय के द्वारा नियंत्रित किया जाता है न उससे बन्धा होता है, जैसे कि हम।[3]

परमेश्वर के आदि और अनन्त होने के विषय में विचार करना हमें आराधना में झुक जाने के लिए प्रेरित करे। जब हम आरम्भहीन आरम्भ का विचार करते हुए अपने मस्तिष्क पर जोर देते हैं और फिर अपने विचारों को उसके अनन्त अस्तित्व की ओर हांकते हैं, तो हम विस्मय से भर जाते हैं, और उसकी उपासना करने को प्रेरित हो जाते हैं। जब हम इस बात को समझ जाते हैं कि इससे पहले कि कोई और था तथा कुछ और था, उससे पहले ही त्रिएक परमेश्वर – पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा था – तो हम प्रेम और स्तुति में खो जाते हैं।

परमेश्वर के अनादि और अनन्त होने पर मनन करने से हमें यह शिक्षा मिलती है कि इसकी तुलना में पृथ्वी पर हमारा जीवन कितना छोटा है। इस विषय पर मनन करने पर हम यह प्रार्थना करने लगते हैं, ''हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएं'' (भजन 90:12)। कुछ ऐसे कार्य हैं जिन्हें हम परमेश्वर के लिए इस पृथ्वी पर रहते हुए ही कर सकते हैं, स्वर्ग में कभी नहीं। दिन ही दिन रहते हमें अपने भेजने वाले के कार्य को करते रहना है क्योंकि ''वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 9:4)।

दाऊद की इस प्रार्थना पर हमें कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिए,

> हे यहोवा ऐसा कर कि मेरा अन्त मुझे मालूम हो जाए,
> और यह भी कि मेरी आयु के दिन कितने हैं;
> जिस से मैं जान लूं कि मैं कैसा अनित्य हूं !
> देख, तू ने मेरी आयु बालिश्त भर की रखी है,
> और मेरी अवस्था तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं।
> सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों
> तौभी वे व्यर्थ ठहरे हैं।(भजन 39:4–5)

आइज़क वाट्स के अनुसार,

> इससे पहले कि पहाड़ियाँ अपने स्थान पर खड़ी हुईं,
> या पृथ्वी को उसका रूप दिया गया,
> अनादि से ही तू परमेश्वर है,
> अनन्तकाल तक तू एक सा है।

टिप्पणियाँ

1. *द ग्रेट डॉक्ट्रिंन्स ऑफ द बाइबल,* पृ. 35 में विलियम आइवन्स के द्वारा उद्धरित।
2. *आदि* और *अनन्तकाल* के अंग्रेजी शब्द समानार्थी हैं, नया नियम में, ये एक ही यूनानी शब्द (*आइयोनियोस)* के अनुवाद हैं।
3. एम. हॉरलोक, *''द इटरनल गॉड,''* पृ. 127।

–9–

परमेश्वर मर नहीं सकता

अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

– 1 तीमुथियुस 1:17

परमेश्वर न सिर्फ अनादि काल से अनन्तकाल तक है, बल्कि वह *अमर* भी है। दोनों शब्दावलियों *(अनादि/अनन्त* व *अमर)* का एक दूसरे के समानार्थी के रूप में भी प्रयोग कर लिया जाता है, परन्तु दोनों के अर्थ में एक अन्तर है। जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर अनादि और अनन्त है क्योंकि वह जीवन के आरम्भ और अन्त के बिना है। परन्तु वह इसलिए अमर है क्योंकि वह मृत्यु के आधीन नहीं है।

प्रभु यीशु मसीह अमर है। पौलुस उसके विषय में यह कहता है कि ''अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है''(1 तीमु. 6:16)। उसी ने ''मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया'' (2 तीमु. 1:10)। ईश्वरत्व (त्रिएक परमेश्वर) के तीनों व्यक्ति अमर हैं। ये तीनों मृत्युहीनता के स्त्रोत हैं। यह गुण उनके भीतर स्वाभाविक रूप से पाया जाता है, परन्तु वे इस गुण को दूसरों को भी दे सकते हैं।

प्रभु के संबंध में *अजर* शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। यह *अमर* का समानार्थी नहीं है, परन्तु इससे निकटता से जुड़ा हुआ है। इसका अर्थ है, ''सड़ाहट या खराब होने के आधीन नहीं।'' पौलुस अन्यजाति मूर्तिपूजकों के विषय में कहता है, कि उन्होंने ''अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में'' बदल दिया (रोमि. 1:23), अर्थात्, जीवित अनादि–अनन्त परमेश्वर की आराधना के बदले प्राणहीन मूरतों की आराधना करना जो जर्जर और नष्ट हो सकती हैं।

मैंने कहा है कि परमेश्वर मर नहीं सकता। और तौभी प्रभु यीशु मसीह, जो परमेश्वर है, मर गया था। वह ''स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, . . ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे'' (इब्रा. 2:9)। इस समस्या का समाधान करने के लिए यह कह उठना सरल होगा कि वह अपने मनुष्यत्व में मरा परन्तु परमेश्वर के रूप में वह मर नहीं सकता था। किन्तु, यह उत्तर संतोषजनक नहीं है। हम इस विरोधाभास को समझाने के लिए अपने प्रभु के ईश्वरत्व और मनुष्यत्व को अलग अलग बिल्कुल न करें। इन दोनों स्वभावों को अलग अलग नहीं किया जा सकता। इस विरोधाभास को ऐसे ही छोड़ देना उचित होगा। परमेश्वर मर नहीं सकता, यीशु परमेश्वर है, और तौभी यीशु मरा।

वर्तमान के सभी लोगों की तरह विश्वासियों की देहें भी मृत्यु और सड़ाहट के अधीन हैं। विश्वासियों की आत्मा और प्राण अमर है। जब मसीह आएगा, तो विश्वासियों को महिमा की देहें प्रदान की जाएंगी, जो अमर और अजर दोनों ही होंगी (1 कुरि. 15:50–54)। तब ''जो मरणहार है वह जीवन में डूब'' जाएगा (2 कुरि. 5:4)। डब्ल्यू. इ. वाइन कहते हैं कि बाइबल का यह दूसरा स्थल दर्शाता है कि अमर का अर्थ ''मृत्युहीनता से कुछ अधिक है, यह जीवन का आनन्द लिए जाने की गुणवत्ता को दर्शाता है।'' डब्ल्यू. चेमर्स स्मिथ ने लिखा है,

> अगम्य ज्योति में हमारी दृष्टि से छिपा हुआ,
> हे परमेश्वर, अमर, अदृश्य, एकमात्र बुद्धिमान!
> सबसे धन्य, सबसे महिमामय, अति प्राचीन,
> हो तेरे महान नाम की स्तुति, हे विजयी, सर्वशक्तिमान!!

–10–

उसे मापा नहीं जा सकता

क्या परमेश्वर सचमुच पृथ्वी पर वास करेगा,
स्वर्ग में वरन् सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता,
फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में क्योंकर समाएगा!

– 1 राजा 8:27

परमेश्वर असीमित है। उसकी महानता को मापने या उसका हिसाब लगाने का कोई उपाय नहीं है। वह अपार और असीमित है। कोई भी सृजा हुआ प्राणी उसे समझ नहीं सकता। उसकी महानता हमारी समझ से परे है।

यिर्मयाह 23:24 में, प्रभु स्वयं एक शब्दाडंबरपूर्ण प्रश्न (जिस प्रश्न में ही निहित उत्तर 'हाँ' में पाया जाता है) पूछता है, ''क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?''

ब्रदर लॉरेन्स, जो चिरपरिचित पुस्तक *प्रेक्टिस ऑफ द प्रेज़ेन्स ऑफ गॉड,* के लेखक हैं, इस पुस्तक में लिखते हैं,

> सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने का अर्थ है उसके वास्तविक रूप को पहचानना,अर्थात्, यह कि वह असीमित रूप से सिद्ध, असीमित रूप से आराधना के योग्य,असीमित रूप से बुराई से अलग, और ऐसा ही वह अपने सभी गुणों में पवित्र है। तो फिर चाहे कोई भी मनुष्य क्यों न हो, और उसके पास कितना भी छोटा या बड़ा कारण क्यों न हो, वह अपनी सारी शक्ति इस महान परमेश्वर का आदर और आराधना करने में क्यों न लगायेगा?[1]

यह एक विरोधाभास प्रतीत हो सकता है, कि जबकि परमेश्वर अपने सारे गुणों में असीमित है, फिर भी उनमें से कुछ गुणों में एक तरह की सीमा पाई जाती है। जैसा कि मैंने पहले ही यह उल्लेख किया है कि यद्यपि वह सर्वशक्तिमान है, परन्तु वह कोई भी बुरा कार्य नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में, उसकी सामर्थ्य उसकी पवित्रता के दायरे में सीमित है। साथ ही हमें इस बात का भी ध्यान रखना आवश्यक है कि उसकी दया कभी न समाप्त होने वाली दया नहीं है। उसका आत्मा सदा पापियों से वादविवाद करता न रहेगा (उत्प. 6:3)। इसलिए कोई भी परमेश्वर की अवहेलना न करे।

जब हम परमेश्वर की असीमितता के विषय में विचार करते हैं, तो हमारे लिए यह अच्छा होगा कि हम यह ध्यान रखें कि हम कितने सीमित हैं। पवित्रशास्त्र में हमारी तुलना भाप, घास, फूल, वायु, जुलाहे की धड़की, और बलिश्त जैसी क्षणभंगुर वस्तुओं से की गई है। एक समय होता है जब हम शक्तिशाली और स्वस्थ रहते हैं। कुछ ही क्षणों में एक कीटाणु हमारी तंत्रिकाओं में घुस जाता है, और कुछ ही समय में हम तो बर्तन मांजने के भीगे हुए कपड़े की तरह कमजोर हो जाते हैं। कितनी अद्‌भुत बात है कि असीमित परमेश्वर बड़ी दया के साथ यह स्मरण करते हुए दृष्टि करता है कि हम धूल से बनाए गए हैं! हम जो कुछ हैं, और जो कुछ हमारे पास है, सब कुछ उसी की योग्यता के कारण है।

अन्तिम बात, यद्यपि हम यह मान लेते हैं कि परमेश्वर असीमित है, परन्तु इस बात की भी पूरी संभावना है कि हम उसकी क्षमताओं को सीमित मान बैठें। इस्राएलियों ने जंगल में ऐसा ही किया था: ''वे बार–बार ईश्वर की परीक्षा करते थे, और इस्राएल के पवित्र को खेदित करते थे'' (भजन 78:41)। उसके द्वारा उनके लिए किए गए सारे आश्चर्यकर्मों के बाद भी, वे तुरन्त ही उन्हें भूल कर उसकी बुद्धि, उसके प्रेम, और सामर्थ्य पर सन्देह करने लगते थे। इस प्रकार के सन्देह उसकी असीमितता का अपमान हैं। लूसी एन्न बेनेट परमेश्वर की असीमितता की सिर्फ स्तुति करती हैं:

हे असीमित उद्धारकर्ता!
मैं तुझ से और कुछ नहीं मांगती,
क्योंकि तू मुझे बुलाता है,
मैं अपने आप को तुझ पर छोड़ देती हूँ,
क्योंकि तूने मुझे स्वीकार किया है,
मैं प्रेम करती हूँ और तेरी सराहना करती हूँ;
क्योंकि तेरा प्रेम मुझे ऐसा करने के लिए विवश करता है,
मैं सदा सर्वदा तेरी स्तुति करती रहूंगी!

टिप्पणी

1. *अवर डेली ब्रेड* में डी.सी. एग्नर के द्वारा उद्धरित, 6 मार्च 1983।

–11–

सर्वाधिकारी सर्वोच्च शासक

उसकी प्रभुता सदा की है,
और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहनेवाला है।
पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं,
और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच
अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है;
और कोई उसको रोककर उस से नहीं कह सकता है,
तू ने यह क्या किया है?

– दानिय्येल 4:34–35

ऊपर लिखा गया पद इसे लिखने वाले और इसे लिखे जाने के समय के कारण (इस पाठ के शीर्षक के लिए) बिल्कुल उपयुक्त है। इसका लेखक नबूकदनेस्सर था, वह बाबुल के साम्राज्य का महानतम राजा और सर्वोच्च शासक था। इसे उसने उस समय लिखा जब उसके अंहकारी घमण्ड के कारण परमेश्वर द्वारा उसे दीन किए जाने का समय पूरा हो रहा था। यह अन्यजाति राजा भी यह समझ गया कि यहोवा ही स्वर्ग और पृथ्वी पर सबसे ऊँचा प्रभु और स्वामी है, और उसे रोक पाना या उससे लेखा लेना किसी के वश में नहीं है।

जी हाँ, हमारा परमेश्वर सर्वाधिकारी और सर्वोच्च शासक है; वह विश्व का सर्वोच्च शासक है। सब कुछ उसके आधीन है इसलिए वह जो चाहे कर सकता है, और वह हमेशा सिर्फ भली, सुहावनी, और सिद्ध बातों को ही चाहता है। साधारण शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि परमेश्वर के सर्वाधिकारी और सर्वोच्च शासक होने की सच्चाई परमेश्वर को परमेश्वर मानने के लिए विवश करती है और उसे हमारे स्तर तक नीचे लाने के किसी भी प्रयास का दृढ़ता से इंकार करती है। वह सब बातों पर प्रधान है और वह किसी को स्पष्टीकरण दिए बिना, किसी से अनुमति लिए बिना, या किसी से क्षमा मांगे बिना ही जो चाहे कर सकता है।

उसकी सर्वप्रभुता के विषय में इफिसियों 1:11 में बताया गया है: ''उसी में जिस में हम

भी उसकी मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने।'' यह वाक्य विशेष रूप से अहम है – ''जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है।'' अर्थात्, परमेश्वर जो चाहता है वह करता है।

यशायाह ने प्रभु का चित्रण इस तरह से किया है,

> ''मैं तो अन्त की बात आदि से,
> और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई,
> मैं कहता हूँ मेरी युक्ति स्थिर रहेगी,
> और मैं अपनी इच्छा को पूरी करुंगा'' (यशायाह 46:10)।

यहाँ पर परमेश्वर पूर्ण अधिकार से कम की किसी भी बात से बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं है।

पूर्ण सर्वाधिकार और सर्वसत्ता परमेश्वर के छोड़ और किसी के हाथ में होना सुरक्षित नहीं है। जब तक वह इसे लागू करता है, तब तक तानाशाही या निरंकुश शासन का कोई खतरा नहीं है।

विश्वासियों के लिए, यह एक अद्‌भुत बात है कि परमेश्वर सब के ऊपर है। यह जान लेने से बड़ी शान्ति मिलती है कि हम किसी अंधसंयोग के शिकार नहीं हैं, बल्कि हम उसके नियंत्रण में हैं। यदि सर्वोच्च शासक हमारी ओर है, तो कोई भी हमारा विरोध कर हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता (रोमियों 8:31)।

अंग्रेजी के संवेदनशील कवि विलियम कूपर कहते हैं कि हमें परमेश्वर की सर्वोच्चता की सच्चाई से एक नया साहस प्राप्त करना चाहिए:

> परमेश्वर अपने कार्यों को रहस्यमय ढंग से आगे बढ़ाता है,
> वह अद्‌भुत आश्चर्यकर्म करता है;
> वह अपने कदम समुद्र में रखता है,
> और आंधी पर सवार हो कर आगे बढ़ता है,
>
> हे भयभीत विश्वासियो, नया साहस प्राप्त करो;
> बादल चाहे कितने घने और भयानक क्यों न हों;
> वे दया से भर जाएंगे, और बरस कर
> तुम्हारे ऊपर आशीष ही आशीष बरसाएंगे।।

परमेश्वर के सर्वाधिकार और उसकी सर्वसत्ता की सच्चाई आराधना का एक उपयुक्त

विषय है। और कोई बात अधिक संगत नहीं हो सकती कि हम उसके सामने गिर कर उसे उसके इस गुण के लिए श्रद्धासुमन, स्तुति, और धन्यवाद अर्पित करें। जे. सिड्लो बेक्सटर ने परमेश्वर के पुत्र के सर्वाधिकार और उसकी सर्वसत्ता पर आराधना के भाव से एक मनन प्रस्तुत किया है:

> यशायाह को जिस अद्‌भुत बात ने चौंका दिया वह यह था कि वह तुच्छ जाना गया, दीन किया गया, कोड़े खाया हुआ, घायल किया गया, भेदा गया, हीन किया गया, प्रतिरोध न करने वाला, नम्र और दीन, पाप को उठा ले जाने वाला दुःखी पुरुष जिसे यशायाह ने ''वध के लिए ले जाए जाने वाले मेम्ने'' के रूप में देखा था, वही था जिसे उसने इससे पहले भावविभोर कर देने वाले स्वर्गीय वैभव से घिरे, महिमा से चंकाचौंध सिंहासन पर बैठे, और सारी जातियों और सब समयों पर सारी प्रधानता और सर्वसत्ता के साथ राज्य करते देखा था! उसकी सर्वशक्तिमत्ता और सर्वसत्ता जो अरबों तारों को अपने पाँवों से रौंद सकता है और उससे उसे कोई फर्क न पड़े; ऐसा सर्वाधिकारी सर्वोच्च शासक पाप को भस्म कर देने वाली अपनी पवित्रता के तेज़ से, जिससे कि एक क्षण में ही पापी मनुष्यों की सारी जाति भस्म कर पूरी तरह से समाप्त की जा सकती है; ऐसा अनन्त सर्वसत्ताक प्रभु जो सारे संसार और सारे प्राणियों को नियंत्रित करता है; *वही* सर्वसत्ताक गुण *यीशु* के व्यक्तित्व में होकर देहधारी हुआ, महिमा के अवर्णनीय सिंहासन से नीचे उतरा, और जगत का पाप उठा ले जाने वाले *मेम्ने* के रूप में उस रक्तरंजित क्रूर क्रूस पर लटक गया![1]

और यदि प्रभु सर्वोच्च शासक है, तो यही उचित होगा कि हम अपने आप को उसके नियंत्रण के आधीन सौंप दें। वह कुम्हार है और हम मिट्‌टी हैं। यह हास्यप्रद है कि मिट्‌टी कुम्हार से यह प्रश्न करे या उसे अपने ऊपर हाथ फेरने से रोके। हम उसे एक ही बात कह सकते हैं, ''अपनी इच्छा से मुझे आकार दे और बना, तब तक मैं तेरे सामने समर्पण के साथ मौन रह कर ठहरा हुआ हूँ।''

कुछ लोगों को परमेश्वर के सर्वसत्ताक चुनाव पर आपत्ति है, अर्थात् इस बात से, कि उसने जगत की उत्पत्ति के पहले से मसीह में कुछ लोगों को चुन लिया है (इफि.1:4)। वे यह समझ पाने में कठिनाई महसूस करते हैं कि फिर पवित्रशास्त्र के कुछ स्थल ऐसा क्यों कहते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करे। सच्चाई यह है कि बाइबल सर्वसत्ताक चुनाव और मानवीय उत्तरदायित्व की शिक्षा देती है। सच्चाई इन दोनों सिरों में से किसी एक पर नहीं, बल्कि दोनों में साथ साथ पाई जाती है। वे समानान्तर सच्चाइयाँ हैं जो सिर्फ अनन्त में जा कर एक दूसरे से मिलती हैं। मानवीय बुद्धि परमेश्वर द्वारा चुने जाने और मनुष्य की स्वतंत्र

इच्छा के बीच तालमेल को नहीं समझ सकती। समस्या हमारी बुद्धि में है, परमेश्वर में नहीं।

परमेश्वर ने कुछ लोगों को उद्धार पाने के लिए चुन लिया है, इसका अर्थ यह नहीं है कि शेष लोगों को उसने खो जाने के लिए चुना है। संसार पहले से ही पापों में खोया और मरा हुआ है। यदि हमें हमारे हाल पर छोड़ दिया जाए, तो हम में से हर एक अनन्तकाल के लिए दोषी ठहरा दिया जाएंगे। एक प्रश्न यह उठता है: क्या परमेश्वर के पास यह अधिकार है कि वह नीचे उतर कर पहले से दोषी ठहरा दिए गए मुट्ठी भर मिट्टी को उठाए, और उन्हें रूप देकर एक सुन्दर बर्तन बनाए? अवश्य ही उसके पास यह अधिकार है। सी.आर. इर्डमान्स इसे सही दृष्टिकोण से इस तरह से समझाते हैं, ''परमेश्वर अपनी सर्वसत्ता का प्रयोग कभी भी उद्धार पाने वाले लोगों को दोषी ठहराने के लिए नहीं करता, बल्कि वह इसका प्रयोग खो कर नाश हो जाने वाले लोगों को उद्धार देने के लिए करता है।''[2]

लोग एक ही तरीके से यह जान सकते हैं कि वे चुने हुओं में से हैं या नहीं, और वह तरीका है यीशु मसीह पर अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास लाना (1 थिस्स. 1:4–7)। परमेश्वर उद्धारकर्ता को ग्रहण करने का श्रेय लोगों की स्वतंत्र इच्छा के आधार पर लोगों को देता है। विश्वास न लाने वाले यहूदियों को फटकारते हुए प्रभु यीशु ने उनकी इच्छा को दोष दिया था। उसने यह नहीं कहा था, ''तुम मेरे पास नहीं आ सकते क्योंकि तुम चुने हुए नहीं हो।'' बल्कि, उसने *यह* कहा, '' फिर भी तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते'' (यूहन्ना 5:40)।

एक विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं है, क्या सर्वाधिकारी सर्वोच्च शासक को यह अधिकार है कि वह उद्धार देने के लिए कुछ लोगों को चुन ले? बल्कि, हमें यह प्रश्न करना चाहिए, उसने मुझे क्यों चुना है? यह बात हमें अनन्तकाल तक उसकी आराधना करने वाला व्यक्ति बना दे।

परमेश्वर की सर्वसत्ता के विषय में एक और प्रश्न उठता रहता है: उसने पाप होने क्यों दिया? यदि वह सर्वोच्च शासक है, तो उसने यह सब उथल–पुथल क्यों मचने दिया जो उसके द्वारा सृजे गए प्राणियों की मनमानी के कारण हुआ? शायद इस प्रश्न के उत्तर का कुछ भाग हम दे सकते हैं:

जब परमेश्वर ने यह निर्णय लिया कि वह स्वर्गदूतों और मनुष्यों को स्वतंत्र इच्छा वाले प्राणियों के रूप में बनाएगा, तो उसके सामने यह एक अटल संभावना थी कि वे उसके विरुद्ध में विद्रोह करेंगे। अवश्य ही, वह उन्हें स्वतंत्र–इच्छा दिए बिना ही बना सकता था। वह उन्हें रोबोट के समान बना सकता था, जो हर घण्टे उसे झुक झुक कर दण्डवत् करते। परन्तु

परमेश्वर की अधिक महिमा तब होती है जब उसके बनाए प्राणी उससे इसलिए प्रेम रखते हैं और उसकी आराधना इसलिए करते हैं क्योंकि वे अपनी इच्छा से ऐसा करना चाहते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि शैतान ने स्वर्ग में परमेश्वर के विरुद्ध में विद्रोह करना चाहा, और फिर उसने पृथ्वी पर उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया, और बीमारी, पीड़ा, त्रासदी, और मृत्यु की बाढ़ लेकर आ गया। परन्तु परमेश्वर न तो कभी हारता है, और न किसी की चालाकी से मात खाता है। उसने छुटकारा की अद्‌भुत पूर्ण योजना को गति दे दिया। मसीह के द्वारा क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के परिणामस्वरूप, परमेश्वर को अधिक महिमा मिली और विश्वासियों को अधिक आशीषें मिलीं, जितना कि तब नहीं मिलतीं जब आदम पाप नहीं किया होता। आदम के पाप न करने पर हम जिस दशा में पाए जाते, मसीह में हम अब उससे बहुत बेहतर दशा में पाए जाते हैं। जैसा कि किसी ने कहा है, ''मसीह में आदम के पुत्र अधिक आशीषों पर घमण्ड करते हैं जितना कि उनके पिता आदम ने नहीं खोई थीं।'' इसलिए अन्तिम बाजी परमेश्वर ही जीतता है। यदि पाप उसकी सिद्ध सृष्टि में प्रवेश करता है तो वह निराश नहीं होता बल्कि उस पर प्रबल हो जाता है।

सर्वाधिकारिता या सर्वोच्च प्रभुता परमेश्वर का एक सुन्दर गुण है। इससे भयभीत न हों। उस पर भरोसा करें और उसका आनन्द उठाएं। इस गुण के कारण उसकी आराधना करें। उसे अपना परमेश्वर मानें, और इस अज्ञात कवि के साथ मिलकर कहें:

शासन, मार्गदर्शन, निर्देशन,
प्रकाश के संसारों की सेना पर राज्य करता,
अभी ऊँचा उठाता, अभी नीचे गिरा देता,
तेरा सामर्थी हाथ!
तौभी हम तेरी सामर्थ और बुद्धि को
तेरे सर्वसत्ताक अनुग्रह द्वारा एक किए जाते हुए देखते हैं।

टिप्पणियाँ

1. जे. सिडलो बक्सटर, *द मास्टर थीम ऑफ द बाइबल ग्रेटफूल स्टडीज़ इन द कॉम्प्रिहेन्सिव सेवियरहूड ऑफ अवर लॉर्ड जीज़स ख्राइस्ट,* पृ. 80।

2. चार्ल्स आर. इर्डमान, *द इपिसल ऑफ पॉल टू द रोमन्स,* पृ. 109।

–12–

अत्यन्त सर्वोपरि

क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता है,
और जिसका नाम पवित्र है,
वह यों कहता है,
मैं ऊँचे पर और पवित्र स्थान पर निवास करता हूँ,
और उसके संग भी रहता हूँ,
जो खेदित और नम्र है।

– यशायाह 57:15

परमेश्वर विश्व से बहुत ऊँचा है। सिर्फ वही अनादि–अनन्त, असीमित, स्वयंभू, स्व–अस्तित्व (आत्मनिर्भर), अखण्ड, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, और सर्वव्यापी है। इन गुणों के कारण वह भौतिक अस्तित्व की सीमाओं से परे है। उसका अस्तित्व उसकी सृष्टि से अलग है।

हे यहोवा, महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है;
क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है;
हे यहोवा राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है।
धन और महिमा तेरी ओर से मिलती है, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है।
सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं,
और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है
(1 इतिहास 29:11–12)।

हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता? (2 इतिहास 20:6)

परमेश्वर का अपनी सृष्टि से ऊँचा और परे होने की सच्चाई को हम इस रूप में देखते हैं कि वह न सिर्फ पाप पर प्रबल होता है बल्कि वह इसे पूरी तरह से अपने नियंत्रण में कर उसका रूख ऐसा मोड़ देता है कि यह परमेश्वर की योजना को पूरी करने का एक हिस्सा बन जाता है। उसने शैतान और उसके अभिकर्ताओं को, तेजोमय प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने दिया, तौभी इस मृत्यु के द्वारा उसने शैतान का सर्वनाश कर दिया और अनगिनत लोगों को उद्धार दे दिया (प्रेरित. 2:23; 1 कुरि. 2:8)।

उसने अय्यूब की इतनी अधिक हानि होने दी जितनी उस समय के किसी व्यक्ति ने कभी नहीं सही थी, तौभी उसने अपने नाम को ऊँचा किया, शैतान को मौन कर दिया, अय्यूब को दोहरा प्रतिफल दिया, और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसी पुस्तक दिया जो उन्हें उनकी विपरीत परिस्थितियों में अपार शान्ति का अनुभव प्रदान करती है।

उसने यूसुफ के भाइयों को उसे मिस्र में बेचने दिया, तौभी उसने यूसुफ को उसके लोगों को बचानेवाले के रूप में खड़ा किया। वे अपने भाई की बुराई चाहते थे, परन्तु ''परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिस से वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं'' (उत्प. 50:20)।

जब प्रभु यीशु ने जन्म के अन्धे व्यक्ति को चंगा किया, तो धार्मिक अगुवों ने उस व्यक्ति को यहूदी आराधनालय के बाहर कर दिया (यूहन्ना 9:34)। ऐसे भी प्रभु यीशु उस व्यक्ति को यहूदीवाद के झुण्ड से ज़रूर बाहर ले जाता (यूहन्ना 10:3)। इसलिए वे यहूदी अगुवे वही कार्य कर पाने में सफल हुए जिसे प्रभु यीशु को ऐसे भी करना ही था।

सुसमाचार के बैरियों ने पौलुस को बन्दीगृह में डाल दिया, तौभी उस बन्दीगृह से ऐसे ऐसे पत्र भेजे गए[1] जो अब परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए पवित्रशास्त्र के महत्वपूर्ण अंश हैं।

परमेश्वर का सृष्टि से ऊँचा और परे होने की सच्चाई की उचित समझ रखने से हम परमेश्वर के बारे में सामान्य विचार रखने से बच सकेंगे। उचित समझ हमें उसकी इस फटकार से बचाएगी, ''तू ने समझ लिया कि परमेश्वर बिल्कुल मेरे समान है'' (भजन 50:21)। और यह हमें लूथर द्वारा इरासमुस को दी गई इस फटकार से भी बचाएगी, ''परमेश्वर के विषय में तुम्हारे विचार अति मानवीय हैं।''

वर्तमान समय में देखे जा रहे उथले विश्वास का एक बड़ा कारण यह है कि विश्वासी परमेश्वर के बारे में बहुत छोटी समझ रखते हैं। हम परमप्रधान के गुप्त स्थानों में निवास करने

में असफल रहें हैं, और हम परमेश्वर की नैतिक सर्वश्रेष्ठताओं का अध्ययन और मनन करने में असफल रहे हैं। इससे गलत धारणाएं और अज्ञानता उभर कर सामने आई हैं, जबकि हमने अपने आप को और अपनी उपलब्धियों को ऊँचा उठाया है, और यह भूल गए हैं कि हम कुछ भी नहीं हैं और कुछ भी करने के योग्य नहीं हैं जब तक यह हमें ऊपर से दिया नहीं जाता। हमारा धर्मविज्ञान परमेश्वर पर नहीं, बल्कि आत्म–केन्द्रित हो गया है।

मेल्कम डेविस कहते हैं,

> व्यावहारिक दृष्टि से, परमेश्वर का अपनी सृष्टि से ऊँचा और परे होने की सच्चाई हमें प्रोत्साहित करती है कि हम परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता में सब समयों में (तब भी जब इसकी पूर्णता का कोई प्रमाण न दिखाई दे और ऐसा करने के लिए हतोत्साहित किया जाए) एक शंकाहीन विश्वास रखें, हम यह निश्चय मान लें कि वह इसे पूरा करेगा और अपने समय में और अपने तरीके से इस आज्ञाकारिता का प्रतिफल देगा। यह एक धीरजपूर्ण दीनता को भी उत्पन्न करता है कि हम परमेश्वर के द्वारा हमारे साथ किए जा रहे सब व्यवहारों को आनन्द के साथ स्वीकार करें, चाहे कठिनाई में, चाहे गलतफहमियों में, चाहे सताव में, यद्यपि हम उस समय उनके पीछे के कारण को नहीं समझ पाते; फिर भी हम सिर्फ यह विश्वास करते हैं कि अन्त में वह हमारा पलटा लेगा, और अपने लोगों के रूप में अपने नाम के निमित्त हमें आशीष देगा।[2]

जब हम अपने लोकातीत परमेश्वर और उसके अतिश्रेष्ठ गुणों के अध्ययन और मनन का अनदेखा करते हैं, तो हम अपनी बड़ी हानि करते हैं।

परमेश्वर पुत्र, जो देहधारण से पहले महिमा में अपनी सृष्टि से बहुत ऊँचा और परे था, एक दास के समान नीचे उतर कर इस पृथ्वी पर, इसकी पूरी गहराई में आया, और क्रूस पर एक कलंकित मृत्यु को सहा (फिलि. 2:5–11)। परन्तु जब उसका कार्य पूरा हो गया, तो मृतकों में से जी उठा, स्वर्ग पर चढ़ गया, और अब परमेश्वर के सिंहासन पर अपनी सृष्टि से बहुत ऊँचा किया जा कर जा बैठा है। एक कवि, जिन्हें एच.इ.जी. नाम से जाना जाता है, लिखते हैं,

> ऊँचा, सबसे ऊँचा!
> क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु, सबसे ऊँचा!
> उसके पाँवों की पीढ़ी जैसे नीचे हम गिरते हैं,
> परमेश्वर ने उसे सबसे बहुत ऊँचा उठाया है!

टिप्पणियाँ

1. जेल से लिखी गई पत्रियाँ: इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, और फिलेमोन।
2. ''द ट्रांन्सेन्डेन्स ऑफ गॉड,'' पृ. 76।

–13–

इतना महान

कि उसे पूरी तरह से समझ पाना असम्भव है

क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है?
और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता है?
वह आकाश सा ऊंचा है; तू क्या कर सकता है?
वह अधोलोक से गहिरा है, तू कहां समझ सकता है?
उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है और समुद्र से चौड़ी है।।

– अय्यूब 11:7–9

परमेश्वर इतना महान है कि उसे समझ पाना हमारी बुद्धि की क्षमता से बाहर है। वह इतना महान है कि वह सर्वाधिक बुद्धिमान लोगों की बुद्धि में नहीं समा सकता, वह इतना महान है कि वह सर्वोत्तम तार्किक समझ रखने वालों की समझ में नहीं आ सकता। किसी भी प्राणी द्वारा उसकी थाह पा सकना असम्भव है।

स्टीफन शेरनॉक ने कहा है, ''यह देखा जा सकता है *कि* परमेश्वर है। यह देखा नहीं जा सकता वह *क्या* है।'' कुछ ऐसा ही अनुभव रिचर्ड बक्सटर का भी है, ''आप परमेश्वर को जान सकते हैं, परन्तु उसे पूरी तरह से समझ नहीं सकते।''

हम परमेश्वर के विषय में उन बातों को जान सकते हैं जिन्हें उसने अपनी इच्छा से सृष्टि में, ईश्वरीय प्रबन्ध में, विवेक में, छुटकारे में, बाइबल में, और सबसे बढ़ कर मसीह के व्यक्तित्व में स्वयँ को प्रगट किया है। यद्यपि कभी भी किसी ने परमेश्वर को नहीं देखा है, तौभी ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट[1] किया है'' (यूहन्ना 1:18)। पुत्र ने पिता को ऐसा हूबहू प्रगट किया है कि वह यह कह सकता है, ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है : तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा'' (यूहन्ना 14:9)।

यदि हम परमेश्वर को पूरी तरह से समझ सकते, तो हम भी उतने ही महान बन जाते

जितना कि वह है। यदि वह कोई खुदी हुई मूरत होता, तो हम उससे भी महान बन जाते क्योंकि हम उसे रूप दे सकते हैं और उसका निर्माण कर सकते हैं। यदि वह मनुष्यमात्र होता, तो हम उसे समझ सकते थे क्योंकि तब हम उसके बराबर होते। यदि वह कोई स्वर्गदूत भी होता, तो वह हमारी समझ से परे नहीं होता क्योंकि तब वह भी एक सृजा गया प्राणी होता।

परन्तु हम एक ऐसे परमेश्वर को कैसे समझ सकते हैं कि जिसका कोई आरम्भ नहीं है, जिसके पास सारी सामर्थ्य और सारी बुद्धि है, और जो एक ही समय में हर जगह उपस्थित है? हम एक ऐसे परमेश्वर को कैसे समझ सकते हैं जिसका अस्तित्व तीन समतुल्य व्यक्तियों में है – परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा? या हम देहधारण के भेद को कैसे समझ सकते हैं कि प्रभु यीशु मसीह पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य कैसे हो सकता है?

और यद्यपि हम पूर्ण रूप से उसे समझ नहीं सकते, फिर भी हम उसके प्रति सबसे गहरी श्रद्धा रख सकते हैं, और रखना आवश्यक है। जब हम उसकी अगूढ़ता, रहस्यमयता, और अबोधगम्यता पर विचार करते हैं, तो हमें विस्मय से उठ खड़े हो जाना आवश्यक है। जब हम उसके अथाह प्रताप पर मनन और चिन्तन करते हैं, तो हमें उसकी स्तुति करना, उससे प्रेम रखना, और विस्मित हो जाना आवश्यक है। और हमें उचित दीनता धारण कर लेना आवश्यक है जब हम यह समझ जाते हैं कि हम उसकी तुलना में कितने हलके और खोखले हैं! अनेक वर्ष पूर्व, जोशिय्याह कोन्डर ने इस विचार को इस तरह से अपने शब्दों में व्यक्त किया था:

> परन्तु उसके नाम के ऊँचे ऊँचे भेद
> उसके प्राणियों की पहुँच से बाहर हैं;
> पिता को केवल (महिमामय दावा);
> पुत्र ही समझ सकता है।
> हे परमेश्वर के मेम्ने, तू ही योग्य है,
> कि हर एक घुटना तेरे आगे झुक जाए!

टिप्पणी

1. जिस शब्द का अनुवाद, ''प्रगट किया'' किया गया है, मूल यूनानी भाषा में इसका अर्थ, ''तक पहुँचाया'' है। बाइबल के किसी भी स्थल का सावधानीपूर्वक अर्थ निकालने के लिए हम हिन्दी में 'अर्थ–निरूपण' शब्द का प्रयोग करते हैं, जबकि अंग्रेजी में इसके लिए *एक्सीजिसिस* शब्द का प्रयोग किया जाता है, *एक्सीजिसिस* शब्द का मूल भी यही यूनानी क्रिया है। इसका अर्थ है किसी चीज़, या व्यक्ति (इस स्थल में व्यक्ति) के विषय में उसकी विषयवस्तु या सच्चाई को प्रगट करना, सामने लाना, या व्यक्त करना।

–14–

उसका सिद्ध पूर्वज्ञान

पृथ्वी के सारे कुलों में से मैं ने
केवल तुम्हीं पर मन लगाया है।

– आमोस 3:2

परमेश्वर इस पद में इस्राएल से बात कर रहा है। यह स्पष्ट है कि इस पद के सामान्य अर्थ में परमेश्वर इतिहास की सभी जातियों और राष्ट्रों के विषय में जानता है और उन पर मन लगाता है, इसलिए मन लगाने का यहाँ पर एक गहरा अर्थ होना अवश्य है। पुराना नियम में, 'जानना'[1] (मन लगाना) का इब्रानी शब्द अक्सर एक आत्मीय ज्ञान (जैसे आदम ने हव्वा को जाना/हवा के पास गया), व्यक्तिगत रूप से शामिल होना, और चुनाव (यहाँ पर, परमेश्वर के द्वारा इस्राएल को चुना जाना) के अर्थ में प्रयोग में लाया जाता है। इब्रानी में मिश्रित शब्द, जैसे *पूर्वज्ञान* (पहले से जान लेना), या *पूर्वनिर्धारण* (पहले से ठहराना), नहीं पाए जाते, परन्तु यूनानी, लैटिन, अंग्रेजी और हिन्दी में इन शब्दों के लिए स्थान है।

पूर्वज्ञान शब्द बाइबल के सन्दर्भ में 'पहले से जान लेना' से भी अधिक गहरा अर्थ रखता है। यदि परमेश्वर सर्वाधिकारी और सर्वोच्च शासक नहीं होता, तो वह सुनिश्चित नहीं रहता कि आगे क्या होने वाला है। परन्तु वह सर्वाधिकारी और सर्वोच्च शासक है। वह जानता है कि आगे क्या होने वाला है क्योंकि यह उसकी इच्छा और योजना का एक हिस्सा है। नया नियम में, परमेश्वर का पूर्वज्ञान या उसकी पूर्वयोजना प्रभु यीशु मसीह, इस्राएल, और विश्वासियों से सम्बन्धित है।

हमारे उद्धारकर्ता के बारे में, हम पवित्रशास्त्र में पढ़ते हैं, ''उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो [2]तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला'' (प्रेरित 2:23); और ''उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहले ही से जाना गया था, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिए प्रगट हुआ'' (1 पतरस 1:20)।

मसीह को परमेश्वर ने किस अर्थ में पहले से जाना था[2]? क्या सिर्फ इतनी सी बात है कि परमेश्वर को पहले से यह मालूम था कि मसीह क्या करेगा, या फिर परमेश्वर ने उसे पहले से जान कर यह योजना बनाई और तय किया कि प्रभु यीशु क्या करेगा? निश्चय ही यह बाद वाला अर्थ सही है।

इस्राएल के सम्बन्ध में, पौलुस लिखता है, ''परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उस ने पहिले ही से जाना'' (रोमियों 11:2)। यहाँ पर ईश्वरीय पूर्वज्ञान इस्राएल की आज्ञाकारिता के विषय में पहले से जानने[3] पर ही आधारित नहीं था क्योंकि इस्राएल आज्ञाकारी नहीं था! बल्कि, परमेश्वर का पूर्वज्ञान, उसके द्वारा उसके सर्वाधिकार का प्रयोग करते हुए अपनी इच्छा से इस्राएल को पृथ्वी पर अपनी प्रजा के रूप में किया गया चुनाव था।

अन्तिम बात, विश्वासियों के सम्बन्ध में, पवित्रशास्त्र में लिखा है, ''जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे'' (रोमियों 8:29); और ''परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार . . . चुने गए हैं'' (1 पतरस 1:2)।

इन अन्तिम दो पदों में परमेश्वर द्वारा पापियों को चुने जाने के सम्बन्ध में, दो अलग अलग व्याख्याएं दी जाती हैं। एक व्याख्या यह है कि आदि में परमेश्वर ने कुछ व्यक्तियों को इस अर्थ में जाना या उन पर मन लगाया कि उसने अपने सर्वाधिकार और सर्वोच्च सत्ता का प्रयोग करते हुए उन्हें आशीष देने का निर्णय लिया। दूसरी व्याख्या यह है कि परमेश्वर पहले से ही उन लोगों को जानता था जो मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मान कर उस पर विश्वास लाएंगे, और उन्हें चुने जाने का आधार उसका यही पूर्वज्ञान था। पहली व्याख्या उद्धार के विषय में उसके सर्वाधिकार और सर्वोच्च सत्ता पर जोर देती है, यद्यपि इसमें व्यक्ति द्वारा सुसमाचार की बुलाहट का प्रत्युत्तर दिए जाने की बात को अनदेखा नहीं किया गया है। दूसरी व्याख्या लोगों के उत्तरदायित्व पर जोर देती है और परमेश्वर द्वारा कुछ व्यक्तियों को चुने जाने का आधार उनके मनफिराव और विश्वास को बनाती है।

हम जिस भी व्याख्या को बाइबल आधारित व्याख्या मानें, हमें दो सच्चाइयों के बीच संतुलन कायम रखना है। पहला, परमेश्वर सर्वाधिकारी सर्वसत्ताक प्रभु है, और वह जिसे चाहे उसे चुन सकता है, उसका चुनाव चुने गए व्यक्ति की योग्यता पर किसी भी तरह से आधारित नहीं होता। दूसरा, परमेश्वर जगत में सभी को उद्धार का एक नेकनियत प्रस्ताव देता है, और लोग तब तक उद्धार नहीं पा सकते जब तक वे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास नहीं

लाते। हम इन दो सच्चाइयों के बीच में इस जीवन भर संतुलन नहीं बैठा सकते, परन्तु यह अनिवार्य है कि हम इन दोनों के बीच संतुलन बनाए रखें।

यह सच्चाई कि परमेश्वर हमारे अनन्त कल्याण के विषय में पहले से ही जानता है हमारे विचारों में प्रभु के विषय में महान बातें उत्पन्न करें और उसकी स्तुति करने के लिए प्रेरित करें। इन बातों पर मनन करने से हमारे मनों में विस्मय उत्पन्न हो कि आखिर वह हम पर अनुग्रह और कृपादृष्टि क्यों करता है। इस बात की ओर ध्यान दे कर हम अंहकार से छुटकारा पा सकें कि इस कृपादृष्टि का कारण हमारी कोई अच्छाई नहीं है।

एक अज्ञात लेखक ने लिखा है:

मैंने प्रभु को ढूँढ़ा, और कुछ समय बाद मैंने जाना
कि मुझे ढूँढ कर, उसी ने मेरे प्राण को उभारा कि मैं उसे ढूंढ़ू,
यह नहीं कि मैंने उसे पाया, पर हे सच्चे उद्धारकर्ता,
नहीं, मैं उसके द्वारा पाया गया।

मैंने ढूंढा, मैं चला, मैंने प्रेम किया, परन्तु हे सम्पूर्ण
मेरा प्रेम ही एकमात्र उत्तर है, तेरे प्रति!
क्योंकि मेरे प्राण के साथ तू बहुत पहले से था;
तूने हमेशा से ही मुझ से प्रेम रखा है।

टिप्पणियाँ

1. इब्रानी में, *यादाह।*
2. यूनानी शब्द *प्रोगिनोस्को* का शाब्दिक अर्थ ''पहले से जान लेना'' *(एनएएसबी)* है, परन्तु *केजेवी, एनकेजेवी,* और चार्ल्स बी. विलियम ने इसका सही अर्थ समझते हुए इसका अनुवाद, ''पहले से ठहराना'' के अर्थ में किया है।
3. सिर्फ जान लेना कि आगे क्या होगा और आगे की योजना का निर्धारण न करना *प्रिसाइंस* कहलाता है (*''प्रिनो''* का लैटिन)।

–15–

सदा एक सा

क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं।

– मलाकी 3:6

परमेश्वर अपरिवर्तनीय है। वह अपने अस्तित्व, अपने गुणों, या अपने उद्देश्यों में नहीं बदलता। वह न बदलने वाला परमेश्वर है, वह आज, कल, और सदा एक सा है।

भजन 102:24 में, मसीह ने क्रूस पर से प्रार्थना की, ''हे मेरे ईश्वर, मुझे आधी आयु में न उठा ले।'' इस पर परमेश्वर पिता ने उत्तर दिया,

> तेरे वर्ष पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे!
> आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली,
> और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है।
> वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा;
> और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा।
> तू उसको वस्त्र की नाईं बदलेगा,
> और वह तो बदल जाएगा;
> परन्तु तू वही है,
> और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का (पद 24से27)।

''परन्तु तू वही है,'' ये शब्द प्रभु की अपरिवर्तनीयता को दर्शाते हैं। सृष्टि बदल जाएगी, परन्तु वह किसी परिवर्तन के आधीन नहीं है।

एक अन्य पद जो परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता का वर्णन करता है, वह है,''ज्योतियों के पिता . . . जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है...'' (याकूब 1:17)। जे. एन. डार्बी के द्वारा यशायाह 37:16 में ''वही'' का प्रयोग परमेश्वर के नाम के लिए किया गया है: ''तू, वही है, आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया।'' यही नाम यशायाह 41:4 में भी पाया जाता है।

फिर भी, जब यह सत्य है कि परमेश्वर अपने अस्तित्व में बदलता नहीं है, पर वह अलग अलग तरीकों का उपयोग अवश्य ही करता है। मानव इतिहास में, उसने लोगों को अलग–अलग परिस्थितियों में परखा है, निर्दोषिता के विषय में, विवेक के विषय, प्रतिज्ञा के विषय, व्यवस्था के विषय, या अनुग्रह के विषय में। यद्यपि उद्धार का मार्ग हमेशा से ही एक ही रहा है, अर्थात्, अनुग्रह से विश्वास के द्वारा, पर अलग अलग कालखण्डों में, परमेश्वर ने पाप और उत्तरदायित्व के विषय में लोगों को परखा है। परन्तु इससे उसकी अपरिवर्तनीयता प्रभावित नहीं होती।

और न ही , पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के विषय में प्रयुक्त शब्द 'फिरकर' या 'इच्छा बदले' या 'पछताया,' उसकी अपरिवर्तनीयता पर असर डालते हैं। यहाँ पर हमारा सामना प्रतीत होने वाले एक विरोधाभास से होता है। एक ओर हम यह पढ़ते हैं कि ''ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले,और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले'' (गिनती 23:19); और ''जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है'' (1 शमू. 15:29)। और दूसरी ओर हम यह भी पढ़ते हैं कि ''और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया'' (उत्प. 6:6) और ''मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूँ'' (1 शमू. 15:11)। यह कैसे सम्भव है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है तौभी वह पछताता और मन बदलता है? इसका सीधा सीधा उत्तर यह है: उसके स्वभाव की यह विशेषता है कि, यह आवश्यक है कि वह आज्ञाकारिता को प्रतिफल और अनाज्ञाकारिता को दण्ड दे। जब तक उसके बनाए हुए प्राणी उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, वह उन्हें आशीष देता है। परन्तु यदि वे पापमय जीवन बिताते हैं, तो उसके पास उन्हें अनुशासित करने के सिवाय और कोई दूसरा विकल्प नहीं रहता। इसलिए, परमेश्वर का 'मन बदलना' ऐसे लोगों के प्रति उसकी योजना और उद्देश्यों में परिवर्तन लाना होता है जिनका चरित्र और आचरण बदल जाता है। यह हमें ''पीछे मुड़ने'' की तरह लगता है; इसलिए, हम इसे मनुष्य की सीमित समझ की भाषा में ''मन बदलना'' कहने लगते हैं। निश्चय ही इसका अर्थ यह नहीं है कि लोगों में आए परिवर्तन से परमेश्वर स्तब्ध रह जाता है या फिर वह पछता कर, कुढ़ कर, या चिड़चिड़ा कर ऐसी प्रतिक्रिया देता है। इसका सीधा सीधा अर्थ यह है कि हम जिस बात को मन बदलना या पछताना समझते हैं, वह परमेश्वर के लिए उसके चरित्र के अनुरूप व्यवहार करने के लिए आवश्यक है।

हमें परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता के सिद्धान्त को एक नीरस सिद्धान्त मात्र नहीं समझना चाहिए। इसकी सच्चाई हमारे प्राणों को अपार शान्ति देने वाली सच्चाई है। हम परिवर्तन और सड़ाहट की ओर बढ़ रहे संसार में जीते हैं। ऐसे समय में न बदलने वाला परमेश्वर का

होना एक अद्‌भुत बात है। हम स्वयं दिन प्रतिदिन बदलते जाते हैं, परन्तु हम एक ऐसे व्यक्ति की ओर ताक सकते हैं जो हमेशा एक सा है। हम हमारे साथ उसके सब व्यवहारों में, उससे एक न बदलने वाले और विश्वासयोग्य परमेश्वर के रूप में आशा रख सकते हैं।

भले ही अपरिवर्तनीयता परमेश्वर का एक विशिष्ट गुण है, तौभी हमें उसके इस गुण का अनुसरण उस सीमा तक करना चाहिये जितना विश्वासियों के द्वारा किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, हमें बार–बार मिजाज बदले वाला, उदासीन (मूडी), या अस्थिर नहीं होना है। ऐसा न हो कि हम परदेशियों के साथ तो भलाई, अनुग्रह, अच्छा व्यवहार करें, परन्तु अपने परिवार के साथ बुरा व्यवहार करें!

हमें न सिर्फ बदलाव की इच्छा रखनी चाहिए बल्कि इसके लिए उत्सुक भी रहना चाहिए यदि यह उन्नति या सुधार के लिए आवश्यक हो। दूसरी ओर, हमें सही बात पर अड़े रहने के मामले में अपरिवर्तनीय रहना है।

हेनरी एफ. लायट के द्वारा लिखित गीतसुप्रसिद्ध भजन ''रह मेरे साथ दिन ढला जाता है'' में परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता और शेष सब चीज़ों की चंचलता के बीच में अन्तर किया गया है:

> वेग बीतते हैं इस लोक के थोड़े दिन,
> आनन्द भी स्थिर न रहता तेरे बिन;
> सब ठौर विकार देख पड़ता और विनाश
> हे अटल प्रभु, रह तू मेरे पास!

भाग दो

परमेश्वर के
वे गुण
जिन्हें वह दूसरों के साथ बाँटता है

जैसे बच्चे अपने अपने पिताओं की नकल करते हैं, तुम भी,
परमेश्वर के बच्चों के समान अपने स्वर्गीय पिता की नकल करो।

– इफिसियों 5:1
(जे.बी.फिलिप्स के अनुवाद के अनुसार)

–16–

परमेश्वर आत्मा है

परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

– यूहन्ना 4:24

जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर आत्मा है, तो इसका अर्थ यह है कि वह एक आत्मिक अस्तित्व है जिसका कोई भौतिक शरीर नहीं है। हम व्यक्तियों को देह से ही जोड़ कर देखने के ऐसे आदी हो चुके हैं कि किसी देहरहित व्यक्ति की कल्पना कर पाना हमारे लिए कठिन होता है। परन्तु स्वर्गदूतों की देह नहीं होती, सिवाय कुछ अवसरों पर, जब वे मानव के भेष में प्रगट होते हैं। और हम भी, कम से कम धर्मियों के पुनरुत्थान के समय तक, मृत्यु के बाद बिना देह के रहेंगे (2 कुरि. 5:8; फिलि. 1:23)।

यह तथ्य कि परमेश्वर आत्मा है इस बात का इंकार नहीं करता कि उसका कोई व्यक्तित्व नहीं है। वह बुद्धि, भावनाओं, और इच्छाओं वाला व्यक्ति है – ये तीनों व्यक्तित्व के घटक हैं।

चूंकि परमेश्वर आत्मा है, उसे नश्वर आँखों ने देखा नहीं जा सकता (कुलु. 1:15; 1 तीमु. 6:16)। किन्तु, पुराना नियम समय में, उसने अपने आप को शेकेनाह में अर्थात्, महिमा के बादल में प्रगट किया था। उसने अपने आप को यहोवा के दूत के रूप में भी प्रगट किया था, सामान्यत: ऐसा माना जाता है कि यहोवा का दूत प्रभु यीशु मसीह का देहधारण से पहले का एक प्रगटीकरण था।

नया नियम में, परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में लोगों की दृष्टि में दृश्यमान बन गया। इसलिए, पवित्रशास्त्र कहता है, ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया'' (यूहन्ना 1:18)। और बाद में प्रभु यीशु ने यह भी कहा, ''जिस ने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है'' (यूहन्ना 14:9)। जब कभी परमेश्वर लोगों के सामने प्रगट होता है, तब उसकी महिमा ढांप दी जाती है। छुटकारा न पाई हुई मानवजाति के लिए यह असम्भव है कि परमेश्वर की खुली महिमा को देख कर जीवित

बच जाए। याकूब स्तब्ध रह गया था कि वह परमेश्वर को देखने के बाद भी जीवित बच गया (उत्प. 32:30)। और तौभी उद्धारकर्ता ने प्रतिज्ञा की है कि जिनके मन शुद्ध हैं, वे परमेश्वर को देखेंगे (मत्ती 5:8)।

यहाँ पर हमारे सामने एक ऐसा प्रश्न खड़ा हो जाता है जिसे यूं ही टाला नहीं जा सकता, यदि परमेश्वर आत्मा है और इसलिए उसे देखा नहीं जा सकता, तो क्या स्वर्ग में हम परमेश्वर को देखेंगे? इसका सबसे सरल उत्तर यह है कि यीशु परमेश्वर है, और हम निश्चय ही स्वर्ग में परमेश्वर को देखेंगे।

परन्तु शायद इससे भी ज्यादा वहाँ कुछ होगा। स्वर्ग में इस पार्थिव (भौतिक) देह की सीमायें अलग कर दी जायेंगी। हमें ऐसी शक्तियाँ दी जाएंगी, जिनकी हम अभी कल्पना भी नहीं कर सकते। यद्यपि हम इन नश्वर आँखों से परमेश्वर को नहीं देख सकते, तो क्या यह सम्भव नहीं है कि, जैसे एक युवा ने कहा है, स्वर्ग में हमारे पास इनसे भी बड़ी आँखें होंगी? हम परमेश्वर की इस परम प्रतिज्ञा पर दावा करने में गलत नहीं होंगे: ''धन्य है वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे'' (मत्ती 5:8)।

इस सच्चाई में, कि परमेश्वर आत्मा है, हमारे लिए कुछ व्यावहारिक शिक्षाएं पाई जाती हैं। सामरी स्त्री से बात करते हुए, प्रभु यीशु ने कहा था, ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें'' (यूह. 4:24)। आराधना के बारे में सामरी स्त्री के विचार एक दृश्यमान पर्वत (गिरिज्जीम) पर एक स्पर्शनीय मन्दिर में भौतिक सामग्रियों का प्रयोग कर व्यक्त की जाने वाली भक्ति पर केन्द्रित थे। प्रभु यीशु ने उसे बताया कि ''वह समय आता है, वरन् अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है'' (यूह. 4:23)।

सच्ची आराधना पृथ्वी के किसी स्थान या भवन पर केन्द्रित नहीं है। सच्ची आराधना का कलाकृतियों वाली रंग-बिरंगी खिड़कियों, पुरोहितीय पोशाकों, मोमबत्तियों, लिखित आराधना-विधियों, या धूप जलाने से कोई संबंध नहीं है। बल्कि, सच्ची आराधना में हम विश्वास के द्वारा पृथ्वी को पार कर स्वर्ग में पहुँच जाते हैं, और वहाँ परमेश्वर की उपस्थिति में, इस कारण कि जो कुछ वह है और जो कुछ उसने हमारे लिए किया है, हम अपने प्राणों को धन्यवाद, स्तुति, और श्रद्धा के साथ प्रभु के सामने उण्डेल देते हैं।

इस सच्चाई को जान कर, कि परमेश्वर आत्मा है और इसलिए अदृश्य है, हमारा एक और उत्तरदायित्व उभर कर सामने आता है। जब हम यूहन्ना 1:18 और 1 यूहन्ना 4:12 को

पढ़ते हैं, तो हम अपने इस कर्तव्य के बारे में जान सकते हैं। यूहन्ना 1:18 में लिखा है, ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसको प्रगट किया।'' दूसरे शब्दों में, जब मसीह इस पृथ्वी पर था, तो उसने संसार के सामने प्रगट किया कि परमेश्वर क्या है। उसके बाद 1 यूहन्ना 4:12 में लिखा है, ''परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।'' इन बातों के पीछे यह विचार है कि अब यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम संसार को दिखाएं कि परमेश्वर क्या है। उद्धारकर्ता अब इस जगत में देहरूप में नहीं है। परन्तु जब हम एक दूसरे से प्रेम रखते हैं, तो परमेश्वर हमारे भीतर वास करता है, और संसार अदृश्य परमेश्वर का एक व्यावहारिक प्रदर्शन देख पाता है। हमें एक अद्‌भुत जिम्मेदारी दी गई है:

हे परमेश्वर, तू आत्मा है, महिमा और वैभव से भरा,
हम तुझसे प्रेम करते हैं, प्रभु, तुझे हम नहीं देख सकते।
तेरे शाही सिंहासन के सामने, हम तेरे अनुग्रह के विजय–स्मारक,
आत्मा और सच्चाई से तेरी आराधना करते हैं।

टिप्पणी

1. बाइबल के कुछ विद्वानों का ऐसा मानना है कि मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद और महिमा की देह पाने से पहले, मसीहियों को एक मध्यवर्ती देह दी जाएगी।

–17–

उसका अद्‌भुत प्रेम

परमेश्वर प्रेम है।

– 1 यूहन्ना 4:16

परमेश्वर का प्रेम दूसरों के प्रति उसके स्नेहिल अनुराग और उनकी भलाई के प्रति उसकी गहरी चिन्ता को कहा जा सकता है। इसमें एक सशक्त भावनात्मक लगाव और एक ऐसा समर्पण पाया जाता है जो देने के द्वारा अपने आप को व्यक्त करता है। इसलिए, पवित्रशास्त्र में लिखा है, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया'' (यूहन्ना 3:16), और ''मसीह ने . . . कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (इफि. 5:25)। जब हम पवित्रशास्त्र में यह पढ़ते हैं, ''परमेश्वर प्रेम है,'' तो यहाँ पर हम एक चित्रण को पढ़ रहे हैं, परिभाषा नहीं। हम प्रेम की आराधना नहीं करते, परन्तु हम ऐसे परमेश्वर की आराधना करते हैं, जो प्रेम है।

जे.आई. पैकर ने परमेश्वर के प्रेम को इस तरह से परिभाषित किया है: ''पापी व्यक्तियों के प्रति उसकी भलाई का एक व्यवहार, जिसके तहत, वह स्वयं अपने आप को उनके साथ उनका कल्याण करने के लिए जोड़ता है, और इसलिए उसने अपने पुत्र को उनके उद्धारकर्ता होने के लिए दे दिया, और अब वह उन्हें एक वाचा के सम्बन्ध में शामिल करता है कि वे उसे पहचानें और उसका आनन्द लें।''[1]

परन्तु हम चाहे इसे परिभाषित करने का जितना भी प्रयास कर लें, हमें हमेशा एक बेहतर और उन्नत शब्दावली की आवश्यकता बनी रहेगी। हमारे वर्तमान शब्दकोष अपर्याप्त हैं। इनमें गुण–वाचक शब्द (जैसे सामान्य, तुलनात्मक, और उत्तमता सूचक विशेषण आदि) पर्याप्त रूप में नहीं पाये जाते। हमारी भाषाओं में शब्दों का कंगालपन पाया जाता है। इनमें पाये जाने वाले विशिष्ठ शब्द संकुचित हैं। इससे ज्यादा कुछ कहने को भी तो हमारे पास कुछ भी नहीं है; तब हमें यह भी मान लेना ज़रूरी है, ''आधी बात तो अभी बताई ही नहीं गई है।'' यह विषय तो सभी मानवीय भाषाओं को बुरी तरह से थका देता है। आइये हम एक ऐसे विषय

पर मनन करना आरंभ करें, जो कभी भी खत्म नहीं हो सकता। परमेश्वर का प्रेम अनन्त है, एकमात्र प्रेम जो अनादि से है। यह युगों से अटल और अनन्त है। हमारा मस्तिष्क एक ऐसे प्रेम को समझ पाने के प्रयास में फटने लगता है जो सतत् और निरन्तर बना रहता है।

इसे मापा नहीं जा सकता। इसकी ऊँचाई, गहराई, लम्बाई, और चौड़ाई असीमित हैं। ऐसे अतिव्ययी प्रेम को हम कहीं नहीं पा सकते। कवियों ने सृष्टि के महानतम विस्तारों से इसकी तुलना की है, परन्तु उनके शब्द हमेशा प्रेम के विचार के भार से दब कर टूटते हुए प्रतीत होते हैं।

हमारे प्रति उसका प्रेम अकारण और अप्रेरित है। महान परमेश्वर को हममें ऐसा कुछ भी प्रेम करने योग्य गुण दिखाई नहीं दिया कि हम उसके स्नेह को आकर्षित कर सकें, तौभी उसने हमसे इतना प्रेम किया। हमारा परमेश्वर ऐसा ही है।

दूसरों के प्रति हमारा प्रेम अक्सर अज्ञानता पर आधारित होता है। हम लोगों से इसलिए प्रेम रखते हैं क्योंकि हम वास्तव में यह नहीं जानते कि वे कैसे हैं। हम जितना अधिक उन्हें जानने लगते हैं, उतना अधिक हमें उनकी कमजोरियों और त्रुटियों के बारे में पता चलता जाता है, और फिर वे हमें कम प्रेम करने योग्य लगने लगते हैं। परन्तु परमेश्वर हमसे प्रेम रखता है, यद्यपि वह आरम्भ से लेकर अन्त तक एक एक बात जानता है कि हमने क्या किया है, और आगे क्या करने वाले हैं। उसकी सर्वज्ञता ने (हमारे प्रति) उसके प्रेम को निष्प्रभावित नहीं किया!

परन्तु संसार में इतने सारे लोग हैं – पाँच अरब (बिलियन) से भी अधिक। क्या सर्वाधिकारी सर्वोच्च परमेश्वर सबसे व्यक्तिगत रूप से प्रेम रख सकता है? जैसा कि एक कवि ने प्रश्न किया,

> इतने सारे लोगों के बीच में, क्या वह हमारी चिन्ता कर सकता है?
> क्या विशेष प्रेम हर स्थान पर उपलब्ध हो सकता है?

जी हाँ, परमेश्वर के लिये *''नाचीज़ इंसानों''* जैसी कोई बात नहीं है। उसकी दृष्टि में कोई भी महत्वहीन नहीं है। उसका अनुराग इस ग्रह के प्रत्येक व्यक्ति की ओर बहता है।

ऐसा प्रेम अतुल्य है। अनेक लोगों ने एक समर्पित माँ के प्रेम का अनुभव किया है। या फिर एक स्वार्थहीन जीवनसाथी के विश्वासप्रेम का भी। दाऊद ने योनातान के प्रेम का अनुभव किया था। और प्रभु यीशु ने यूहन्ना के प्रेम का अनुभव किया था। परन्तु किसी ने भी

कभी भी ऐसे प्रेम का अनुभव नहीं किया है जिसकी तुलना परमेश्वर के प्रेम से की जा सके। जैसा कि एक गीत हमें यह स्मरण दिलाता है, ''करता हूँ मैं (प्रभु यीशु) तेरी चिन्ता, तू क्यों चिन्ता करता है?''

रोमियों 8 वें अध्याय में, प्रेरित पौलुस पूरे विश्व की खाक छान मारता है कि उसे कोई ऐसी चीज़ मिले जो विश्वासियों को परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सके, परन्तु उसके हाथ कुछ नहीं लगता। न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न सामर्थ्य, न वर्तमान, न भविष्य, न ऊँचाई, न गहराई, और न कोई ऐसी सृजित वस्तु विश्वासी को परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है।

यह जान पाना क्या ही अद्‌भुत है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर आज मुझसे और आप से इतना प्रेम करता है, कि उससे अधिक प्रेम कर पाना कभी सम्भव ही नहीं है। यही प्रेम वह अपने अद्वितीय पुत्र पर भी बरसाता है, और इस प्रेम को उसने किसी के लिए कभी रोका नहीं है, और न ही उसने इससे कभी किसी को अलग किया है।

एक ऐसे संसार में, जहाँ लगातार परिवर्तन होते रहते हैं, किसी ऐसी बात को होना जो अपरिवर्तनीय है, एक शान्ति की बात है, और यह न बदलने वाली बात है – परमेश्वर का प्रेम। हमारा प्रेम चक्राकार घूमता है। यह उतार चढ़ाव वाला एक भावनात्मक झूला है। हमारा प्रभु ऐसा नहीं है। उसका प्रेम न तो कभी थकता, और न ही कभी बदलता है।

और यह एक शुद्ध प्रेम है, स्वार्थ, अधर्मी समझौता, या गलत अभिप्रायों से बिल्कुल मुक्त। यह बेदाग है और इसमें अशुद्धता का जरा भी अंश नहीं है।

परमेश्वर के अनुग्रह के समान ही, उसका प्रेम भी सेंतमेंत है। इसके लिए हमें सदा धन्यवादी बने रहना चाहिए क्योंकि हम दरिद्र, भिखारी, और दिवालिया पापी हैं। और यदि हमारे पास संसार भर का सारा धन भी आ जाए, तब भी हम ऐसे अमूल्य प्रेम के बदले पहली किस्त भी नहीं चुका पाएंगे।

यह एक ऐसा प्रेम है जो अद्‌भुत रीति से पक्षपातमुक्त है। यह धर्मी और अधर्मी दोनों पर ही सूर्य चमकाता है। यह बिना पक्षपात के सब लोगों के लिए वर्षा भेजता है।

और शायद इसके बारे में सबसे अद्‌भुत बात यह है कि यह त्याग करने वाला प्रेम है। इस प्रेम ने परमेश्वर के पवित्र पुत्र को कलवरी तक ले जा कर त्याग का सबसे बड़ा प्रदर्शन किया। एच.रोस्सियर ने इसे इस तरह से लिखा है:

प्रभु, तेरा प्रेम मृत्यु तक जा सकता है,
लज्जा और हानि की एक मृत्यु,
ताकि हर शत्रु पर हमें विजय मिले,
और उस बलवान व्यक्ति का बल तोड़ा जाए।

क्रूस पर हम एक ऐसे प्रेम को देखते हैं जो मृत्यु से भी शक्तिशाली है, जिस पर परमेश्वर का प्रकोप भी प्रबल नहीं हो सका।

यह अद्वितीय प्रेम ज्ञान से ऊँचा है, और मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ इसके सामने तुच्छ हैं। यह उच्च कोटि का और अतुलनीय है, यह सारे अनुरागों का प्रखर (सबसे ऊँचा) है।

हम प्रभु के प्रेम का वर्णन करने को एक बेहतर शब्दकोष के लिए चाहे सारी पृथ्वी की खाक छान लें, तौभी यह व्यर्थ ही होगा। जब तक हम स्वर्ग में पहुँच कर देहधारी प्रेम को निहार न लेंगे, तब तक हम पूरी बुद्धि के साथ प्रभु यीशु में पाए जाने वाले परमेश्वर के प्रेम का स्पष्ट दर्शन और समझ हासिल नहीं कर पाएंगे। हे प्रभु, वह दिन शीघ्र आए, हे धन्य प्रभु यीशु!

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इसलिए पवित्रशास्त्र के लेखक अक्सर परमेश्वर के इस मनभावन गुण का बखान करते हैं:

यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया,
इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे ...
इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है (व्य.वि.7:7–8)।

मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ,
इस कारण मैंने तुझ से अपनी करुणा बनाए रखी है (यिर्म. 31:3)।

वह अपने प्रेम के कारण चुपका रहेगा,
फिर ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा (सप. 3:17)।

जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा,
मेरे प्रेम में बने रहो (यूह. 15:9)।

पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है,
उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है (रोमि. 5:5)।

परमेश्वर अपने प्रेम की भलाई हम पर इस रीति से प्रगट करता है,
कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरा (रोमि. 5:8)।

परमेश्वर के पुत्र . . . जिस ने मुझ से प्रेम किया,
और मेरे लिए अपने आप को दे दिया (गला. 2:20)।

अपने उस बड़े प्रेम के कारण , जिस से उस ने हम से प्रेम किया (इफि. 2:4)।

हमने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए (1 यूह. 3:16)।

जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं, प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा (1 यूह. 4:9–10)।

जो हमसे प्रेम रखता है, और जिस ने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया (प्रका. 1:5)।

परमेश्वर का प्रेम एक ऐसा विषय है जो कभी समाप्त नहीं हो सकता। किसी भी मनुष्य का मस्तिष्क कभी भी इसका थाह नहीं पा सकेगा। एक कवि ने बिल्कुल ठीक कहा, कि यदि सारा सागर स्याही होता, और आकाश कागज का एक टुकड़ा, घास की हर एक पत्ती कलम, और हर एक व्यक्ति एक लेखक – ''परमेश्वर के प्रेम के विषय में लिखना, सागर को सुखा देता, और आकाश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की जगह भी कम पड़ जाती।''

प्रभु का प्रेम हमें उसके विषय में यह सोचने की हिम्मत देता है कि वह हमारा मित्र है – एक ऐसा मित्र जो भाई से भी अधिक मेल रखता है – एक ऐसा मित्र जो सब समयों में प्रेम रखता है – चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र। यीशु क्या ही प्यारा मित्र!

इससे बढ़कर और कोई विषय हमारे हृदय को उसकी आराधना के लिए बड़े विचार नहीं दे सकता। यह विचार भावविभोर कर देता है कि परमेश्वर हम में से हर एक से व्यक्तिगत रूप से, और आत्मिक रूप से प्रेम करता है, और यह भी कि उसने अपने प्रिय पुत्र को भेज दिया कि वह कलवरी के क्रूस पर हमारे बदले में बलिदान हो कर मर जाए। यह अद्‌भुत है कि उसका प्रेम तब तक पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होगा जब तक वह अनन्तकाल के लिए हम सब को स्वर्ग में न ले जाए।

उन सारे भजनों और कविताओं की ओर ध्यान दें जो परमेश्वर के प्रेम की प्रशंसा करते हुए रचे गए हैं, ऐसी सारी पुस्तकों की ओर ध्यान दें, ऐसे सारे उपदेशों की ओर ध्यान दें। और

हम पाएंगे कि ये सब भी अपर्याप्त हैं। परमेश्वर की इच्छा यह है कि उसका प्रेम हमारे जीवनों में प्रगट हो! आज संसार प्रेम के अभाव में तरस रहा है, और सिर्फ मसीही लोग इस आवश्यकता को पूरी कर सकते हैं।

तो फिर हम सिद्धताओं के इस सर्वाधिक बहुमूल्य रत्न में परमेश्वर का अनुसरण किस प्रक़ार से कर सकते हैं?

इसके लिये प्रेरित यूहन्ना दो तरीके बताता है – अपने संगी विश्वासियों के लिए अपना प्राण देने के लिए तैयार रहना, और अपनी सम्पत्तियों को ऐसे लोगों के साथ बाँटना जो आवश्यकता में हैं (1 यूहन्ना 3:16–17)। परन्तु इसके दूसरे तरीके भी हैं। प्रेम, कार्यों को पूरा करना सुनिश्चित करता है और बिना कहे पूरा कर देता है। प्रेम, गलतियों का हिसाब नहीं रखता। प्रेम, बदले में कुछ पाने की आशा किए बिना ही देता है। जॉन ऑक्ज़नहेम ने इसे इन पंक्तियों में व्यक्त किया है:

> प्रेम देता है, क्षमा करता है, और हद पार कर देता है,
> और सदा उदार हाथों को लिए तैयार रहता है;
> जब तक यह है, तब तक देता रहेगा।
> क्योंकि यह प्रेम का विशेषाधिकार है –
> देना, देना, और देना।[2]

यह सबसे अधिक गिरे–गुजरे व्यक्ति, सबसे छोटे व्यक्ति, और सबसे निचले दर्जे वाले व्यक्ति तक पहुँचता है:

> प्रेम के पहिनावे में एक छोर है
> जो नीचे धूल तक लहराता है।
> यह गली–कूचों के कूड़े तक पहुँचता है,
> और चूंकि यह ऐसा कर सकता है, यह अवश्य ऐसा करता है।
>
> यह पहाड़ों की ऊँचाइयों पर आराम से बैठा नहीं रह सकता,
> यह तराई तक नीचे जाना आवश्यक समझता है;
> क्योंकि यह तब तक संतुष्ट नहीं होता,
> जब तक एक असफल जीवन में ज्योत न जला दे।[3]

हमें आश्चर्य के इस भाव को कभी नहीं खोना चाहिए कि हम पर परमेश्वर का प्रेम हमारी किसी योग्यता के कारण नहीं है, हम उसके प्रेम के ज़रा भी लायक नहीं हैं। हमारे हृदय की भाषा यह हो:

तू मुझसे इतना प्रेम कैसे कर सकता है
तू कितना महान परमेश्वर है
मेरी बुद्धि अंधकारमय है
परन्तु तू मेरे हृदय का सूर्य है।[4]

उसके प्रति हमारा प्रेम अखंडित, आज्ञाकारी, और आराधना के भाव से परिपूर्ण हो। उसे छोड़ और कोई भी दूसरा प्रतिद्वंदी हमारे हृदय के सिंहासन पर उसके साथ विराजमान न होने पाये।

हमें मसीह में अपने भाइयों और बहनों से प्रेम रखना चाहिए, चाहे वे किसी भी कलीसिया–समुदाय या झुण्ड के हों। यूहन्ना जोर देते हुए कहता है कि यदि हम अपने भाई से जिसे हमने देखा है प्रेम नहीं करते, तो हम परमेश्वर से भी जिसे हमने देखा नहीं है प्रेम नहीं कर सकते (1 यूहन्ना 4:20)।

हमें छुटकारा न पाए हुए लोगों से प्रेम रखना है, और निरन्तर उनके लिए प्रार्थना करना है।

मैं भीड़ की ओर वैसे ही देख सकूं जैसा कि मेरे उद्धारकर्ता ने किया
जब तक कि मेरी आँखें आँसुओं से धुंधली न हो जाएं।
भटकती हुई भेड़ों को मैं तरस से देख सकूं,
और उसके प्रेम के कारण उनसे प्रेम रख सकूं।[5]

इस कविता में कवि ने आत्माओं के प्रति बोझ को व्यक्त किया है:

देखता हूँ मनुष्यजाति को आत्माओं की तरह,
विजेताओं को बन्धुओं की तरह, राजाओं को गुलामों की तरह।
उनकी एक उम्मीद को सुनकर जो है खोखले अचम्भे से युक्त,
है दु:ख की बात कि वे दिखावे की चीज़ों में हैं संतुष्ट।

तब फुर्ती से एक असहनीय लालसा
तुरही की पुकार की तरह मुझे में कँपकँपाती है,
इन्हें सब को बचाने को, उनके उद्धार के लिए नाश हो जाने को,
उनके जीवन के लिए मर जाऊं, उन सब के लिए बलिदान किया जाऊं।[6]

यदि हमारे भीतर ऐसी आत्मिक लालसा है, तो इसका अर्थ यह है कि हम कलवरी के प्रेम के और निकट होते जा रहे हैं। डेव हन्ट कहते हैं,

मानवजाति के प्रति परमेश्वर का प्रेम अंतरिक्ष की कोई अव्यक्तिगत भावनाहीन शक्ति नहीं है जो किसी सार्वभौमिक नियम के द्वारा अनवरत रूप से संचालित होती है, परन्तु यह तो स्व–इच्छा की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है। परमेश्वर हममें से हर एक से पूरी ललक के साथ प्रेम रखता है। इस अविश्वसनीय सच्चाई पर विश्वास करने में हमेंअत्यन्त कठिनाई महसूस होती है, इससे भी ज्यादा, इसे समझने में। उसके प्रेम के पात्र होने के लिये हम अपने अंदर झाँककर देखते हैं। तौभी यह बात अधिक शान्तिदायक नहीं होती यदि परमेश्वर हमसे इस कारण प्रेम रखता कि हम इसके लायक हैं या हममें कोई ऐसी बात है जो उसे हमसे प्रेम करने को उभारती है, क्योंकि हम अपने में से उस आकर्षण को खो सकते हैं या इसमें परिवर्तन आ सकता है, और इस तरह से हम परमेश्वर के प्रेम को खो सकते हैं। परन्तु, यह बात अधिक ढ़ाढ़स प्रदान करती है कि वह हमसे इसलिए प्रेम रखता है, *क्योंकि वह अपने आप में ऐसा करने का गुण रखता है* – और इस बात कि परवाह नहीं करता कि हम क्या हैं और कौन हैं। चूंकि परमेश्वर प्रेम है और चूंकि वह नहीं बदलता, हम अनन्तकाल तक के लिए सुरक्षित हैं और हमें इस बात से भय खाने की आवश्यकता नहीं है कि हम उसका प्रेम अपने किसी कार्य के कारण या किसी बात में असफल हो जाने पर खो सकते हैं।[7]

आइरिश गीतकार थॉमस केली इसके बारे में बहुत ही अच्छी तरह से कहते हैं,

''परमेश्वर प्रेम है!'' उसका वचन ऐसा कहता है;यह स्वर्गीय जन्म का समाचार है:
इसे दूर दूर तक फैलाएं और व्यापक रूप से इसका विस्तार करें,
सारी पृथ्वी में इस बात को बताएं कि ''परमेश्वर प्रेम है।''

टिप्पणियाँ

1. जे.आई. पेकर, *नोइंग गॉड,* पृ. 136।
2. जॉन ऑक्सनहेम, 1852–1941। डेसमन्ड डन्करले की अनुमति से।
3. स्त्रोत और लेखक अज्ञात।
4. फेड्रिक डब्ल्यू. फेबर।
5. स्त्रोत और लेखक अज्ञात।
6. एफ.डब्ल्यू.एच.मेयर्स।
7. डेव हन्ट:*ग्लोबल पीस,* 246–48।

–18–

अचम्भित कर देने वाला उसका अनुग्रह

यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है।

– भजन 111:4

परमेश्वर ऐसे लोगों को स्वीकार करता है जो इसके लायक नहीं हैं, बल्कि वास्तव में, जो इसके ठीक विपरीत फल पाने के लायक हैं, परन्तु जो पापी के उद्धारकर्ता पर विश्वास करते हैं। यही अनुग्रह है! यह जगत के निकृष्टतम (सबसे बेकार) के लिए स्वर्ग का सर्वोत्तम (सबसे अच्छा) है। यह मसीह की कीमत के रूप में चुकाया गया परमेश्वर का धन है (***G***od's ***R***iches ***A***t ***C***hrist's ***E***xpense)!

परमेश्वर का अनुग्रह सर्वश्रेष्ठ है। इसका अर्थ यह है कि यह परमेश्वर की सुइच्छा के अनुसार दिया गया है और सबसे उच्च कोटि का है। उसे हम में से किसी को भी बचाने की आवश्यकता नहीं थी। जे.आई. पैकर ने लिखा है, ''केवल तभी जब एक व्यक्ति यह समझ पाता है कि प्रत्येक मनुष्य की नियति का निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि क्या परमेश्वर उसे उसके पापों से उद्धार देना चाहता है अथवा नहीं, और यह भी कि एक भी व्यक्ति के मामले में ऐसा निर्णय लेना परमेश्वर के स्वयं की आवश्यकता नहीं है, तभी एक व्यक्ति बाइबल में दिए गए अनुग्रह के अर्थ को समझ पाता है।''[1]

अनुग्रह किसी पर उसकी योग्यता या गुण के कारण नहीं किया जाता। पापी मनुष्यों में ऐसा कुछ भी नहीं है कि वह परमेश्वर के अनुग्रह को अपनी ओर खींच सके। दूसरी ओर, यदि उनका न्याय किया जाए, तो वे अनन्तकाल के लिए दण्ड के योग्य ठहरेंग। ऐसा भी नहीं है कि पतित मनुष्य में गुण की पूरी तरह से कमी है; बल्कि उन्होंने अपने आप में अवगुणों का ढेर जमा कर रखा है।

अनुग्रह सेंतमेंत में दिया जाने वाला एक वरदान है। इसे खरीदा नहीं जा सकता। इसे अच्छे कार्यों को करने के द्वारा या अच्छे चरित्र के आधार पर कमाया या पाया नहीं जा सकता। किसी कलीसिया का सदस्य बन कर, विधियों का पालन कर, दान दे कर, दस

आज्ञाओं का पालन कर, या अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखने के स्वर्णीम नियम के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को हासिल कर पाने का कोई भी प्रयास व्यर्थ है। यदि हम इसे कमा सकते या अपनी योग्यता से इसे हासिल कर सकते, तो यह एक हक्क होता, अनुग्रह नहीं, जैसा कि पौलुस ने रोमियों 4:4–5 में कहा है, ''काम करने वालो की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है, परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।''

आर्चबिशप टेम्पल ने कहा है, ''मेरे छुटकारे के प्रति मेरा एक ही योगदान है, और वह है–मेरा पाप, जिससे मुझे छुटकारे की आवश्यकता है।''

अनुग्रह बहुतायत में होता है। यह हमारे पापों से अधिक है, यह कलवरी से एक शक्तिशाली ज्वार–भाटा की तरह बह रहा है, यह हर एक के लिए पर्याप्त है, परन्तु यह उन्हीं लोगों पर प्रभावशील होता है जो इसे स्वीकार करते हैं।

क्रूस पर मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए कार्य के कारण परमेश्वर अपना अनुग्रह खोए हुओं को प्रदान कर सकता है। हमारे बदले में मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा, प्रभु यीशु ने ईश्वरीय न्याय की सभी मांगों को पूरा कर दिया, और उस कर्ज को एक ही बार में हमेशा के लिए चुका दिया, जो हम पर हमारे पापों के कारण था। परमेश्वर अब पूर्ण धार्मिकता के साथ न्याय का पूरा मान रखते हुए अधर्मियों को धर्मी ठहरा सकता है, यदि वे विश्वास के द्वारा उसे ग्रहण करते हैं। और जब वे उसे ग्रहण करते हैं, तो वे उसके द्वारा प्रायश्चित के पूर्ण किए गए कार्य की सारी आशीषों का लाभ प्राप्त करते हैं।

यदि पापी मनुष्यों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाए, तो वे ईश्वरीय अनुग्रह को पाना नहीं चाहेंगे। उनके लिये यह सोचना कि वे अपने आप को अपने चरित्र या कार्यों के आधार पर बचा पाने के लायक नहीं हैं, उनके अंहकार को चोटिल करता है। परमेश्वर पर निर्भर न रहते हुए, वे कल्याण और दान–दक्षिणा के कार्यों में लगे रहते हैं। वे सोचते हैं कि कुछ ऐसे कार्य हैं जिन्हें करने के द्वारा वे स्वर्ग जाने की योग्यता हासिल कर सकते हैं। परन्तु जो व्यक्ति हमेशा के लिए परमेश्वर का ऋणी नहीं बनना चाहता वह कभी भी उद्धार नहीं पा सकेगा।

पापी मनुष्य परमेश्वर से सिर्फ यह नहीं चाहते कि वह उन पर अनुग्रह करे; परन्तु वे यह भी नहीं चाहते कि परमेश्वर दूसरों पर अनुग्रह करे। वे उन फरीसियों के समान हैं, जिन्हें प्रभु यीशु ने कहा, ''तुम मनुष्यों के लिये स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न ही उस में प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो'' (मत्ती 23:13)।

परमेश्वर का कोई भी गुण व चरित्र किसी दूसरे गुण व चरित्र से बड़ा नहीं है। उसके सारे के सारे गुण सिद्ध हैं। तौभी परमेश्वर के अनुग्रह ने ईश्वरीय श्रेष्ठताओं की आकाशगंगा में प्रमुखता से विश्वासियों को प्रभावित किया है। काव्यों और गद्यों में, इसे एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उदाहरण के लिए, सैमुएल डेविस ने लिखा है,

> आश्चर्यकर्म करने वाले परमेश्वर! तेरे सारे तरीके
> तेरे ईश्वरीय गुणों का प्रदर्शन करते हैं;
> परन्तु तेरे अनुग्रह की चमकदार महिमा
> अन्य आश्चर्यों से ऊपर चमचमाती है,
> तेरे समान क्षमा करने वाला परमेश्वर कौन है?
> या किसके पास अनुग्रह का ऐसा प्रचुर और सेंतमेत धन है?

परमेश्वर सदा से ही अनुग्रह का परमेश्वर रहा है – पुराना नियम के साथ साथ नया नियम में भी। परन्तु उसके इस चरित्र का यह पहलू मसीह के आगमन पर एक नए और विशेष रूप से प्रगट किया गया।

अनुग्रह एक स्वर्णिम धागा है जो पूरे नया नियम में पिरोया गया है। यह पौलुस के चिरपरिचित अभिवाद – ''अनुग्रह और शान्ति'' का एक अभिन्न अंग है। उसने बार–बार उस अनुग्रह का गुणगान किया है जिसके द्वारा न सिर्फ उसने उद्धार पाया बल्कि एक सेवक के रूप में भी बुलाया गया।

यहाँ पर अनुग्रह का वर्णन करने वाले बाइबल के कुछ प्रमुख पद हैं:

> और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। . . . क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह, पर अनुग्रह (यूहन्ना 1:14,16)।
>
> इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची (यूहन्ना 1:17)।
>
> परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमि. 3:24)।
>
> और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं, वरन् अनुग्रह के आधीन हो (रोमि. 6:14)।

तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ (2 कुरि. 8:9)।

मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; (2 कुरि. 12:9)।

मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता (गला. 2:21)।

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण , ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे (इफि. 2:8–9)।

क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है (तीतुस 2:11)।

अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़े देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें स्थिर और सिद्ध और बलवन्त करेगा (1 पतरस 5:10)।

अनुग्रह का सर्वाधिकार, इसकी सर्वश्रेष्ठता, और सर्वप्रधानता ने ही मसीह में हमें जगत की उत्पत्ति के पहले से चुन लिया। इसी अद्‌भुत अनुग्रह ने परमेश्वर के पुत्र को इस संसार में भेजा कि वह मनुष्य बन कर रहे। इसी अद्‌भुत अनुग्रह ने प्रभु यीशु मसीह को कलवरी के क्रूस पर हमारे बदले में मर जाने के लिए भेजा।

अनुग्रह ने हमें पापों के दण्ड से बचाया – नर्क की अनन्त भयावहता से। अनुग्रह ने हमें पाप के गुलाम बाजार से मोल ले कर छुड़ाया। अनुग्रह ने परमेश्वर के साथ हमारा मेल–मिलाप करवाया। अनुग्रह के द्वारा हम धर्मी ठहराये गये, पवित्र किये गये, और हमें महिमा मिली। अनुग्रह के सिवाय और क्या था जिसने हमें पवित्र आत्मा का स्थायी वासस्थान बनाया, जो हमारी अनन्त सुरक्षा की गारंटी और इस बात का बयाना है कि एक दिन सारी मीरास हमारी होगी?

अचम्भित कर देने वाले अनुग्रह ने हमें परमेश्वर की सन्तान, परमेश्वर के वारिस, और मसीह के साथ संगी–वारिस बनाया। जिस क्षण हम उद्धार पाते हैं, उसी क्षण हम सारी स्वर्गीय आत्मिक आशीषों से आशीषित किए जाते हैं – परमेश्वर के अनुग्रह का अतुलनीय चिन्ह। उसका अनुग्रह तब तक पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होगा जब तक हम मसीह के साथ उसकी महिमा में नहीं आ जाएंगे और उसके धन्य स्वरूप में पूरी तरह से नहीं बदल जाएंगे। इसीलिए जे.एन. डार्बी ने यह प्रश्न किया है,

और क्या ऐसा है कि – मैं तेरे पुत्र के समान बन जाऊंगा?
क्या यही वह अनुग्रह है जिसे उसने मेरे लिए जीता है?
महिमा के पिता (सारे विचारों से ऊँचा और परे विचार!),
महिमा में, उसने अपनी ही धन्य समानता में हमें लाया!

यदि हम यह समझ जाते हैं कि उद्धार पूरी तरह से अनुग्रह से ही है, तो हम पूरी तरह से अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं। यदि उद्धार ज़रा भी हम पर या हमारे अभागे कामों पर निर्भर करता, तो हम कभी भी सुनिश्चित नहीं हो पाते कि हमारा उद्धार हो चुका है। हम यह कभी भी नहीं जान पाते कि क्या हम ने पर्याप्त भले काम किए हैं या सही तरीका अपनाया है। परन्तु जब उद्धार मसीह के कार्य पर निर्भर करता है, तो फिर कोई भी आशंका नहीं रह जाती।

हमारी अनन्त सुरक्षा के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। यदि हमारी अनन्त सुरक्षा की निरन्तरता को थामे रखना हमारी क्षमता पर निर्भर होता, तो ऐसा होता कि आज हमने उद्धार पाया और कल उसे खो दिया। परन्तु जब तक हमारी अनन्त सुरक्षा को थामे रखना हमारे उद्धारकर्ता की क्षमता पर निर्भर करता है, तब ही हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम अनन्तकाल के लिए सुरक्षित हैं।

जो व्यवस्था के आधीन रहते हैं वे पाप के असहाय प्यादें हैं क्योंकि व्यवस्था उन्हें यह तो बताती है कि क्या करना है, परन्तु उसे करने के लिए सामर्थ्य प्रदान नहीं करती। अनुग्रह के कारण लोग परमेश्वर को सिद्ध दिखाई देते हैं, अनुग्रह उन्हें उनकी बुलाहट के अनुरूप चलने की शिक्षा देता है, उनके भीतर निवास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा ऐसा करने की सामर्थ्य प्रदान करता है, और ऐसा करने के लिए उन्हें प्रतिफल भी देता है।

अनुग्रह की छाया में, सेवा एक आनन्ददायक सुअवसर बन जाती है, कोई बाध्यकारी कर्तव्य नहीं। विश्वासी प्रेम के द्वारा प्रेरित होते हैं, भय से नहीं। उद्धार का प्रबन्ध करने के लिए उद्धारकर्ता के द्वारा उठाए गए दु:खों को स्मरण करके उद्धार पाया हुआ एक पापी अपना जीवन समर्पित सेवा हेतु उण्डेल देने के लिए प्रेरित होता है।

अक्सर यह दोष लगाया जाता है कि अनुग्रह के द्वारा उद्धार प्राप्त होने की शिक्षा से पाप को बढ़ावा मिलता है। ऐसा भी कहा जाता है कि, ''यदि आप ने अनुग्रह से उद्धार पाया है, तो आप जैसा चाहें वैसा जीवन व्यतीत कर सकते हैं।'' पर सच्चाई यह है कि परमेश्वर के अनुग्रह की सही समझ प्राप्त कर उसका सही लाभ उठाने से पवित्र जीवन जीने के लिए सबसे

सशक्त प्रेरणा प्राप्त होती है। लोग (परमेश्वर के प्रति) प्रेम के कारण वह कर सकते हैं जो वे (परमेश्वर से) दण्ड पाने के भय के कारण भी नहीं कर पाएंगे। क्या संत अगस्टीन यही कहना नहीं चाह रहे थे जब उन्होंने कहा, ''(परमेश्वर से) प्रेम करें, और फिर जो चाहें वो करें?''

जब एक बार हमें परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है, तो हम सदा के लिए आराधना करने वाले बन जाते हैं। हम में से प्रत्येक स्वयँ से ये प्रश्न करें कि, ''प्रभु ने मुझे क्यों चुना? प्रभु यीशु मसीह को मेरे जैसे इतने अयोग्य व्यक्ति के लिए अपना लोहू बहा कर प्राण क्यों देना चाहिए था? परमेश्वर को ऐसा क्यों करना चाहिए था कि वह न सिर्फ मुझे नरक से बचाए बल्कि वर्तमान में स्वर्गीय स्थानों की सारी आशीषों से आशीषित करे और मुझे अपने साथ स्वर्ग में सदाकाल तक रहने के लिए ठहराए?''

अवश्य ही, परमेश्वर यह चाहता है कि उसका अनुग्रह हमारे जीवनों में भी उत्पन्न हो और हमारे जीवनों से यह दूसरों की ओर बह चले। वह चाहता है कि हम दूसरों के साथ व्यवहार करने में अनुग्रहकारी हों। हमारी बातें ''सदा अनुग्रह सहित और सलोने हों'' (कुलु. 4:6)। हमें अपने आप को अनुग्रह का ऐसा धनी बनाना है कि लोग हमारे अनुग्रह के कारण धनी हो जाएं (2 कुरि. 8:9)। हमें अयोग्य और अप्रिय लोगों के प्रति अनुग्रह दर्शाते हुए उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में लोग प्रभु यीशु मसीह को देख सकें, तो हमें वैसा ही अनुग्रह दर्शाना है जैसे अनुग्रह के लिए वह इस पृथ्वी पर के अपने जीवनकाल में पहचाना जाता था। ऑगस्ट एम. टोप्लेडी ने इसका प्रचार इस तरीके से किया है:

यह अनुग्रह ही था जिसने जीवन की अनन्त पुस्तक में मेरा नाम लिखा;
यह अनुग्रह ही था जिसने मुझे मेम्ने के हाथों सौंपा, जिसने मेरा सारा दुःख ले लिया।
अनुग्रह ही से मेरा उद्धार हुआः यही है मेरा बखान;
यीशु सब के लिए मरा, और मेरे लिए वो हुआ कुर्बान।।

हे प्रभु तेरा अनुग्रह मेरे प्राण को ईश्वरीय सामर्थ्य से प्रेरित करे;
मेरी पूरी सामर्थ्य तेरी लालसा करे, और मेरे सब दिन तुझे समर्पित हों।
अनुग्रह ही से मेरा उद्धार हुआ! यही है मेरा बखान;
यीशु सब के लिए मरा, और मेरे लिए वो हुआ कर्बान।।

टिप्पणी

1. जे.आई. पैकर, *नोईंग गॉड,* पृ. 146।

–19–

करुणा से भरपूर

उसकी करुणा सदा की है।

– भजन 136 (छब्बीस बार)

परमेश्वर के अनुग्रह से बहुत मिलता–जुलता एक गुण है, परमेश्वर की करुणा। जहाँ अनुग्रह हम पर उण्डेली जाने वाली वह आशीष है, जिसके हम योग्य नहीं, वहीं उसकी करुणा उस दण्ड को रोके रहती है, जिसके हम योग्य हैं। उसकी करुणा वह दया, स्नेहिल भलाई, और वह तरस है जिसे वह उन पर दिखाता है जो दयनीय अवस्था और दुर्दशा में पड़े हुए हैं। उसकी करुणा धर्मियों और अधर्मियों पर सूर्य के चमकने के कारण है। अंग्रेजी के किंग्स जेम्स संस्करण और उस पर आधारित अन्य संस्करणों में, करुणा *(मर्सी)* को अक्सर स्नेहिल भलाई *(लविंगकाइन्डनेस)* के समानार्थी के रूप में प्रयोग में लाया गया है।[1]

यहाँ पर कुछ पदों को दिया गया है जो परमेश्वर की करुणा का वर्णन करते हैं:

> और यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है (निर्गमन 34:6 7)।
>
> निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी;
> और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा (भजन 23:6)।
>
> क्योंकि यहोवा भला है,उसकी करुणा सदा के लिये,
> और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है (भजन 100:5)।
>
> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता, और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है (2 कुरि. 1:3)।
>
> परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है (इफि.2:4)।
>
> जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है (याकूब 5:11)।

करुणा और सच्चाई का मिलन कलवरी के क्रूस पर हुआ, और इस मिलन के द्वारा प्रायश्चित का उपाय हुआ और अधर्म को दूर किया गया (नीति.16:6)। थॉमस केली ने इसे अपनी कविता में इस तरह से व्यक्त किया है:

करुणा और दया एक हुए;
क्या ही अद्‌भुत दृश्य, सब दृश्यों से ऊँचा!
यीशु ने शाप झेल लिया,
दोष के कड़वे कटोरे को बहा दिया,
हमारे लिए कुछ भी नहीं बचा, सिवाय प्रेम के!

जब लोग अपने बीमार रिश्तेदारों के लिए प्रभु से करुणा की प्रार्थना करते थे, तो उनका आशय चंगाई की करुणा से होता था। जब अन्धे व्यक्तियों ने प्रभु से दया की प्रार्थना की, तो वे उससे दृष्टि पाने की करुणा चाहते थे। जब पौलुस तीमुथियुस और अन्य मसीही विश्वासियों को लिखता है, ''अनुग्रह, और दया, और शान्ति,'' तो वह निर्बल और असफल हो रहे सेवकों के लिए परमेश्वर की संवेदनशील चिन्ता चाहता है। जब यहूदा ने कहा कि ''अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो'' (यहूदा 21), तो वह पवित्र लोगों (सब विश्वासियों) को लेने के लिए मसीह के आगमन की बात कर रहा था।

जब इफिसियों 2:4 की तरह के पद को मैं पढ़ता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने एक व्यक्ति के नरक जाने के रास्ते को रोकने के लिए परमेश्वर के अवरोध की खोज कर दी है – ''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है'' वह करुणा में इतना धनी है कि किसी को भी नाश होने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु इसके लिए लोगों को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के द्वारा ठहराए गए मार्ग से उसके पास आना आवश्यक है। मैं उस करुणा का गुण गाता हूँ जिसने मुझ पर स्नेहिल भलाई, दया, और तरस दिखाया। और मैं जीवन की करुणाओं के लिए उसकी स्तुति करता हूँ – आँखों के लिए, कान के लिए, नाक के लिए, दिमाग के लिए, भूख के लिए, तन और मन की स्वस्थता के लिए, भोजन, पानी, और प्रकृति के हर एक आश्चर्यों के लिए।

हमेशा की तरह, विशेषाधिकार जिम्मेदारियाँ लेकर आता है। परमेश्वर चाहता है कि हम दया के उसके इस गुण में उसका अनुसरण करें। वह चाहता है कि हम एक दूसरे पर करुणामय हों: ''जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो'' (लूका 6:36)।

करुणा के विषय में मैं आपके सामने आज के समय का एक उदाहरण रखना चाहता हूँ। एक दिन, पॉल नामक एक मसीही एक कॉफी–शॉप में गया, वह एक स्टूल पर बैठ गया,

और दोपहर के भोजन के खाने का आर्डर दिया। जब बगल में बैठे व्यक्ति से उसने बात करना आरम्भ किया, तो उसने पाया कि फ्रेड नामक यह व्यक्ति आत्मिक आवश्यकता में था। पॉल ने उसे सुसमाचार सुनाया, और फिर उससे अगली बार मिलने का समय लिया। दूसरी मुलाकात में, फ्रेड ने मन फिरा कर विश्वास किया। उसके बाद से पॉल उससे व्यक्तिगत रूप से मिल कर शिष्यता की शिक्षा देने लगा, और फ्रेड प्रभु यीशु के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ता गया। परन्तु कुछ समय बाद ही फ्रेड को पता चला कि उसे एक ऐसी बीमारी है जिससे उसकी जान को खतरा है। उसे एक अस्पताल में भर्ती होना पड़ा, जो काफी निम्न दर्जे का अस्पताल था। पॉल तब भी लगातार फ्रेड के पास जाता रहा, वह उसे स्नान कराता, उसकी चादर बदलता, और अन्य उन सभी निम्न कार्यों को भी करता जो अस्पताल के कर्मचारियों को करना चाहिए था। जिस रात फ्रेड की मृत्यु हुई, पॉल उसे अपनी बाहों में लिए हुए था, और उसके कानों में पवित्रशास्त्र के पदों को फुसफुसा रहा था। करुणा इसी को कहते हैं। एक मनुष्य के जीवन में परमेश्वर के समान इस गुण को देखना अद्‌भुत बात है।

पौलुस प्रेरित हमसे हमें हर्ष से दया करने के लिए कहता है (रोमि. 12:8)। एक मसीही बहन ने एक बार इस पद को जिस तरीके से मुझे समझाया उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। उस ने मुझे से कहा, ''मेरी माता बहुत ही बूढ़ी हो चुकी थी और वह अकेली रह रही थी, परन्तु एक ऐसा समय आया जब अकेले रहना उनके बस में नहीं रहा। मैंने अपने पति से इस विषय पर बात की, और हमने अपनी बुजुर्ग माता को अपने घर में रखने का निर्णय लिया। परन्तु मेरे हृदय की गहराई में अनिच्छा और कुढ़न थी। इससे हमारे घर की दिनचर्या गड़बड़ होने लगी और हमें अपनी बहुत से योजनाएं टालनी या निरस्त करनी पड़ी। मैं उनकी देखभाल करती थी। मैं उनके लिए भोजन पकाती थी। मैं उनके कपड़े धोती थी। मैंने उनके लिए सब कुछ किया। परन्तु मेरी माँ मुझे से कहती थीं, ''तुमने अब मुस्कुराना क्यों बन्द कर दिया है? तुम अब पहले के समान खुश दिखाई नहीं देती!'' आप समझ सकते हैं कि मैं करुणा तो दिखा रही थी, परन्तु हर्ष से नहीं।''

जब यीशु ने कहा, ''मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ'' (मत्ती 9:13), तो उसने यह शिक्षा दी है कि हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण है कि हम दूसरों से प्रेम रखते हुए उनकी सहायता और चिन्ता करें बजाए इसके कि उन्हें महंगे इनाम देकर ही संतुष्ट हो जाएं। परन्तु वह रीति-विधि को पूरा करने से नहीं, बल्कि सच्चाई से प्रसन्न होता है।

इसलिए पहाड़ी उपदेश के धन्य-वचनों में, एक में इस गुण का भी उल्लेख किया गया है: ''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया की जाएगी'' (मत्ती 5:7)। यदि हम

अपने ऊपर दया चाहते हैं, तो हमें दूसरों पर दया दिखाना है। जॉन मिल्टन ने इसी सच्चाई को इन शब्दों में लिखा है:

आओ हम, हर्षित हृदय से,
याह की स्तुति करें, क्योंकि वह भला है;
क्योंकि उसकी करुणा सदा की है,
सदा विश्वासयोग्य, सदा भरोसेमंद।

उसने अपनी दयालु आँखों से,
हमारी दुर्दशा पर दृष्टि की;
क्योंकि उसकी करुणा सदा की है,
सदा विश्वासयोग्य, सदा भरोसेमंद।

टिप्पणी

1. *केजेवी* और *एनकेजेवी* करुणा *(मर्सी)* और स्नेहिल भलाई (*लविंगकाइन्डनेस)* एक ही इब्रानी शब्द *हेसेद* ('धन्य' के इब्रानी शब्द के साथ तुकबन्दी) के अनुवाद हैं।

–20–

उसका भयानक क्रोध

परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।

– रोमियों 1:18

परमेश्वर का क्रोध पाप और मन न फिराए हुए पापी के प्रति उसकी धर्मी जलजलाहट और कोप है। यद्यपि हम प्रेम, दया, और अनुग्रह के बारे में बात करना अधिक पसन्द करते हैं, परन्तु परमेश्वर का क्रोध भी उसके चरित्र की दूसरी विशेषताओं के समान ही एक ईश्वरीय सिद्धता है: ''यह कोई नीच उत्तेजना नहीं है जैसा कि मनुष्य के क्रोध में अक्सर हम देखते हैं, जो घमण्ड और निर्बलता का प्रतीक हो, बल्कि यह बुराई के प्रति पवित्रता की प्रतिक्रिया है जो नैतिक रूप से सही और महिमामय तरीके से व्यक्त की जाती है।''[1]

मानव इतिहास के विभिन्न समयों में, परमेश्वर ने पाप के विरुद्ध अपना क्रोध प्रगट किया है। उसने नूह के दिनों में संसार को नाश करने के लिए जलप्रलय भेजा। उसने सदोम और अमोरा को भस्म कर दिया, और मैदान के नगरों पर आग और गन्धक बरसाये। उसने भूमि को फटने दिया कि कोरह, दातान, और अबीराम उसमें समा जाएं। समय समय पर किये गये क्रोध का यह प्रदर्शन आने वाली पीढ़ियों को कुछ खास तरह के पापों के साथ साथ सामान्य तौर पर पापों के प्रति परमेश्वर की अप्रसन्नता को प्रगट करने के लिए किया गया था। यह हमारा सौभाग्य है कि, वह आज हर बार पाप किए जाने पर भड़क नहीं उठता।

परमेश्वर का क्रोध क्लेशकाल के समय प्रगट किया जाएगा जब मुहरें खोली जाएंगी, तुरहियाँ फूंकी जाएंगी, और उसके प्रकोप के कटोरे उस संसार पर उण्डेले जाएंगे जिसने उसके पुत्र को ठुकरा दिया था।[2] और यह तब भी प्रगट किया जाएगा जब प्रभु यीशु पृथ्वी पर राजाओं के राजा और प्रभुओं के रूप में लौटेगा, जब परमेश्वर अपना मौन तोड़ कर अपने प्रकोप को उण्डेलेगा:

> यह आहत धार्मिकता के बल के साथ गरजेगा, बिजली की कड़कन के साथ कठोर विवेक पर प्रहार करेगा; लापरवाह शिकार पर लम्बे समय से घात लगाए हुए सिंह की तरह दहाड़ेगा, उस पर छलांग लगा कर उसे फाड़ डालेगा और अहंकारी मानवजाति के व्यर्थ तर्कों को समाप्त कर देगा; यह एक शक्तिशाली, विजयी, विजय का स्वाद चख चुके योद्धा की ललकार के समान गूंजेगा, रात की भयावहता में यातना झेलने वालों की चीख से भी अधिक बल के साथ प्राणों को भयभीत कर भारी बना देगा। हे परमेश्वर, पृथ्वी पर उस शब्द के पहले स्वर क्या होंगे? और उनका प्रभाव क्या होगा? विस्मय और भय, धूल में मिल जाना, क्योंकि परमेश्वर स्वयं के युद्ध की ललकार के साथ स्वर्ग पर से उतरेगा, और प्रधानस्वर्गदूत और परमेश्वर की तुरही का बड़ा शब्द होगा, जो जितना हो सके उतना अधिक भयानक होगा, यह उसकी धीरजपूर्वक मौन का परिणाम होगा।[3]

परमेश्वर का क्रोध अधोलोक में और आग की झील में प्रगट होता है, यह नरक भी कहलाता है। अधोलोक उद्धार न पाए हुए मृतकों के लिए एक अस्थायी कैदखाना है, इस स्थान में व्यक्ति पूरी चेतना के साथ पीड़ा झेलता है। बड़े श्वेत सिंहासन के सामने न्याय के समय, मृत्यु और अधोलोक, अर्थात्, उद्धार न पाए हुओं के शरीर, प्राण, और आत्मा आग की झील में डाल दिए जाएंगे। प्रभु यीशु ने जोर देने के लिए तीन बार यशायाह 66:24 को उद्धरित किया, और उद्धार न पाए हुओं के अन्तिम और अनन्त वास के लिए एक ऐसे स्थान का वर्णन किया जहाँ ''कीड़ा नहीं मरता, और आग नहीं बुझती'' (मरकुस 9:44,46,48)। और यूहन्ना ने लिखा है, ''उन की पीड़ा का धुंआ युगानुयुग उठता रहेगा'' (प्रका. 14:11)।

एक अन्य स्थान है जहाँ पर परमेश्वर का क्रोध प्रगट हुआ – वह स्थान है, कलवरी का क्रूस। यहाँ परमेश्वर की जलजलाहट का गाढ़ा कटोरा उसके प्रिय पुत्र पर उण्डेला गया था जहाँ उसने अपने शरीर पर हमारे पापों का बोझ उठा लिया। उद्धारकर्ता ने तीन घण्टे तक नरक की वेदना को झेला था – वही नरक जहाँ अनन्तकाल तक हम सब को रहना पड़ता। यह न सिर्फ शारीरिक पीड़ा थी परन्तु परमेश्वर द्वारा त्यागे जाने की अवर्णनीय भयावहता भी थी। हम उसकी पीड़ा की सीमा की कल्पना किसी भी हाल में नहीं कर सकते।

जी.डब्ल्यू. फ्रेजर ने लिखा है,

> तेरे सारे दु:खों की गहराई,
> कोई भी हृदय कभी नहीं समझ पाएगा;
> कोप का उमण्डता हुआ कटोरा,
> तू ने हमारे कारण पी लिया।

परमेश्वर के क्रोध का वर्णन करने वाले कुछ प्रमुख पद निम्नलिखित हैं:

सो यदि मैं बिजली की तलवार पर सान धरकर झलकाऊं, और न्याय अपने हाथ में ले लूं, तो अपने द्रोहियों से बदला लूंगा, और अपने बैरियों को बदला दूंगा। (व्य.वि. 32:41)

यहोवा जल उठनेवाला और बदला लेनेवाला ईश्वर है;
यहोवा बदला लेनेवाला और जलजलाहट करनेवाला है;
यहोवा अपने द्रोहियों से बदला लेता है,
और अपने शत्रुओं का पाप नहीं भूलता।
यहोवा विलम्ब से क्रोध करनेवाला और बड़ा शक्तिमान है;
वह दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।
यहोवा बवंडर और आंधी में होकर चलता है, और बादल उसके पांवों की धूलि हैं।
उसके घुड़कने से महानद सूख जाते हैं, और समुद्र भी निर्जल हो जाता है;
बाशान और कर्म्मेल कुम्हलाते और लबानोन की हरियाली जाती रहती है।
उसके स्पर्श से पहाड़ काँप उठते हैं और पहाड़ियाँ गल जाती हैं;
उसके प्रताप से पृथ्वी वरन् सारा संसार अपने सब रहनेवालों समेत थरथरा उठता है।
उसके क्रोध का सामना कौन कर सकता है?
और जब उसका क्रोध भड़कता है, तब कौन ठहर सकता है?
उसकी जलजलाहट आग की नाईं भड़क जाती है,
और चट्टानें उसकी शक्ति से फट फटकर गिरती हैं।
यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है,
और अपने शरणागतों की सुधि रखता है।
परन्तु वह उमड़ती हुई धारा से उसके स्थान का अन्त कर देगा,
और अपने शत्रुओं को खदेड़कर अन्धकार में भगा देगा (नहूम 1:2-8)।

जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है (यूहन्ना 3:36)।

कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही (रोमि. 9:22)।

कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है (इफि. 5:6)।

और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा, वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज़ से दूर हो करअनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे (2 थिस्स. 1:8–9)।

और (वे) पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो (प्रका. 6:16)।

तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने, और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा (प्रका. 14:10–11)।

और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हँसुआ डाला, और पृथ्वी की दाखलता का फल काटकर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया (प्रका. 14:19)।

और उन चारों प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के, जो युगानुयुग जीवता है, प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए (प्रका. 15:7)।

फिर मैंने मन्दिर में किसी को ऊंचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना कि जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो (प्रका. 16:1)।

और जाति जाति को मारने के लिए उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जल–जलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा (प्रका. 19:15)।

अक्सर यह आपत्ति सुनने को मिलती है कि यदि असम्भव नहीं, तो विश्वास करने में मुश्किल अवश्य है, कि प्रेम का परमेश्वर अनन्त नरक जैसी चीज़ को कायम रख सकता है। आपत्तिकर्ताओं का कहना है कि परमेश्वर का क्रोध उसकी करुणा के गुण से मेल नहीं खाता। जो लोग इस प्रकार की बकवास धारणा रखते हैं, उन्हें निम्नलिखित सच्चाइयों की ओर ध्यान देना चाहिए।

बाइबल स्वयं बिल्कुल स्पष्ट रीति से और जोर देते हुए क्रोध को परमेश्वर के चरित्र के गुणों में से एक बताती है। ए.डब्ल्यू. पिंक कहते हैं कि ''पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के प्रेम और कोमलता से सम्बन्धित जितने स्थल नहीं हैं, उससे अधिक उसके क्रोध से सम्बन्धित स्थल हैं।'' प्रभु यीशु ने स्वर्ग से अधिक नरक की बातें की। सी.एच. स्पर्जन कहते हैं कि हम परमेश्वर के चरित्र के किसी भी गुण को अनदेखा नहीं कर सकते – क्रोध को भी नहीं। ''भयानक बदला लेने वाले की भी वैसे ही स्तुति करना है, जैसा कि छुटकारा देने वाले प्रेमी की। इस बात के विरोध में, पाप से भरे मनुष्य के बुरे हृदय की संदेवनशीलता विद्रोह करती है, यह एक ऐसे करुणामय परमेश्वर की दोहाई देती है जिसके भीतर की दया ने उसके क्रोध को दबा दिया है। यहोवा के ठीक–निर्देशित सेवकगण हमेशा ही उसके चरित्र के गुणों के सब पहलुओं की स्तुति करेंगे, चाहे वे कठोर गुण हों या फिर कोमल।''[4]

किन्तु, परमेश्वर ने कभी भी यह नहीं चाहा है कि मानवजाति नरक में जाए, परमेश्वर ने नरक को शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किया है (मत्ती 25:41)। न्याय परमेश्वर का एक अचम्भित काम है (यशा. 28:21)।

किसी भी मनुष्य को नरक जाने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर ने एक भारी कीमत चुका कर छुटकारे का उपाय किया है, परन्तु यह आवश्यक है कि लोग व्यक्तिगत रूप से विश्वास कर परमेश्वर के दिए हुए उद्धार को ग्रहण करें।

यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की दया को ठुकरा देता है, तो उसके लिए परमेश्वर के क्रोध के सिवाय और कुछ नहीं बच जाता। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की शर्तों पर स्वर्ग नहीं जाना चाहता, तो उसके लिए नरक के सिवाय और कोई दूसरा स्थान नहीं बच जाता। जे. आई. पैकर ने बिल्कुल सही कहा है:

> क्रोध करने में परमेश्वर का उद्देश्य मनुष्य को वह देना है जिसे वह स्वयं चुनता है, जो वह चुनेगा वही वह पाएगा, न उससे थोड़ा कम न उससे अधिक। इस हद तक मनुष्य की इच्छा का आदर करने में परमेश्वर की तत्परता से सहमत होना कठिन है और यह भयानक बात लगती है, परन्तु यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि यहाँ पर उसका रवैया पूरी तरह से न्यायप्रिय है, और तानाशाही और गैरजिम्मेदार हो कर पीड़ा देने, अर्थात् क्रूरता से कोसों दूर है।[5]

जी.के. चेस्टर्टन ने, जो कि पहले एक नास्तिक थे, एक बार कहा था, ''नरक वह सर्वोत्तम उपहार है जिसे परमेश्वर मनुष्य के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा और मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा के बदले में उसे दे सकता है।''

इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि परमेश्वर ही विश्व भर का ऐसा व्यक्ति है जिसके विषय में लोगों को सबसे अधिक गलत समझ है, और जिससे लोग सबसे अधिक घृणा करते हैं। वह लोगों को पाप के परिणामों के विषय में सचेत करता है। फिर जब वे जानबूझ कर उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और अपने आप को बर्बादी की ओर ले जाते हैं, तो वे परमेश्वर के विरुद्ध भड़क उठते हैं। लोग जानबूझ कर ऐसा काम करते हैं जिसे परमेश्वर ने करने से मना किया है, और फिर जब उन्हें इसका दण्ड सहना पड़ता है तब वे परमेश्वर पर दोष लगाते हैं। परमेश्वर ने धीरज के साथ दया दिखाते हुए, उद्धार का एक उपाय किया है, परन्तु अविश्वासी इसका इंकार करते हैं और खतरनाक ढलान पर लुड़कते हुए, सारे रास्ते परमेश्वर को भला–बुरा कहते हुए नरक में जा टकराते हैं।

यदि हमें परमेश्वर के गुणों का अनुसरण करना है, तो क्रोध के इस गुण का हम क्या करें? क्या विश्वासियों के लिए क्रोध करना कभी सही हो सकता है? इसका उत्तर यह है कि कुछ प्रकार के क्रोध करने की आज्ञा दी गई है, ''क्रोध तो करो, पर पाप मत करो'' (इफिसियों 4:26)। परन्तु इस बात की सम्भावना हमेशा बनी रहती है कि धर्मी क्रोध भी आपे से बाहर हो जाए, और इसलिए इस पद में आगे यह कहा गया है, ''सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे''। हमें क्रोध तब करना चाहिए जब परमेश्वर के नाम और काम का अनादर होता है। इसलिए, प्रभु यीशु मसीह ने तब क्रोध किया जब लेनदेन करने वालों ने उसके पिता के घर को डाकुओं की खोह बना लिया। जैसा कि किसी ने कहा है, हमें परमेश्वर के कार्य के लिए तो सिंह परन्तु अपने काम के लिए मेम्ना बनना चाहिए।

सामान्यत: क्रोध हमारे लिए सुरक्षित नहीं है, इसलिए पवित्रशास्त्र में निम्नलिखित चेतावनियाँ दी गई हैं:

> हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा (रोमि:12:19)।
>
> सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निंदा, सब बैर भाव समेत तुम से दूर की जाए (इफि. 4:31)।

> हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो : इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो।क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है (याकूब 1:19–20)।

यह हमारे लिए निरन्तर आराधना करते रहने का एक कारण है कि विश्वासियों को कभी भी परमेश्वर के क्रोध को सहना नहीं पड़ेगा। वे हर्ष के साथ पॉल गेरहार्ड के शब्दों में यह कह सकते हैं:

> कोई दोष नहीं
> मेरे लिए कोई नरक नहीं
> पीड़ा और आग
> मेरी आँखें कभी न देखेंगी
> क्यों मुझे कोई सजा नहीं सुनाई गई,
> मेरे लिए मृत्यु का कोई डंक नहीं
> क्योंकि मुझसे प्रेम करने वाला प्रभु
> अपने पंखों से मुझे ढांपे रहेगा।

परन्तु जब हम परमेश्वर के क्रोध के विषय में मनन करते हैं, तो हम खोए हुओं पर तरस खाएं और लालसा करें कि वे भाग कर प्रभु यीशु की बाँहों में आ जाएं। हमें अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों, और मित्रों के लिए प्रार्थना करना है, उनके साथ अपनी भौतिक आशीषों को बाँटना है, और उनके पास जा कर उन्हें उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करना है।

निश्चय ही, यहाँ पर मन न फिराए हुए लोगों के लिए एक चेतावनी है, ''परमेश्वर का क्रोध'' – उसका पलटा या गुस्सा नहीं है, परन्तु पवित्र क्रोध जो उसे पापी मनुष्य के इतना विरोध में कर देता है कि वह उसे त्याग दे (रोमि. 1:18, 24,26,28)! विचार करें – विश्व का सर्वोच्च सामर्थी आप के विरोध में, यह तय करे कि आप जो कर रहे हैं उसमें असफल हो जाएंगे। सर्वोच्च सामर्थी परमेश्वर आप पर चुपचाप हंसते हुए आपको आपके हाल में छोड़ देता है।[6] यह विचार भयावह है, इसकी वास्तविकता तो और भी भयानक है, जैसा कि आइज़क वाट्स ने स्पष्ट शब्दों में कहा है:

> वह भयावह समय! जब परमेश्वर निकट आकर,
> मनुष्य के अपराधों को अपनी आँखों से देखता है!
> उसका क्रोध उनके दोषी प्राणों को भेद देगा,
> और कोई भी छुड़ाने की हिम्मत नहीं कर पाएगा।

टिप्पणियाँ

1. जे.आई. पैकर, *नोइंग गॉड,* पृ. 189।
2. प्रकाशितवाक्य 6–19 अध्याय देखें।
3. एलिज़ाबेथ इलियट, *शैडो ऑफ द ऑलमायटी* में जिम इलियट को उद्धरित किया गया है, पृ. 111।
4. चार्ल्स हेडन स्पर्जन, *ट्रेज़री ऑफ डेविड* 4:386।
5. पैकर, *नोइंग गॉड,* प 170।
6. फोरमैन, *डेली नोट्स ऑफ द स्क्रिप्चर यूनियन*।

–21–

पवित्र परमेश्वर

सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है!

– यशायाह 6:3

परमेश्वर पवित्र है। उसका नाम पवित्र है (यशा. 57:15), और वह अपने नाम के ही अनुरूप है। इसका अर्थ यह है कि वह नैतिक रूप से अपने विचारों, कार्यों, अभिप्रायों और हर बात में सिद्ध है। वह सब पापों और अशुद्धताओं से मुक्त है, जैसा कि यूहन्ना ने लिखा है, ''परमेश्वर ज्योति है: और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं'' (1 यूहन्ना 1:5)। वह जितना पवित्र है, उससे और अधिक पवित्रता सम्भव नहीं है। वह परम शुद्ध, बेदाग, और निष्कलंक है। ए.डब्ल्यू. टोज़र ने लिखा है, ''परमेश्वर की पवित्रता की अनसृजी अग्नि में स्वर्गदूत अपना मुख ढाँप लेते हैं। उसकी दृष्टि में आकाशमण्डल स्वच्छ और तारेगण शुद्ध नहीं हैं।'' परमेश्वर पाप से घृणा करता है और पाप की हल्की चिंगारी से ही उसका क्रोध धधक उठता है। उसने मूसा को प्रतिज्ञा के देश से बाहर रखा क्योंकि उसने परमेश्वर को पवित्र नहीं जाना (गिनती 20:12)। परमेश्वर की पवित्रता उसे उसके सब सृजित प्राणियों से अलग करती है (निर्ग. 15:11)।

सत्रहवीं शताब्दी के अंग्रेज प्रचारक स्टीफन शेरनॉक ने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि *पवित्र* शब्द परमेश्वर के नाम के आगे (पूर्व–प्रत्यय के रूप में) उसके किसी अन्य गुण की अपेक्षा अधिक बार प्रयोग किया गया है। इसके दो उदाहरण हैं, ''पवित्र परमेश्वर'' और ''इस्राएल का पवित्र परमेश्वर।''

पवित्रशास्त्र में ऐसे अनेक स्थल पाए जाते हैं जो परमेश्वर की पवित्रता की शिक्षा देते हैं, परन्तु इस समय हम सिर्फ तीन स्थलों पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे।

पहला, लैव्यव्यवस्था 19:2: ''... तुम पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर

यहोवा पवित्र हूँ।'' वास्तव में, लैव्यव्यवस्था 19 इस विषय से सम्बन्धित एक प्रमुख अध्याय है। बार बार हम यहाँ पर यहोवा को यह कहते हुए सुन सकते हैं, ''मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, मैं पवित्र हूँ, तुम भी पवित्र बनो।'' इसकी गूंज हमें 1 पतरस 1:15–16 में भी सुनाई देती है।

दूसरा, हबक्कूक 1:12–13 में, भविष्यद्वक्ता कहता है,

> हे मेरे प्रभु यहोवा, हे मेरे पवित्र परमेश्वर, . . .
> तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता,
> और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता।

इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर यह नहीं देख सकता कि क्या हो रहा है। वह हर पाप को होते हुए देखता है। इसका अर्थ यह है कि वह पाप को अनुमोदन करने वाली दृष्टि से नहीं देख सकता। वह अधर्म को अनदेखा नहीं कर सकता। वह किसी गलत बात का पक्ष नहीं ले सकता।

तीसरा पद, प्रकाशितवाक्य 4:8: ''पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है!'' *पवित्र* शब्द का तीन बार दोहराव न सिर्फ जोर देने के लिए किया गया है; बल्कि इसका अर्थ यह है कि प्रभु उच्चतम पवित्रता धारण करता है।[1]

सम्पूर्ण पुराना नियम समय में, परमेश्वर ने सजीव चित्रणों के द्वारा पवित्रता की शिक्षा दी है। उदाहरण के लिए, याजकपद यह दर्शाता था कि पवित्र परमेश्वर तक पहुँचने के लिए पापी मनुष्य को एक मध्यस्थ की आवश्यकता है। बलिदान की व्यवस्था यह दर्शाती थी कि पतित मानव त्रि–पवित्र परमेश्वर के पास सिर्फ लोहू का बलिदान ले कर आ सकता है। मन्दिर की विधि के अनुसार एक जाति के एक गोत्र के एक परिवार का सिर्फ एक व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में वर्ष में सिर्फ एक दिन जा सकता था। विवाह, पहिनावा, शुद्ध और अशुद्ध भोजन, और संस्कारिक स्नानों से सम्बन्धित व्यवस्था यह दर्शाती थी कि पवित्र परमेश्वर यह चाहता है कि उसके लोग पवित्र बनें।

नया नियम में, हम वास्तव में पवित्रता को एक मनुष्य में साकार होते हुए देखते हैं, ईश–मानव, यीशु मसीह। इस पृथ्वी के सारे लोगों में वही एकमात्र सिद्ध व्यक्ति था। वह पाप से अज्ञात था (2 कुरि.5:21)। उसने कोई पाप नहीं किया (1 पतरस 2:22)। उसमें कोई पाप

नहीं था (1 यूह. 3:5)। वह यह कह सकता था, ''इस संसार का सरदार आता है, और मुझमें उसका कुछ नहीं'' (यूह. 14:30)। निष्पाप उद्धारकर्ता में ऐसा कुछ भी नहीं था कि पाप में पड़ने के शैतान के प्रलोभन के आगे झुक जाए। पीलातुस को भी तीन बार स्वीकार करना पड़ा कि वह प्रभु यीशु में कोई दोष न पा सका (यूह. 18:38; 19:4,6)।

गतसमनी के बाग में हम उसकी पवित्रता की अतिबृहत झलक को देखते हैं। कलवरी की मृत्यु पास आती जा रही थी। उद्धारकर्ता यह जानता था कि शीघ्र ही वह सारे संसार के सारे पापों के साथ अपनी पहचान बनाने वाला है। वह जानता था कि हमारे पाप उस पर लाद दिए जाएंगे और वह एक पापबलि बन जाएगा। इस तरह से पाप के सम्पर्क में आने का विचारमात्र उसके लिए अत्यंत कष्टप्रद हो गया। पवित्रशास्त्र बताता है कि, ''उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बूंदों की नाई भूमि पर गिर रहा था'' (लूका 22:44)।

यहाँ पर हम अपने पापमय जीवन और प्रभु यीशु के पवित्र जीवन के बीच में अन्तर देख सकते हैं। परीक्षा (प्रलोभन) का सामना करना हमें कष्टप्रद लगता है; परन्तु उसे तो परीक्षा (प्रलोभन) का विचार ही कष्टप्रद लगता था। जब हम पाप न करने का निर्णय लेते हैं, तो हम अत्यंत व्यथित होते हैं; वह तो हमारे पापों के सम्पर्क में आने के विचार मात्र से ही व्यथित हो रहा था।

परन्तु आइये परमेश्वर की पवित्रता का विराट प्रदर्शन देखने के लिए हम कलवरी की ओर ध्यान दें। छुटकारे का कार्य आरम्भ होने पर ही है। हमने आरम्भ में देखा कि अवश्य है कि परमेश्वर पाप को दण्ड दे। उसकी पवित्रता उसे पाप सहने, उसे क्षमा करने, या अनदेखा करने से रोकती है। परन्तु जरा ठहर जाएं! बलिदान का मेम्ना इस समय स्वयं उसका प्रिय पुत्र है, जो इसलिए बलिदान नहीं किया जा रहा है क्योंकि उसने कोई पाप किया है, परन्तु वह तो मेरे और आपके पाप के कारण बलिदान हो रहा है। अब परमेश्वर क्या करेगा? क्या वह अपने पुत्र को बचाएगा? क्या यह मामला अपवाद बनेगा? या फिर वह अपना सख्त क्रोध अपने निष्पाप पुत्र पर उण्डेल देगा जब वह प्रभु यीशु को हमारे पापों को अपने ऊपर लिये हुए काठ पर लटका हुआ देखेगा? हम इसका उत्तर जानते हैं। परमेश्वर की पवित्रता से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। उसने अपनी तलवार म्यान से निकाली और यीशु मसीह पर चला दी। जैसा कि एन रॉस कॉसीन ने इसे इस तरह से व्यक्त किया है,

तूफान का भयानक शब्द सुनाई पड़ा,
हे मसीह, यह तुझ पर टूट पड़ा;

तेरी खुली बाँहें मेरी कवच थीं;
उसने इस तूफ़ान को मेरे बदले झेल लिया।
तेरा रूप बिगड़ गया,
तेरा चेहरा कुरुप हो गया;
अब सारे बादल हट गए और मुझे शान्ति मिली।

परमेश्वर को उसकी पवित्रता की कीमत जितनी कलवरी के क्रूस पर चुकानी पड़ी, उतनी कीमत उसे और कभी चुकानी नहीं पड़ी, परन्तु हमें अनन्तकाल तक उसके प्रति कृतज्ञ बने रहना है कि वह इस कीमत को चुकाने के लिए तैयार था। मेजर आन्द्रे ने कृतज्ञतापूर्वक इस बात का प्रचार किया है,

मसीह पर सर्वशक्तिमान का क्रोध टूट पड़ा,
यह क्रोध संसार को नरक में डाल देता;
उसने इसे पापी मनुष्यजाति के लिए उठाया
और मेरे छिपने का स्थान बन गया।

जार्ज कटिंग कहते हैं कि ''सुसमाचार किसी ऐसे परमेश्वर के विषय में नहीं बताता जिसका प्रेम पाप के प्रति आँख बन्द कर लेने में प्रगट हुआ, परन्तु यह एक ऐसे परमेश्वर के बारे में बताता है जिसका पापियों के प्रति प्रेम तभी व्यक्त किया जा सकता है जब पाप के विरुद्ध उसकी पवित्र मांगों को धार्मिकता के साथ पूरा किया जाता है और इसका दण्ड पूरी तरह से वहन किया जाता है।''[2]

परमेश्वर की पवित्रता का हमारे जीवन में क्या क्या व्यावहारिक असर होता है? बाइबल का हर एक वाक्य धीरे से एक आज्ञा बन जाता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षाओं और सिद्धान्तों को न सिर्फ हमारे मनों पर, बल्कि सम्पूर्ण जीवन पर असर डालने के लिए तैयार किया गया है। यह सम्भव है कि एक व्यक्ति का मस्तिष्क धर्मविज्ञान से भरा हुआ हो तौभी वह बर्फ सा ठण्डा हो। मसीही सच्चाइयों को जान लेना ही पर्याप्त नहीं है; अवश्य ही यह हमारे भीतर साकार हो।

परमेश्वर की पवित्रता पर विचार कर हमें श्रद्धामय विस्मय से भर जाना चाहिए। हमें अपने जूते उतार लेना चाहिए क्योंकि जिस स्थान पर खड़े हैं, वह पवित्र स्थान है (निर्ग. 3:5):

ईश्वर पवित्रों की गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य,
और अपने चारों ओर सब रहनेवालों से अधिक भययोग्य है (भजन 89:7)।

ए.डबल्यू. टोज़र ने कहा है, ''कभी न भूलें कि यह एक सुअवसर है कि हम सर्वोच्च भेद के समक्ष हर्ष के साथ मौनपूर्वक खड़े रहें और धीमें धीमें यह कहें, 'हे प्रभु परमेश्वर, तू तो जानता है।' '' यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम कभी भी परमेश्वर को एक सांसारिक साथी समझने की भूल नहीं करेंगे। जोश मैकडोवल ने कहा है, ''परमेश्वर आपका (स्वर्गीय) पिता हो सकता है, परन्तु वह आपका (सांसारिक) डैड नहीं है।''

जब हम परमेश्वर की पवित्रता को देखते हैं, तब हमें अपनी घोर पापमयता को भी देख पाना चाहिए। जब यशायाह ने प्रभु को देखा, तो वह पुकार उठा, ''हाय! हाय! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध ओठों वाला मनुष्य हूँ'' (यशा. 6:5)। जब अय्यूब ने प्रभु को देखा, तो उसने कहा, ''मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूलि और राख में पश्चत्ताप करता हूँ'' (अय्यूब 42:6)। जब पतरस ने प्रभु को देखा, तो वह पुकार उठा, ''हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ।'' नॉर्वे देश के एक मध्यकालीन अंग्रेज मसीही, जूलियन ने लिखा है, ''अपने सृष्टिकर्ता को निहारने और उससे प्रेम करने के द्वारा एक प्राणी स्वयँ की दृष्टि में छोटा (न्यूनतर) जान पड़ता है, और वह आदरपूर्ण भय व सच्ची नम्रता; तथा अपने सह–मसीही विश्वासियों के प्रति परोपकार की बहुतायत से परिपूर्ण हो जाता है।''[3]

हम परमेश्वर की पवित्रता के बारे में जितना अधिक विचार करते हैं, हम उतना ही अधिक उसकी आराधना करने के लिए प्रेरित होते हैं। पाप और नैतिक गन्दगी के संसार में रहते हुए, एक ऐसा व्यक्ति भी है जो पूरी तरह से बेदाग है और जिसकी ओर हम देख सकते हैं। जब अपवित्रता हमारा शोषण करती है, तब हम इस व्यक्ति के साथ आनन्दित रह सकते हैं, जो किसी भी असफलता या असिद्धता से मुक्त है। हमें उसकी स्तुति करनी चाहिए क्योंकि पवित्रता की सारी मांगों को क्रूस पर उद्धारकर्ता के कार्यों ने पूरा कर दिया है, और अब परमेश्वर हम पर अपना प्रेम, अनुग्रह, और अपनी दया दर्शा सकता है। साराप और करुब स्वर्गदूत अपना मुँह ढांप कर उसकी शुद्धता की चकाचौंध कर देने वाली ज्योति के सामने अपने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् करते हैं। तो फिर हमें क्या नहीं करना चाहिए!

साथ ही परमेश्वर का यह महिमामय गुण हमारे दिन प्रतिदिन के आचरण को आकार देता जाए। हमें पाप को रोकना है कि उसका विद्रोह बढ़ता न जाए और निरन्तर उसकी पवित्रता की लालसा अनुभव करते जाना है। यदि हम परमेश्वर की संगति में चलने जा रहे हैं, तो हमें पाप को दूर कर ज्योति में चलना अनिवार्य है। मेज़ के नीचे कुछ भी छिपा नहीं होना चाहिए। हमें ''पवित्रता के खोजी'' होना है, ''जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा'' (इब्रा. 12:14)। जैसा कि आर्चबिशप टेम्पल ने कहा है, ''यदि कोई व्यक्ति पवित्र

नहीं है तो वह विश्वासी नहीं है, और यदि वह विश्वासी नहीं है तो वह पवित्र नहीं है।''

अन्ततः यदि हम परमेश्वर की पवित्रता को उचित रीति से समझ कर उसे अपने जीवन में साकार करते हैं, तो इससे हम मसीह की निष्पापता के सम्बन्ध में खोखले विचारों से बच सकेंगे। उदाहरण के लिए, अक्सर यह विकृत धारणा हमारी समझ में आती है कि प्रभु यीशु मनुष्य रूप में पाप कर सकता था, भले ही उसने ऐसा नहीं किया। वे यह तर्क देते हैं, कि यदि ऐसा नहीं है तो जंगल में उसकी परीक्षा सच्ची परीक्षा नहीं कहलाएगी। इस प्रकार की शिक्षाएं कुछ विचलित कर देने वाले प्रश्न उत्पन्न कर देती हैं। प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर कैसे हो सकता है यदि वह परमेश्वर के पूर्ण गुणों में से कुछ को धारण नहीं करता? यदि वह एक मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर पाप कर सकता था, तो स्वर्ग में एक मनुष्य के रूप में पाप करने से उसे क्या चीज़ रोक रही है। यदि पाप करना उसके लिए सम्भव था, तो क्या इसका अर्थ यह है कि उसका हत्या, बलात्कार, व्यभिचार, और समलैंगिकता जैसे गतिविधियों में लिप्त होना सम्भव था? इस विषय की सच्चाई तो यह है कि प्रभु यीशु ने न सिर्फ पाप नहीं किया, परन्तु वह पाप कर ही नहीं सकता था।[4] उसकी मानवता सिद्ध थी, जबकि हमारी मानवता पतित मानवता है। हमारी तरह, बाहर से उसकी परीक्षा की जा सकती थी, परन्तु हमसे भिन्न, उसके भीतर से उसकी परीक्षा नहीं ली जा सकती थी। हमारा उद्धारकर्ता पवित्र, निर्दोष, अशुद्धताहीन, और पापियों से अलग है (इब्रा. 7:26)। उसकी पवित्रता भंग नहीं हो सकती, और न ही इससे कोई समझौता किया जा सकता है।

इब्रानियों की पुस्तक में हम दो बार यह पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु सिद्ध किया गया: ''उसे (परमेश्वर पिता को) यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्ता (प्रभु यीशु मसीह) को दुःख उठाने के द्वारा सिद्ध करे'' (इब्रानियों 2:10); और प्रभु यीशु ''सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रा. 5:9)। किन्तु, इन पदों का अर्थ यह नहीं है कि प्रभु यीशु अपनी नैतिकता के मामले में सिद्ध किया गया। ऐसा असम्भव था क्योंकि वह हमेशा ही अपने चरित्र, वचन, और कार्यों में सिद्ध था। परन्तु वह हमारे उद्धारकर्ता के रूप में सिद्ध बनाया गया। हमें उद्धार देने को, उसे स्वर्ग छोड़ना पड़ा, एक मनुष्य के रूप में देहधारण करना पड़ा, दुःख उठाना पड़ा, लोहू बहाना पड़ा, और मरना पड़ा। यदि वह स्वर्ग में ही रह जाता तो वह हमारा सिद्ध उद्धारकर्ता कभी नहीं बन पाता। उसे वह सारा दण्ड सहना पड़ा जो हमें हमारे पापों के कारण सहना था ताकि वह हमारे उद्धार का अगुवा बन सके।

उसके समान कोई भी नहीं है: ''हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य,औरआश्चर्य कर्म का कर्ता है'' (निर्ग. 15:11)। रेजिनाल्ड हेबर ने इस बात को समझा कि हमारा परमेश्वर पवित्र है:

हे महापवित्र (मूल में, 'पवित्र, पवित्र, पवित्र')! सन्त सब भजन करते,
तेरे सामने अपनी कीर्ति तुच्छ समझते हैं;
(मूल में, 'काँच के समुद्र के चारों ओर उनके स्वर्ण–मुकुटों को नीचे रखकर')
करूबीम, सराफीम तेरे सामने गिरते,
जो था और है और रहेगा सदैव।

हे महापवित्र (मूल में, 'पवित्र, पवित्र, पवित्र')! अन्धकार के कारण,
तेरा दर्शन पापी जन को मिलता है नहीं,
केवल तू पवित्र, है अद्वैत परमेश्वर
सामर्थी, प्रेमी, और दयानिधि।
(मूल में, 'सामर्थ्य, प्रेम, और शुद्धता में सिद्ध')

टिप्पणियाँ

1. प्रकाशितवाक्य के अनेक प्राचीन हस्तलिपियों में इस शब्द को नौ बार दोहराया गया है, शायद तीन बार त्रिएक परमेश्वर के प्रत्येक व्यक्ति के लिए। *द ग्रीक न्यू टेन्टामेन्ट अकार्डिंग टू द मेजोरिटी टेक्स्ट* (नेशविले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1982)।

2. जॉर्ज कटिंग, *लाइट फॉर एंक्शियस सोल्स,* पृ. 13।

3. नॉर्वे देश का जूलियन, *रेवलेशन्स ऑफ डिवाइन लव,* पृ. 14–15।

4. धर्मज्ञानियों ने इस सिद्धान्त के एक गलत मत के साथ सही शिक्षा का अन्तर बताने के लिए दो छोटे लैटिन वाक्यांशों का प्रयोग किया है। सही शिक्षा है *नॉन पोस्से पेक्कारे* (पाप करने की कोई संभावना नहीं), यह *पोस्से नॉन पेक्कारे* (पाप न करने की संभावना) मात्र नहीं है।

–22–

वर्णन से बाहर उसकी बुद्धि

आहा ! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है!
उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!

– रोमियों 11:33

परमेश्वर का एक और गुण है, उसकी बुद्धि। यह एक तरह से उसके ज्ञान के साथ जुड़ा हुआ गुण है, परन्तु दोनों समान नहीं हैं। उसका ज्ञान उसके पास उपलब्ध व्यापक जानकारी और समझ से सम्बन्धित है, जबकि उसकी बुद्धि का अर्थ है इस ज्ञान का इस तरह से प्रयोग करने की क्षमता कि सर्वोत्तम तरीके का उपयोग करते हुए सर्वोत्तम परिणाम उत्पन्न हो। यह उसकी सिद्ध परख और अचूक समझ को दर्शाता है।

ईश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाए जाते हैं;
युक्ति और समझ उसी में है . . .।
उस में सामर्थ्य और खरी बुद्धि पाई जाती है;
धोखा देनेवाला और धोखा खानेवाला दोनों उसी के हैं (अय्यूब 12:13,16)।

हे यहोवा तेरे काम अनगिनित हैं!
इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है;
पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है (भजन 104:24)।

यहोवा ने पृथ्वी की नेव बुद्धि ही से डाली;
और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया।
उसी के ज्ञान के द्वारा गहिरे सागर फूट निकले,
और आकाशमण्डल से ओस टपकती है (नीतिवचन 3:19–20)।

परमेश्वर की बुद्धि के निशान प्राकृतिक सृष्टि में देखे जा सकते हैं, परन्तु इसके पूर्ण प्रकाशन का विस्तार अनन्तकाल तक है। उदाहरण के लिए, विश्व को देखें। कुछ समय पहले

ही एक विज्ञान–लेख में कहा गया था कि विश्व की सारी वस्तुओं के बीच तालमेल इतना बेहतरीन है कि यह कहना कि यह सब संयोग से हुआ है, ऐसा ही होगा मानों, ''माइक्रोस्कोप से देखे जा सकने वाले एक सूक्ष्म तीर को पृथ्वी से फेंक कर अंतरिक्ष के सबसे दूर तारे पर एक मिलीमीटर के गोले पर निशाना लगाना।''

मनुष्य का शरीर परमेश्वर की बुद्धि और कारीगरी की एक कृति है। उदाहरण के लिए, एक लेखक ने अपना अनुभव बांटते हुए कहा है, ''मस्तिष्क को एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला करघा कहा गया है। किसी तरह से यह 2520 लाख छड़ियों और शंकुओं में से विद्युत संकेत मनुष्य की आँखों तक पहुँचाता है, और क्षण–प्रति–क्षण, इन सूक्ष्म जानकारियों को चादर में एक चित्र के समान, जो कुछ उसके सामने हो, प्रस्तुत करता जाता है।'' इसी तरह से, डीएनए जो कि अनुवांशिकता का आधार है, ''इतना सकरा और लघु होता है कि मेरे शरीर की सारी कोशिकाएं बर्फ के एक टुकड़े में समा सकती हैं; तौभी यदि डीएनए को खोल कर एक साथ सिरे से सिरे जोड़ा जाए, तो यह तार पृथ्वी से लेकर सूर्य तक और फिर वापस चार सौ से भी अधिक बार खींचा जा सकता है।''[2]

मस्तिष्क एक आश्चर्यकर्म है जिसके विषय में इसे रूप देने वाले ने यह प्रश्न किया है,

> किस ने अन्त:करण में बुद्धि उपजाई,
> और मन में समझने की शक्ति किस ने दी (अय्यूब 38:36)।

आत्मा एक आश्चर्यकर्म है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के साथ संगति कर सकते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो प्रार्थना में हम पृथ्वी ग्रह को छोड़ कर विश्व के सिंहासन–कक्ष में प्रवेश करते हैं, और राजा के साथ बातचीत करते हैं।

परमेश्वर की बुद्धि आत्मिक सृष्टि में भी दिखाई देती है। उद्धार की योजना इसे प्रदर्शित करती है। पौलुस हमें यह स्मरण दिलाता है कि ''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे'' (1 कुरि. 1:21); और ''मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है'' (1 कुरि. 1:24)। अपनी बुद्धि में परमेश्वर ने बुद्धिमानों, बलवानों, और कुलीनों को नहीं चुना; उसने मूर्खों, निर्बलों, और तुच्छों को चुन लिया, अर्थात् संक्षेप में, जिनकी कोई हैसियत ही नहीं है – ताकि उसके इस कार्य के द्वारा सिर्फ उसी की महिमा हो (1 कुरि. 1:26–29)।

सारी सृष्टि ईश्वरीय बुद्धि के प्रमाणों से भरी हुई है। ये सारे कार्य उसकी बुद्धि को दर्शाते हैं।

परमेश्वर की बुद्धि, सिद्ध और पूर्ण है, इसका अर्थ यह है कि वह कभी भी गलती नहीं कर सकता। जैसा कि हम कभी कभी यह कहते हैं, वह इतना प्रेमी है कि वह किसी के साथ बुरा बर्ताव कर ही नहीं सकता, वह इतना बुद्धिमान है कि वह कोई गलती कर ही नहीं सकता। यह बात हमें प्रभु पर क्या ही भरोसा प्रदान करती है! चाहे हमें कुछ भी हो जाए, यह न ही कोई चूक है और न कोई संयोग। यदि हमारे पास उसकी बुद्धि होती तो हम भी अपने जीवन की ठीक वैसी ही योजना बनाते जैसी योजना उसने बनायी है।

इसका अर्थ यह है कि वह सर्वोत्तम मार्गदर्शन प्रदान करता है। हम उसकी अगुवाई पर भरोसा कर सकते हैं। अक्सर हम सब कुछ अपने ऊपर ले लेते हैं और अपने अनुसार काम करना चाहते हैं। यदि हममें बुद्धि होती, तो हम अपने लिए उसे निर्णय लेने देते। वही सच्चा बुद्धिमान परामर्शदाता है।

यह सत्य है कि हम कभी भी परमेश्वर के समान बुद्धिमान नहीं हो सकते, परन्तु यह कोई बहाना न बने; हमें उसके संसाधनों पर निर्भर रहते हुए अपने दिन–प्रतिदिन के जीवनों में उसकी बुद्धि का प्रदर्शन करना है। हमें ''साँपों की नाई बुद्धिमान और कबूतरों की नाई भोले'' बनना है (मत्ती 10:16)। हमारी पहचान वह बुद्धि हो जो ऊपर से मिलती है, एक ऐसी बुद्धि जो शुद्ध, शान्तिमय, शालीन, और व्यवहार में सरल हो, '' मिलनसार, कोमल, और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ, और पक्षपात और कपट रहित'' हो (याकूब 3:17)। हम बुद्धिमान हैं यदि हम प्रभु यीशु की शिक्षाओं को सुनते और उनके अनुसार चलते हैं (मत्ती 7:24)। हमें उन लोगों के साथ बुद्धिमानी के साथ व्यवहार करना चाहिए जो विश्वास से बाहर हैं (कुलु. 4:5)।

विश्वासी के जीवन में सच्ची बुद्धि की अन्य विशेषताएं भी झलकती हैं। एक विश्वासी, लोगों को बाहर का रूप देख कर नहीं जाँचता है। एक विश्वासी लोगों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से तारीफ पाने की आशा करता है। जिन चीज़ों को अधिकांश लोग घृणित समझते हैं, उन्हें परमेश्वर की दृष्टि से देखता है। वह परमेश्वर के वचन से सीखता है और इसलिए अनुभव की पाठशाला में बहुत से कड़वे अध्यायों को पढ़ने से बच जाता है। वह बहुत से परामर्शदाताओं से सलाह पाता और सुरक्षित रहता है। वह बदल न सकने वाली बातों को वैसे का वैसा स्वीकार कर शान्ति पाता है। इन बातों में, और अनगिनत बातों में, वह अपने आप

को एक बुद्धिमान व्यक्ति और उस व्यक्ति के सच्चे सन्तान के रूप में प्रगट करता है जिसके लिए आइज़क वाट्स ने लिखा है,

उसने तारे बनाए, वे स्वर्गीय मशालें,
वह उन्हें गिनता, और नाम लेकर बुलाता है;
उसकी बुद्धि अपार है, और ज्ञान का कोई अन्त नहीं,
इतना गहरा कि हमारे विचार डूब जाते हैं।

टिप्पणियाँ

1. लॉवेल पोन्टे, ''*हॉव कलर अफेक्ट्स योर मूड्स*'' पृ. 95।
2. डॉ. पॉल ब्रॉन्ड और फिलिप्प यान्सी, *फियरफुली एण्ड वन्डरफुली मेड,* पृ. 46।

–23–

परमेश्वर भला है

तू भला है, और भला करता भी है

– भजन 119:68

परमेश्वर इस अर्थ में भला या अच्छा है कि वह नैतिक रूप से सिद्ध है। वह सिर्फ अच्छा ही करता है, अर्थात्, भलाई और परोपकार। वह सर्वोत्तम और पूर्ण रीति से हर कपट और अयोग्य बातों से मुक्त है। वह दयालु, अनुग्रहकारी, उदार, प्रेमी, धीरजवन्त, क्षमाशील, और भरोसेमंद है – ये सारी बातें और अन्य भी उसकी अच्छाई में शामिल हैं।

दाऊद ने ''जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई'' का उल्लेख किया है (भजन 27:13)। उसने यह भी कहा है,

> आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है, जो तू ने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है,
> और अपने शरणागतों के लिये, मनुष्यों के सामने प्रगट भी की है! (भजन 31:19)।
> यहोवा की करुणा (या भलाई) से पृथ्वी भरपूर है (भजन 33:5)।

सब को न्यौता दिया गया कि ''परख कर देखो कि यहोवा कैसा भला है'' (भजन 34:8), उसकी भलाई सदा बनी रहती है (भजन 52:1)। पवित्रशास्त्र में यह बात बार बार दोहराई गई है:

> क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये,
> और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है (भजन. 100: 5)।
>
> यहोवा सभों के लिये भला है,
> और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है (भजन 145:9)
>
> यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है,
> और अपने शरणागतों की सुधि रखता है (नहूम 1 :7)

सी.एच. स्पर्जन ने यह दर्शाया है कि किस प्रकार से परमेश्वर की भलाई हमारे विश्वास के लिए एक आधारभूत बात है:

> ''वह भला है।'' यह उसे धन्यवाद देने के लिए एक पर्याप्त कारण है; भलाई उसका सार और स्वभाव है, और इसलिए हमें हमेशा उसकी स्तुति करते रहना है, चाहे हमें उससे कुछ मिल रहा हो या नहीं। जो परमेश्वर की स्तुति सिर्फ इसलिए करते हैं क्योंकि वह उनके साथ भलाई करता है, उन्हें अपने आप को ऊपर उठाते हुए परमेश्वर को इसलिए धन्यवाद देना है क्योंकि वह भला है। सच्चे अर्थों में, केवल वही भला है। 'और कोई भला नहीं, सिर्फ एक, और वह है परमेश्वर,' इसलिए हमारी कृतज्ञता का उत्तम भाग उसका है। अन्य लोग भले प्रतीत होते हैं, परन्तु वह तो भला है। यदि अन्य लोग एक हद तक भले है, तो उसकी भलाई की कोई सीमा नहीं है। जब अन्य लोग हमारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, तो इससे हमें परमेश्वर को हृदय की गहराई से धन्यवाद देने के लिए और भी प्रेरित होना चाहिए, क्योंकि वह भला है, और जब हम स्वयं इस बात को महसूस करते हैं कि हम भला बनने से कोसों दूर हैं, तो हमें और अधिक श्रद्धा के साथ उसे धन्य कहना चाहिए क्योंकि वह भला है। हमें उसकी भलाई के प्रति ज़रा भी शंका अपने मन में नहीं आने देना चाहिए, अन्य बातें भले ही शंकास्पद हो सकती हैं, परन्तु यह बात पूरी रीति से निश्चित है कि परमेश्वर भला है। भले ही अलग अलग समय में वह अलग अलग तरीके से काम करे, परन्तु उसका नाम वही है, और वह सदा भला है। सिर्फ इतना ही नहीं कि वह भला था और आगे भी भला रहेगा, परन्तु वह भला है, उसकी दूरदर्शी योजना वैसी ही रहे, जैसी उसने बनाई है। इसलिए, वर्तमान में, भले ही हमारे जीवन के आकाश में काले बादल मण्डरा रहे हों, उसके नाम का धन्यवाद करें![1]

परमेश्वर की भलाई सृष्टि, उसकी दूरदर्शी योजना और प्रबन्ध, और छुटकारे के कार्य में देखी जा सकती है। सृष्टि की सुन्दरता की ओर ध्यान दें – पर्वत, झील, वृक्ष, फूल, सूर्योदय, तारे, पशु, पक्षी, और मछलियाँ इत्यादि। उसकी दूरदर्शी योजना और प्रबन्ध में उसकी भलाई की ओर ध्यान दें – वह किस तरह से अपनी सारी सृष्टि को खिलाता, बचाता, उसकी अगुवाई करता, चिन्ता करता, और सम्भालता है। और सबसे बड़ी बात, छुटकारे के कार्य में उसकी भलाई की ओर ध्यान दें – उसने स्वर्ग के सर्वोत्तम को पृथ्वी के बदतर के लिए मरने भेजा।

जे.आई. पैकर कहते हैं कि ''कुछ लोगों के लिए परमेश्वर कुछ बातों और कुछ लोगों के लिए सब बातों में भला है।'' उसका *सामान्य* अनुग्रह सब लोगों पर ''सृष्टि, दूरदर्शी योजना और प्रबन्ध, और इस जीवन की सारी आशीषों'' में दिखाई देता है। उसका *विशेष* अनुग्रह विश्वासियों पर उद्धार की आशीषों में दिखाई देता है।

इसलिए भजन का लिखने वाला कहता है, ''लोग यहोवा की करुणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह सब मनुष्यों के लिए करता है, उसका धन्यवाद दें'' (भजन 107:8)। यदि हम अपने जीवन में उसकी भलाई के प्रमाणों की ओर पर्याप्त समय ठहर कर ध्यान देंगे, तो हम आराधना और कृतज्ञता के भाव से और अधिक भर जाएंगे। समस्या यह है कि हम इन सारी बातों को बहुत हल्के में लेते हैं और हमारा हृदय ठण्डा और प्रतिक्रियाहीन हो जाता है।

उसकी भलाई पर मनन करने पर हमारे भीतर दूसरों की भलाई करने की इच्छा उत्पन्न होनी चाहिए – भलाई और परोपकार करें और विश्वासयोग्य मित्र बनें। हम कोमलता, उदारता, क्षमाशीलता, सहानुभूति, शालीनता दिखाने और पहुनाई करने के द्वारा अपनी भलाई को प्रगट कर सकते हैं।

एक प्रश्न सामने आ सकता है, ''यदि परमेश्वर इतना भला है, तो उसने शैतान को क्यों बनाया?'' इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर ने उसे एक ऐसे स्वर्गदूत के रूप में बनाया था जो अपने सारे चालचलन में निर्दोष था (यहेज.28:15) परन्तु नैतिक रूप से वह स्वतंत्र था और उसे अधिकार था कि परमेश्वर की आज्ञा माने या न माने। जब इस ''भोर का तारा'' ने परमेश्वर के सिंहासन को हथियाना चाहा, तो वह स्वर्ग से गिराया गया (यशा. 14:12–15)। यह परमेश्वर की गलती नहीं थी कि उसका बनाया हुआ प्राणी उसके विरुद्ध विद्रोह करे।

प्रभु चाहता है कि उसकी भलाई सब मनुष्यों पर प्रगट हो, और विशेष कर के विश्वास के घराने पर। हमें अपने शत्रुओं के साथ भी भलाई करना है, यह एक अलौकिक आचरण है। साथ ही, हम यह भलाई कुछ पाने की अपेक्षा बिना ही करना चाहिए।

हम यह जानते हैं कि हम अपने भले कामों के कारण नहीं बचाए गए हैं, परन्तु भले काम करने के लिए बचाए गए हैं, अर्थात्, इसलिए कि हममें भले काम उत्पन्न हों, हम भले कामों के उदाहरण बनें, या दोरकास के समान, भले कामों से परिपूर्ण हों। तीतुस हमें यह स्मरण दिलाता है कि हमें भले काम करते रहना सीखना चाहिए, कि हम त्वरित आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें,''ताकि (हम) निष्फल न रहें'' (2:14)।

एक और प्रश्न सामने आ सकता है, ''यदि परमेश्वर भला है, तो ऐसा क्यों कहा जाता है कि बुराई, बीमारी, दु:ख, त्रासदी, मृत्यु, इत्यादि उसी की ओर से उत्पन्न होते हैं?'' उदाहरण के लिए यशायाह 45:7 में, वह कहता है, ''मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को

रचता हूँ।'' यहाँ पर कुछ संस्करणों में (केजेवी) ''विपत्ति'' के समानार्थी के रूप में ''बुरा'' का प्रयोग किया गया है। क्या परमेश्वर ''विपत्ति'' भेजता है? यह बात स्पष्ट रीति से समझ लेना चाहिए कि परमेश्वर बुराई या किसी भी बुरी चीज़ का स्त्रोत नहीं हो सकता। पवित्रशास्त्र के कुछ स्थलों को पढ़ कर अवश्य ही ऐसा प्रतीत हो सकता है, परन्तु इसका सही स्पष्टीकरण यह है कि इन स्थलों में जिन कार्यों को करने का श्रेय परमेश्वर को दिया गया है वास्तव में वे ऐसे कार्य हैं जिनके होने की सिर्फ अनुमति वह देता है। अर्थात्, वह अपने प्राणियों, मनुष्यों और स्वर्गदूतों को ऐसे भी काम करने दे देता है जो मान्य या स्वीकार्य नहीं हैं, परन्तु उसके बाद वह इन (पूरी हो चुकी हुई) बुरी बातों पर हावी हो कर उन्हें ऐसी दिशा देता है कि अन्त में उनका परिणाम उसकी महिमा और उसके लोगों की भलाई ही हो।

तीसरा प्रश्न जो सामने आता है वह है, ''यदि परमेश्वर भला है, तो वह बुराई को दण्ड क्यों देता है?'' स्टीफन शेरनॉक ने इस प्रश्न का उत्तर यह प्रश्न पूछते हुए दिया है, ''परमेश्वर भलाई का मित्र कैसे हो सकता है यदि वह बुराई का शत्रु नहीं है?'' यह बुराई को दण्ड देने के लिए भलाई का एक चिन्ह है। उसे बिना रोक-टोक और बिना दण्डित किए छोड़ देना उन सारी बातों का इंकार करना है जो भली हैं। जॉन ग्रीनलीफ विट्टीअर परमेश्वर की भलाई का आश्वासन इन पँक्तियों में दिया है:

> तौभी, छल-कपट की भरमार में,
> और तूफान और बाढ़ के आक्रमणों में,
> मेरा प्राण एक स्थिर भरोसे पर लगा हुआ है;
> मैं जानता हूँ कि परमेश्वर भला है!

टिप्पणी

1. चार्ल्स हेड्डुन स्पर्जन, ट्रेज़री ऑफ द बाइबल, 5:320।

–24–

उसकी अपार उदारता

परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये
सब कुछ बहुतायत से देता है . . . आशा . . . रखें।

– 1 तीमुथियुस 6:17

जी हाँ, परमेश्वर की उदारता अविश्वसनीय है। अक्सर हम उसकी उदारता को बहुत हल्के में लेते हैं। हमें लगातार अपने आप को यह स्मरण दिलाना चाहिए कि वह हमारे उपयोग के लिए सब कुछ बड़ी भरपूरी से देता है।

प्रकृति में उसकी उदारता की ओर ध्यान दें। उसने 250 हजार विभिन्न बीजवाले पौधे हमें दिए हैं, जिसमें से पचास हजार बड़े वृक्ष हैं – सदाबहार , बांझ, द्विफल, बेदमजनू, सनौबर, और ऐसे ही अनेक। ये वृक्ष हमारे ग्रह को अति सुन्दर बनाते हैं, अन्यथा पृथ्वी एक नीरस भूमि दिखाई देती।

परमेश्वर ने आठ हजार छः सौ विभिन्न फूल बनाए हैं कि हम उनका आनन्द उठाएं। ऑर्किड को ही देखें; इसकी दो हजार प्रजातियाँ हैं। सुलैमान का वैभव भी इस्राएल की पहाड़ियों के नीचे उगे ढेर सारे जंगली सोसनों के आगे फीका था। हम उस आनन्द को नाप नहीं सकते जो हमें गुलाब, लिली, बोगनविला, मोगरा, सेवंती और अन्य फूलों को देख कर मिलता है।

हमें फलदायी वृक्षों और बेर की झाड़ियों को भी नहीं भूलना चाहिए। सेब हर स्थान का पसन्दीदा फल है। पेड़ पर पके आम की स्वाद से मिलने वाला मजा और कहाँ मिलेगा, खाते खाते जिसका रस हमारे मुँह से बहने लगता है और आसपास को महका देता है? केला, संतरा, अंगूर, छुहारा, और बेर के क्या कहने! और ताजे ताजे रसीले जामुन को खाने से कौन अपने आप को रोक सकता? चीकू और लीची का स्वाद भी मजेदार है।

पक्षियों की दस हजार प्रजातियाँ पाई जाती हैं, हर पक्षी परमेश्वर की एक अद्‌भुत सृष्टि है। गौरैया का फुदकना, बाज का झपटना, बगुले की लम्बी गर्दन, ये सब हमें विस्मित कर देते हैं। प्रवासी पक्षियों का इधर–उधर जा जा कर कुछ समय के लिए बसना और गूटर–गू करते कबूतरों का घरों में घोंसले बना कर रहना सब कुछ अचम्भित कर देने वाला है।

ऐसा अनुमान है कि कांटे वाली मछलियों की बीस हजार और अन्य प्रकार की दस हजार प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से अनेक आकर्षण और सुन्दरता के अद्‌भुत नमूने हैं, और अनेक हमारे स्वादिष्ट आहार के रूप में उपयोग में लाई जाती हैं।

सब्जियाँ पोषक तत्वों से भरपूर हैं, अलग अलग रंग और अलग अलग प्रकार, और अलग अलग स्वाद की सब्जियाँ हमारे दैनिक आहार का हिस्सा हैं – आलू, गाजर, गोभी, मटर, बरबट्‌टी, शलजम, और भुट्‌टे। यह सूची कभी समाप्त नहीं होगी।

स्वाद और खूश्बू के बिना, जीवन नीरस और बेजान रहता। परमेश्वर ने चॉकलेट का स्वाद और इत्र की खूशबू भी बनाई।

हमारे उदार परमेश्वर ने आकाश को तारों से भर दिया, जिनमें से अरबों को हम शायद कभी देख तक नहीं पाएंगे। नक्षत्र–शास्त्र की तुलना में शायद और कोई ऐसा विज्ञान नहीं है जो परमेश्वर की महानता को ऐसी व्यापकता के साथ प्रगट करता हो, और साथ ही साथ यह हमारी निरर्थकता को भी दर्शाता है।

और फिर सूर्यास्त की सुन्दरता, पहाड़ों का वैभव, और समुद्र के विस्तार का वर्णन करने के लिए हमारे पास शब्द ही नहीं है। परमेश्वर की साँस से रची गई सृष्टि के आयामों या प्रकारों को मस्तिष्क में समा पाना किसी मनुष्य के वश में नहीं है।

इसलिए अंग्रेजी भजनों के पितामह, आइज़क वाट्‌स के हृदय से गीत के ये स्वर फूट पड़े:

मैं प्रभु की भलाई का गीत गाता हूँ
जिससे पृथ्वी अन्न–आहार से भर गई,
उसने अपने वचन से प्राणियों की सृष्टि की,
और कहा, कि अच्छा है।
प्रभु, तेरे आश्चर्यकर्मों का कैसा अद्‌भुत प्रदर्शन किया जाता है
मैं जहाँ कहीं अपनी आँखें ले जाता हूँ,
जब मैं भूमि को देखता हूँ
या फिर आकाश को निहारता हूँ!

परन्तु, जबकि बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने प्रकृति में हमारे प्रति हद से अधिक उदारता दिखाई है, तो यह आत्मिक जीवन में उसकी उदारता पर अधिक जोर देती है।

भजन का लिखने वाला हमें यह स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के विचार समुद्र के बालू की किनकों से भी अधिक हैं (भजन 139:18)। यदि उसने यह कहा होता कि मुट्ठी भर बालू के किनकों से अधिक, तो भी यह अद्‌भुत बात होती; परन्तु उसने कहा है, कि समुद्र के सारे बालू के किनकों से भी अधिक।

परमेश्वर सब मांगने वालों को उदारता से बुद्धि देता है (याकूब 1:5)। बाइबल पढ़ते समय हमें क्रिया–विशेषणों (जैसे *'उदारता'),* विशेषणों (जैसे बहुतायत का वर्णन करने वाले शब्द), और क्रियाओं (जैसे 'मुक्तहस्त या बेहिसाबी से देना') आदि की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

हमारा पिता ''प्रति दिन हमारा बोझ उठाता है'' (भजन 68:19)। यह ऐसा है मानों हम आशीषों के भार से दब गए हैं। क्या ही अद्‌भुत बोझ!

परमेश्वर की उदारता का सबसे बड़ा प्रदर्शन तब किया गया जब उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया। जब उसने स्वर्ग को उसके सबसे कीमती खजाने से खाली कर दिया, जब उसने स्वर्ग के सर्वोत्तम को पृथ्वी के बदतर के लिए दे दिया, इससे बड़ी भेंट और कुछ नहीं हो सकती।

हम प्रभु यीशु मसीह की उदारता को इस बात में जानते हैं, कि यद्यपि वह धनी था, वह स्वेच्छा से कंगाल बना ताकि उसके कंगाल हो जाने से हम धनी हो जाएं (2 कुरि. 8:9)। उदारता का यही उदाहरण प्रभु यीशु ने हमारे सामने रख छोड़ा है।

परमेश्वर अनुग्रह करने में उदार है। जब पाप बहुतायत से हुआ, तो अनुग्रह और भी बहुतायत से हुआ (रोमि. 5:20)। पौलुस कहता है कि ईश्वर का अनुग्रह बहुतायत से हुआ (1 तीमु. 1:14)। यह एक विशाल सागर है। हम बीत्ते भर के पात्र को लिए हुए इस सागर के किनारे खड़े हो जाते हैं; इन पात्रों को भरते हैं, परन्तु इससे सागर खाली नहीं हो जाता।

परमेश्वर दया करने में उदार है। यदि ऐसा नहीं होता, तो हम बहुत पहले ही समाप्त हो चुके होते। उसने हमें हमारे अपराधों का दण्ड नहीं दिया। हम उसकी दया का अनुभव जीवन भर करते हैं, और यह हमारी संतानों पर भी बनी रहती है।

जब हमारा नया–जन्म होता है, तब वह अपनी आत्मा को हमारे ऊपर उण्डेलता है

(तीतुस 3:6)। इसे उण्डेले जाने के साथ ही पवित्र आत्मा की सारी सेवकाइयाँ भी हम पर उण्डेली जाती हैं। सचमुच में हमें परमेश्वर के प्रति कितना ऋणी होना चाहिए!

साथ ही साथ हमारे प्रभु यीशु मसीह का यह वचन भी पूरा होता है: ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)।

भले ही उसके कार्य के लिए हमें दुखों और कठिनाइयों का सामना करना पड़े, परन्तु इसका प्रतिफल बहुतायत से मिलता है। यह हर एक क्लेश के लिए पर्याप्त है (2 कुरि. 1:5)।

परमेश्वर हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति अपनी महिमा के धन के अनुपात में प्रभु यीशु मसीह में करता है (फिलि. 4:19)। वह ''सब प्रकार का अनुग्रह बहुतायत से'' देता है ताकि ''हर एक भले काम के लिए'' हमारे ''पास बहुत कुछ हो'' (2 कुरि. 9:8)। वह ''ऐसा सामर्थी है, कि वह हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (इफि. 3:20)।

अन्तिम बात, जीवन की यात्रा के समापन पर, वह ''हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ'' बहुतायत में प्रवेश करने देता है (2 पत.1:11)।

चूंकि हम उदार परमेश्वर की सन्तान हैं, यह हमारा कर्तव्य और विशेषाधिकार है कि हम इस गुण को प्रगट करें। यदि हम प्रभु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं, हम अपने आप को कंगाल बनाएंगे ताकि दूसरे लोग धनी हो जाएं (2 कुरि. 8:9)। हम उस विधवा के समान बनना पसन्द करेंगे जिसने अपनी भरपूरी में नहीं बल्कि अपनी कंगाली में दिया (मत्ती 12:41–44)। और उन मकिदुनी विश्वासियों के समान भी जो आशा से बढ़ कर दिया करते थे (2 कुरि. 8:3)। ऐसा करने के द्वारा हम अपने उद्धारकर्ता के इन वचनों की सच्चाई को महसूस कर सकेंगे, ''लेने की अपेक्षा देना, ज्यादा धन्य है'' (प्रेरित 20:35)।

मानवीय भाषा प्रभु की बहुआयामी उदारता का वर्णन कर पाने के लिए अधूरी है। इसका चित्रण कर पाना अत्यंत विस्मयकारी है। परन्तु हम जो कुछ इसके विषय में जानते हैं वह हमें कुड़कुड़ाने से स्वयँ को रोकने और परमेश्वर को अपने सारे हृदय से धन्यवाद देने के लिये प्रेरित करे। डॉर्थी ग्रिम्स ने अपनी कविता ''गॉड्स एक्ट्रावेगेन्स'' में कहा है,

मनुष्य की दृष्टि की पहुँच से भी अधिक फैला आकाश,
मनुष्य की जलयात्रा की पहुँच से अधिक विस्तृत समुद्र,
देखकर उसे सहन करने से बाहर चमकदार सूर्य,
गिनती कर सकने से बाहर तारेगण,
साँसों के लिये उसकी ज़रूरत से अधिक वायु,
बीज बोने की उसकी क्षमता से अधिक उत्पादन,
उसकी समझ से परे अनुग्रह,
और उसके ज्ञान से परे प्रेम ।।

टिप्पणी

1. चाकलेट का स्वाद पसन्द करने वालों के लिए यह एक रोचक जानकारी है कि स्वीडिश वनस्पतिशास्त्री (बोटोनिस्ट) कार्ल वॉन लिन्ने (लिन्नेअस, 1707–78), जिन्होंने पेड़–पौधों और जीव–जन्तुओं को लैटिन नाम दिए थे, उन्होंने चाकलेट को *थिओब्रोमा* (गॉडफूड) नाम दिया था।

–25–

निष्पक्ष, न्यायी, सीधा

हे यहोवा तू धर्मी है,
और तेरे नियम सीधे हैं।

– भजन 119:137

परमेश्वर पूर्णत: धर्मी है। वह हमेशा ही निष्पक्षता और बराबरी का व्यवहार करता है। वह हमेशा वही करता है जो सही और ठीक है। बल्कि, धार्मिकता को समझने का एक सरल तरीका यह है कि हम जान लें कि परमेश्वर वही करता है जो सही है – इसमें कोई अपवाद नहीं है।

दानिय्येल ने परमेश्वर की धार्मिकता का बहुत सुन्दर वर्णन किया है:

> हे प्रभु तू धर्मी है, परन्तु हम लोगों को आज के दिन लज्जित होना पड़ता है, अर्थात्, यरूशलेम के निवासी आदि सब यहूदी, क्या समीप, क्या दूर के सब इस्राएली लोग, जिन्हें तू ने उस विश्वासघात के कारण जो उन्होंने तेरा किया था, देश देश में बरबस कर दिया है, उन सभों को लज्जित होना पड़ेगा . . . इस कारण यहोवा ने सोच विचार कर हम पर विपत्ति डाली है; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा जितने काम करता है उन सभों में धर्मी ठहरता है, परन्तु हम ने उसकी नहीं सुनी (दानिय्येल 9:7,14)।

यहाँ पर भविष्यद्वक्ता ने प्रभु के द्वारा किए गए सारे कार्यों के लिए उसकी बड़ाई की है, भले ही इसमें से अधिकांश बातें लोगों के लिए एक कड़वी दवा सिद्ध हुईं। वह कुछ इस प्रकार से कह रहा है, ''प्रभु, तू धर्मी है, और तू ने निष्पक्षता के साथ अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप कार्य किया है। हमें वही मिला जिसके हम लायक थे!''

प्रभु कहता है,

> तुम प्रचार करो और उनको लाओ; हां, वे आपस में सम्मति करें,
> किस ने प्राचीनकाल से यह प्रगट किया?

किस ने प्राचीनकाल में इसकी सूचना पहिले ही से दी?
क्या मैं यहोवा ही ने यह नहीं किया?
इसलिये मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है,
धर्मी और उद्धारकर्ता ईश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है (यशायाह 45:21)।

निष्पक्ष धर्मी का एक समानार्थी है। प्रभु एक निष्पक्ष परमेश्वर है और एक उद्धारकर्ता है। इस गुण में उसकी तुलना और किसी ईश्वर से नहीं हो सकती।

पौलुस परमेश्वर की धार्मिकता पर बात करना पसन्द करता था। उदाहरण के लिए, रोमियों 3 में, वह यह समझाता है कि उद्धार के सुसमाचार की योजना किस प्रकार से एक ईश्वरीय दुविधा को हल करती है। यह बताती है कि किस प्रकार से एक धर्मी परमेश्वर अधर्मी पापियों को धर्मी ठहरा कर भी अपने इस कदम में धर्मी ठहर सकता है। वह पाप को अनदेखा नहीं करता, न ही इसे यूं ही छोड़ देता है। उसने हमारे बदले में उसके प्रिय पुत्र की मृत्यु में पाप का पूरा पूरा दण्ड चुका दिया। अब परमेश्वर उन सब को धर्मी ठहरा सकता है जो उसके पुत्र को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। ईश्वरीय दुविधा के इस समाधान को भजन लेखक अलबर्ट मिडलाने ने काव्य–रूप में इस तरह से प्रस्तुत किया है:

परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता को
उद्धारकर्ता के लोहू में हमने देखा है;
मसीह के क्रूस पर हम पाते हैं
उसकी धार्मिकता और उसका अद्‌भुत अनुग्रह।

परमेश्वर पापियों को यूं ही नहीं मुक्त कर सकता,
पाप के कारण पापी को मरना आवश्यक है;
परन्तु मसीह के क्रूस में हम पाते हैं
कि परमेश्वर ने किस तरह से हमें धार्मिकता के साथ बचा लिया।

पाप उद्धारकर्ता पर लाद दिया गया,
उसके लोहू से पापी का कर्ज उतार दिया गया;
सख्त न्याय की और कोई मांग रह नहीं गई
और दया अपना द्वार खोल सकती है।

विश्वास करने वाला पापी अब मुक्त है,
वह कह सकता है, ''उद्धारकर्ता मेरे लिए मरा'';
वह प्रायश्चित के लोहू की ओर इशारा कर सकता है,
और कह सकता है, ''इसके द्वारा परमेश्वर से मेरा मेल हुआ।''

भजन संहिता का लेखक कहता है, ''करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है'' (भजन 85:10)। शायद हमने ध्यान दिया हो या नहीं, यहाँ पर भजन संहिता का लेखक कलवरी की ओर संकेत कर रहा है। वहाँ से अब करुणा बेरोकटोक और सेंतमेंत विश्वास करने वाले पापियों के लिए बह सकती है क्योंकि सच्चाई की सभी मांगों को पूर्ण कर दिया गया है। मेल का बलिदान चढ़ाया जा सकता है क्योंकि पाप की समस्या का हल पूरी धार्मिकता के साथ कर दिया गया है। क्रूस पर, बहुत ही विशेष रीति से, परमेश्वर के गुण का आपस में प्रेमपूर्ण और आनन्दपूर्ण मिलन हुआ है।

परमेश्वर की धार्मिकता की सच्चाई हमारे जीवन में एक व्यावहारिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए तैयार की गई है। यदि वह न्यायी, निष्कपट, और निष्पक्ष है, तो यह आवश्यक है कि हम भी ऐसा ही व्यवहार करें, क्योंकि हम उसके प्रतिनिधि हैं। किसी भी मसीही का एक चिन्ह यह भी होता है कि वह धार्मिकता का व्यवहार करता है (1 यूहन्ना 3:10)। हमें हमेशा एक ऐसे विवेक के लिए परिश्रम करना है जो परमेश्वर और अन्य लोगों के प्रति किसी भी अपराधबोध से मुक्त हो। इसका अर्थ यह होगा कि हमें अपने सारे व्यवहार धार्मिकता के साथ करने हैं। हमें पूरी तरह से ईमानदार बनना है; हमें अपने वचनों पर कायम रहना है। हम घटिया काम, आयकर चोरी, घूसखोरी, छल, कानून तोड़ना, या गलत माप या तराजू का प्रयोग न करें। हमें पक्षपात नहीं करना है, और यह सुनिश्चित करना है कि हमारे कामों के द्वारा न्यायी और अन्यायी दोनों का लाभ हो। हमें मुँह देखा न्याय नहीं करना है; हमें धर्म के साथ न्याय करना है। हमें अपने लाभ की ही चिन्ता नहीं करनी है, और अपनी बात से नहीं पलटना है चाहे इसके कारण हमें हानि ही क्यों न उठानी पड़े (भजन 15:4)। इसका अर्थ यह है कि हमें समझौतों, संधियों, और व्यापार के व्यवहारों में ईमानदारी बरतना है, भले ही हमें इसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े।

यह भी, कि हम धार्मिकता के साथ परमेश्वर की उपासना करें। हमें धन्यवाद देना है कि उसने धार्मिकता के साथ हमारा उद्धार किया है, हमारे उद्धार के बाद भी वह निरन्तर हमें धार्मिकता के साथ क्षमा करता जाता है (1 यूहन्ना 1:9), और हमारे साथ अपने सारे व्यवहार में वह धर्मी है। चाहे वह हमें दुःख भी दे, तो वह यह भी धार्मिकता के साथ करता है। यह जान लेना एक अपार आशीष का विषय है कि हमारे परमेश्वर की धार्मिकता असीमित है।

परमेश्वर की धार्मिकता व्यावहारिक रूप से उसके न्याय की समानार्थी है,[1] और इस कारण उद्धार न पाए हुओं के लिए इस सच्चाई के पीछे बहुत सी गम्भीर बातें पाई जाती हैं। जब प्रभु बड़े श्वेत सिंहासन पर बैठेगा, तो पूरी धार्मिकता के साथ न्याय करेगा। उसका

निर्णय सत्य पर, पूर्ण सत्य पर, और सत्य के सिवाय और किसी भी बात पर निर्भर नहीं करेगा। वह किसी के कद की ओर ध्यान नहीं देगा। वह लोगों के छिपे हुए पापों के साथ जानबूझ कर किए गए और अनजाने में किए गए पापों को ध्यान में रख कर न्याय करेगा। उसका निर्णय हर बात के उसके सिद्ध ज्ञान पर आधारित होगा और पूरी तरह से निष्पक्ष होगा। कोई भी पापी मनुष्य कभी भी परमेश्वर से न्याय की मांग न करे। यदि हमारा न्याय किया गया होता, तो हम दोषी ठहराए जा कर दण्ड के योग्य ठहरते। हमें सिर्फ अनुग्रह की आवश्यकता है! जैसा कि काउन्ट निकोलस वोन ज़िनज़ेन्डोफ ने बिल्कुल उपयुक्त शब्दों में कहा है,

> यीशु, तेरा लोहू और तेरी धार्मिकता
> मेरी सुन्दरता है, मेरा महिमामय पहिनावा है;
> आग से धधकते हुए संसार के बीच, इन लड़ाइयों के बीच,
> मैं आनन्द के साथ अपना सिर उठाऊंगा।

टिप्पणी

1. सामान्यत: ''धर्मी'' और ''न्यायी'' पुराना नियम में समान इब्रानी शब्द–समूह और नया नियम में समान यूनानी शब्द–समूह के अनुवाद हैं।

–26–

उसकी ईश्वरीय जलन

क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है,
वह जल उठनेवाला परमेश्वर है!

– निर्गमन 34:14

यदि हम क्षण भर के लिए ही विचार करें, तो हम जान लेंगे कि जब हमें किसी बात पर जलन होती है, तो यह या तो अच्छी हो सकती है या फिर बुरी। जब एक पति को यह पता चलता है कि कोई दूसरा पुरुष उसकी पत्नी का प्रेम उससे चुराने का प्रयास कर रहा है, तो उसकी जलन उचित है। परन्तु जब एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की सम्पत्ति या स्त्री को देख कर जलता है, तो ऐसे जलन का कोई बहाना नहीं हो सकता।

परमेश्वर जलन रखने वाला परमेश्वर है, परन्तु वह अच्छे अर्थों में जलन रखता है। वह अपने लोगों का प्रेम और उनकी निष्ठा किसी के साथ बाँट नहीं सकता, और उनके स्नेह से वंचित होने पर उसे जलन होती है। उसकी जलन पूरी तरह से नि:स्वार्थ है; वह जानता है कि झूठे देवताओं के पीछे जाना उसके लोगों के लिए अच्छा नहीं है।

प्रभु की जलन के विषय में अधिकांश स्थल इस्राएल द्वारा की जाने वाली मूर्तिपूजा से सम्बन्धित हैं। यह आत्मिक वेश्यागमन था। परमेश्वर की जलन मोम की तरह गर्म होती है।

ईश्वरीय जलन से सम्बन्धित ढेर सारे स्थलों में से कुछ स्थल नीचे दिए गए हैं:

> मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं (निर्ग. 20:5)।
>
> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करनेवाली आग है; वह जल उठनेवाला ईश्वर है (व्य.वि. 4:24)।
>
> उन्होंने पराए देवताओं को मान कर उसमें जलन उपजाई; और घृणित कर्म करके उसको रिस दिलाई (व्य.वि. 32:16)।

क्योंकि उन्होंने ऊँचे स्थान बना कर उसे रिस दिलाई,
और खुदी हुई मूर्तियों के द्वारा उस में जलन उपजाई (भजन 78:58)।

हे यहोवा तू कब तक लगातार क्रोध करता रहेगा?

तुझ में आग की सी जलन कब तक भड़कती रहेगी? (भजन 79:5)

अपने पवित्र नाम के लिए मुझे जलन होगी (यहे. 39:25)।

यहोवा जल उठने वाला और बदला लेनेवाला ईश्वर है (नहू. 1:2)।

क्या हम प्रभु को रिस दिलाते हैं? (1 कुरि. 10:22)।

अन्तिम प्रश्न बिल्कुल उपयुक्त है, जिसमें पौलुस पहले यह पूछता है, ''क्या हम प्रभु को रिस दिलाते हैं?'' सांसारिक तंत्र लगातार यह प्रयास कर रहा है कि कलीसिया को अपने उद्धारकर्ता के प्रति पहले वाले प्रेम से भटका दे। आँखों की अभिलाषा, शरीर की अभिलाषा, और जीविका का घमण्ड विश्वासी को बहकाने के लिए पूरी तरह से तैयार खड़े रहते हैं। भले ही हमारे सामने खुदी हुई मूरतों की आराधना करने की परीक्षा न आती हो, परन्तु धन, सामर्थ्य, यश, और भोग–विलास भी हमारे सामने वास्तव में मूरत बन कर आ सकते हैं।

यह जान कर, कि परमेश्वर यह कभी सहन नहीं करेगा कि हम उसके प्रति अपनी एकनिष्ठ भक्ति से उसे वंचित करें, हमें उसके प्रति विश्वासयोग्य बनने के लिए प्रेरित होना चाहिए:

प्रभु हमारा परमेश्वर एक जलन रखने वाला ईश्वर है,
वह जलन की आग के साथ प्रेम रखता है;
खुदी हुई मूरतें और पराए देवी–देवता
उसके कोप को भड़का देते हैं।

परन्तु उसका प्रेम एक नि:स्वार्थ प्रेम है
उनके लिए जो लोहू से छुड़ाए गए हैं;
उसे हमारे हृदय में पहला स्थान चाहिए
क्योंकि इसमें हमारी ही भलाई है।

–27–

उसकी सच्चाई महान है

तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँची है।

– भजन 36:5

परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता से यह गुण निकटता से जुड़ा हुआ है, उसकी सच्चाई, अर्थात्, उसकी विश्वासयोग्यता, उसका एक अद्वितीय गुण है, और थोड़ा ही सही, यह गुण हमारे भीतर भी विकसित हो सकता है। प्रभु सारी बातों में पूरी तरह से विश्वासयोग्य है, वह अपने वचन के प्रति पूरी तरह से सच्चा है। उसकी कोई भी प्रतिज्ञा कभी अधूरी नहीं रह सकती। वह कभी झूठ नहीं बोलता, न ही वह किसी को धोखा दे सकता है। अपने ईश्वरीय सिद्धता के कारण, परमेश्वर का वचन सम्पूर्ण विश्व की सबसे भरोसेमंद चीज़ है। यदि परमेश्वर कुछ कहता, तो उस पर विश्वास करने में ज़रा भी जोखिम नहीं है। बल्कि, उस पर विश्वास न करना मूर्खता है। सच्चाई वही है जो परमेश्वर कहता है।

बाइबल में परमेश्वर की सच्चाई या विश्वासयोग्यता से सम्बन्धित ढेर सारे पद पाए जाते हैं:

> इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है (व्य.वि. 7:9)।
>
> तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है (भजन 119:90)।
>
> हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है,
> क्योंकि उसकी दया अमर है।
> प्रति भोर वह नई होती रहती है;
> तेरी सच्चाई महान है (विला.3:22 23)।
>
> परमेश्वर सच्चा है; जिस ने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है (1 कुरि. 1:9)।
>
> परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको (1 कुरि. 10:13)।

> यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है (1 यूहन्ना 1:9)।
>
> . . . यीशु मसीह . . ., जो विश्वासयोग्य साक्षी . . . है (प्रका. 1:5)।

विचार करें कि परमेश्वर की सच्चाई के कारण हम उसके कितने ऋणी हैं! उसकी सच्चाई के कारण हम यह जान सकते हैं कि उद्धार के लिए उसका बताया मार्ग सच्चा है। उसकी सच्चाई के कारण हम उसके वचन के माध्यम से अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं। उसकी सच्चाई के कारण हम यह जान सकते हैं कि हमारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं। परमेश्वर की सच्चाई उसकी सारी भविष्यद्वाणियों और प्रतिज्ञाओं की पूर्णता की गारंटी है। उसकी सच्चाई के कारण ही हम दिन प्रतिदिन बचाए जाते हैं। हम उत्पत्ति 8:22 में उसके प्राणियों के प्रति उसकी सच्चाई या विश्वासयोग्यता के विषय में देख सकते हैं:

> अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी,
> तब तक बोने और काटने के लिए
> समय, ठण्ड और पतन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात,
> निरन्तर होते चले जाएंगे।

बेहतर होगा कि हम यह प्रश्न करें, ''परमेश्वर की सच्चाई के कारण हम किस बात में उसके ऋणी नहीं है?''

परन्तु इस ईश्वरीय गुण को सिर्फ एक आरामदायक सहारे के रूप में नहीं, परन्तु हमें प्रेरित करने (धकियाने) वाले एक अंकुश की तरह प्रयोग करना चाहिए। एक दूसरे के साथ व्यवहार करते समय हमें सच्चे और विश्वासयोग्य बनना है, यदि हमने किसी को मिलने का समय दिया है तो हमें उसे धोखा नहीं देना है या उसे प्रतीक्षा नहीं करवानी है, हमें प्रतिज्ञा को पूरा करने में विश्वासयोग्य बनना है। हमें अपने विवाह की प्रतिज्ञाओं के प्रति सच्चे बने रहना है। हमें अपने वचन से बन्धे रहना है। एक बार समर्पण कर देने पर हमें उस पर कायम रहना है, भले ही हमें इसके लिए हानि उठानी पड़े (भजन 15:4)। हमें पूरी तरह से ईमानदार बनना है, बढ़ा–चढ़ा कर बात करने या आधी सच्चाई बताने की आदत से बचना है। हमें घर में, कलीसिया में, और अपने कार्य–स्थल में विश्वासयोग्यता दर्शाना है, और ऐसा जीवन जीना है कि एक दिन हम प्रभु को यह कहते हुए सुन सकें, ''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास'' (मत्ती 25:21,23)। थॉमस ओ. किशोम ने परमेश्वर की सच्चाई का बखान इस तरह से किया है:

उसकी सच्चाई महान है

तेरी सच्चाई महान है, हे परमेश्वर मेरे पिता,
तेरी परछाई भी पीठ नहीं फेरती;
तू नहीं बदलता, तेरी करुणा सदा बनी रहती है;
तू जैसा अब तक था, आगे भी वैसा ही रहेगा।

कोरस:

तेरी सच्चाई महान है!
तेरी सच्चाई महान है!
हर भोर को मैं मेरी नई करुणा को देखता हूँ;
मेरी हर घटी को तूने पूरा किया –
तेरी सच्चाई महान है, प्रभु मुझ पर!

ग्रीष्म और शरद, वसन्त और कटनी,
सूर्य, चन्द्रमा और तारे अपनी गति में ऊपर,
सारी प्रकृति के साथ मिलकर तेरी गवाही के गीत गाते हैं
तेरी सच्चाई, करुणा और प्रेम का गीत![1]

टिप्पणी

1. कॉपीराइट 1923, नवीनीकरण 1951 होप पब्लिशिंग कम्पनी, केरोल स्ट्रीम, आइएल, 60188। सर्वाधिकार सुरक्षित, अनुमति से उपयोग में लाया गया।

–28–

धीरज

खो देने में धीमा

यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और
अति करूणामय है... ।

– गिनती 14:18

परमेश्वर के धीरज का अर्थ है कि वह मनुष्य के पाप, मनुष्य द्वारा उकसाए जाने, और मनुष्य के विद्रोह से निपटने में नियंत्रण और संयम बरतने के लिए इच्छुक और सक्षम है। वह पाप का दण्ड तुरन्त दे सकता है, और कुछ मामलों में उसने ऐसा किया भी है।[1] किन्तु, सामान्य रूप से, उसने मानव की दुष्टता को अद्‌भुत सहनशीलता और धीरज दिखाते हुए सहा है। सच्चाई तो यह है कि यदि हम में से जितने भी उसके विषय में इस बात का वर्णन करने के लिए आज जीवित हैं, तो वह सब उसकी सहनशीलता का ही परिणाम है!

यहोवा मूसा के सामने ''यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य'' है (निर्ग. 34:6)।

नहूम ने उसके विषय में कहा है कि वह ''विलम्ब से कोप करने वाला और बड़ा शक्तिमान है'' (1:3)।

पौलुस अपने आप को धर्मी और नैतिकतावादी समझने वाले हर एक व्यक्ति से यह प्रश्न करता है, ''क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मनफिराव को सिखाती है'' (रोमि. 2:4)।

दूसरे स्थान पर, पौलुस प्रभु के विषय में कहता है कि '' कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही'' (रोमि 9:22)।

परमेश्वर पापियों पर तुरन्त कार्यवाही क्यों नहीं करता है? इस प्रश्न के उत्तर में, पतरस ने लिखा है, ''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; बरन यह कि सब को मनफिराव का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)।

परमेश्वर यदि सारे पापों का दण्ड तुरन्त वहीं का वहीं दे दे, तब भी यह न्यायसंगत होगा और वह धर्मी ठहरेगा। वह चाहता है कि लोग मनफिराएं और जीवित रहें। इसलिए, वह लोगों की अक्खड़पन, गुस्ताखी, ढिठाई और द्वेष को लम्बे समय तक सहन करता रहता है। वह न्याय के दिन को लम्बित करता जाता है ताकि पुरुष, स्त्री, लड़के, और लड़कियाँ प्रभु यीशु मसीह के छिदे हुए पाँव के पास आएं और उसे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि, वह चाहता है कि यही सहनशीलता हमारे जीवनों में भी विकसित हो। वह देखना चाहता है कि उकसाने और उत्तेजित करने वाली परिस्थितियों को हम धीरज के साथ और जय प्राप्त करते हुए सहते जाएं। इसका अर्थ यह है कि हमें गर्म–मिजाज़ी नहीं होना है; हमें जल्दी अपना आपा नहीं खोना है। हमें क्रोध से आसानी से हार नहीं मानना है। हमें बदला लेने का प्रयास नहीं करना है। बल्कि, अपमान और दुर्व्यवहार के बाद भी हमें एक विजयी धीरज का प्रदर्शन करना है।

कोरी टेन बूम की पुस्तकों[2] में से एक में एक घटना का उदाहरण दे कर इसका बहुत सुन्दर चित्रण किया गया है। कोरी टेन बूम अपनी बहन के साथ एक नज़रबन्दी शिविर (कॉन्सनट्रेशन कैम्प) में थी, जहाँ वह अवर्णनीय पीड़ा और अपमान झेल रही थी। तौभी बेट्सी अपनी बहन कोरी टेन बूम से यह कह पा रही थी कि जब वे बाहर निकलेंगी, तो उन्हें इन लोगों की सहायता के लिए कुछ करना चाहिए। स्वाभाविक रूप से, कोरी को लगा कि बेट्सी संगी बन्दियों के विषय में कह रही है। परन्तु बेट्सी उनके विषय में बात नहीं कर रही थी। वह उन्हें सताने वाले सिपाहियों के विषय में बात कर रही थी।

कोरी ने लिखा है, ''मैं सोचने लगी, कि मेरी यह बहन किस तरह की व्यक्ति है, वह किस मार्ग का अनुसरण कर रही है। जबकि उसके साथ मैं इस कठोर भूमि पर मुश्किल से चल पा रही थी।''[3] कोरी ने देखा कि बेट्सी स्वर्गीय मार्ग पर चल रही है, जबकि वह स्वयं सामान्य मार्ग पर चल रही है और माँस और लोहू से ऊपर उठ पाने में असफल है। अवश्य ही, यह सत्य है कि बेट्सी और कोरी दोनों ही सहनशीलता के मार्ग पर चल रहे थे, भले ही कोरी अपने विषय में ऐसा दावा नहीं कर रही थी।

मसीही शहादत के इतिहास में, पुराने और आधुनिक समय दोनों ही में, हम सहनशीलता और धीरज के अनगिनत अविश्वसनीय उदाहरणों को देख सकते हैं। हमारे लिए यह अचम्भे की बात है कि वे न सिर्फ क्रूरतम यातनाओं को सह सके, बल्कि उन्हें अकारण यातना देने वाले दोषियों के लिए वे प्रार्थना भी कर सके।

हम में से अधिकांश के साथ ऐसा नहीं होता कि हमें मसीह के कारण शारीरिक पीड़ा सहनी पड़े। हमारा धीरज छोटे छोटे विघ्नों, अपमानों, उपहासों, और गालियों को सहने तक ही सीमित है। किन्तु, हमें प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए कि हम किसी न किसी रीति से उसके नाम के लिए दु:ख उठाने के योग्य तो समझे गए।

एडवर्ड डेन्नी नामक एक गीतकार ने उद्धारकर्ता के धीरज और सहनशीलता की बड़ाई इन शब्दों में की है:

तेरे शत्रु तुझसे बैर रखेंगे, तुझे तुच्छ जानेंगे, और तुझ से घृणा करेंगे,
तेरे मित्र शायद तुझ से विश्वासघात करें;
क्षमा करने से तब भी तू पीछे नहीं हटेगा,
तेरा हृदय सिर्फ प्रेम रख सकता है।

टिप्पणियाँ

1. पुराना नियम में इसका एक उदाहरण हमें उज्जा (2 शमू. 6:6–9) के रूप में देख सकते हैं। नया नियम में हनन्याह और सफीरा इसके उदाहरण हैं (प्रेरित 5:1–11)।

2. कोरी टेन बूम, *द हाइडिंग प्लेस,* पृ. 161।

3. तत्रैव।

–29–

प्रभु महान है

देख, ईश्वर महान और हमारे ज्ञान से कहीं परे है,
और उसके वर्ष की गिनती अनन्त है।

– अय्यूब 36:26

ईश्वर . . . बड़े बड़े काम करता है जिनको हम नहीं समझते।

– अय्यूब 37:5

मानव के मस्तिष्क में कौन सा सबसे अधिक महान विचार आ सकता है? परमेश्वर के विषय में मनन। मानव की बुद्धि इससे अधिक ऊँचा और इससे अधिक योग्य विषय कभी नहीं पा सकती। कोई भी अन्य विषय इसके आसपास भी नहीं आ सकता। परमेश्वर के बारे में विचार करना हमारी मानसिक इन्द्रियों का सबसे बड़ा कार्य और सबसे शानदार अभ्यास है।

हमें कितना कृतज्ञ होना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें ऐसा मन दिया है कि हम उसके ज्ञान, उसकी पवित्रता, उसके प्रेम, उसकी सामर्थ्य, और उसकी बुद्धि पर ध्यान कर सकते हैं। यह सच है कि, हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है। परन्तु कोई बात नहीं! तौभी यह एक बड़ा विशेषाधिकार है कि हम अपने मनों का विस्तार उसके ईश्वरीय गुणों पर मनन करने के लिए कर सकते हैं।

मैं अक्सर उन बड़े बड़े वैज्ञानिकों और दार्शनिकों के बारे में सोचता हूँ, और उन भारी–भरकम मुद्दों के विषय में भी सोचता हूँ जिनसे इन लोगों को झूझना पड़ता है। परन्तु उन में से अनेक का सामना सबसे बड़े मुद्दे – ''अनादि–अनन्त परमेश्वर'' से नहीं हुआ है। मुझे लगता है कि मानव बुद्धि का स्वयं के सृष्टिकर्ता और प्रभु के विषय में कभी भी गम्भीरतापूर्वक और गहराई से विचार किए बिना ही जीना और मरना, और तुलना में कम महत्व की बातों के प्रति समर्पित हो जाना एक भ्रष्ट और बेकार प्रवृत्ति का एक उदाहरण है।

परमेश्वर के विषय में कुछ समय तक विचार कर पाने के बाद, अब हमें यह समझ जाना

चाहिए कि यह विषय इतना बड़ा है कि यह हमारी बुद्धि में पूरी तरह से नहीं समा सकता। हम उन छोटे बच्चों के समान हैं, जो सागर के किनारे छोटी–छोटी बाल्टियों को ले कर खड़े हैं। हम अपनी बाल्टियों को तो भर सकते हैं, परन्तु सागर को खाली नहीं कर सकते। हमें इस बात को लेकर परेशान नहीं होना चाहिए कि हम परमेश्वर को पूरी तरह से नहीं समझ सकते। यदि हम उसे पूरी तरह से समझ जाते, तो हम उतने ही महान होते जितना कि वह है। अनन्तकाल तक भी हम लगातार उसके व्यक्तित्व और कार्य के विषय में ज्ञान हासिल करते रहना जारी रखेंगे। तीसरी शताब्दी के एक मसीही शहीद, नोवातियन ने लिखा है,

> परमेश्वर हमारे मस्तिष्क से बड़ा है। उसकी महानता को समझा नहीं जा सकता। यदि हम उसकी महानता को समझ जाते, तो वह मनुष्य के मस्तिष्क से छोटा होता जो परमेश्वर को समझ सकता। वह सारी भाषाओं से बड़ा है, और कोई भी वाक्य उसे व्यक्त नहीं कर सकता। निस्संदेह, यदि कोई वाक्य उसे व्यक्त कर सकता, तो वह (परमेश्वर) मानव बोली से छोटा होता, जो ऐसे वाक्य में अपने व्यक्तित्व को समेट कर उसमें समा सकता। उसके विषय में हमारे सारे विचार उससे छोटे हैं, और हमारी ऊँची से ऊँची बातें उसकी तुलना में तुच्छ हैं।[1]

अब, परमेश्वर के गुणों को सारांश में लेते हुए, आइये हम उसकी महानता के विषय में विचार करें जैसा कि यह बाइबल में प्रगट की गई है। जब हम पवित्रशास्त्र के विभिन्न स्थलों को पढ़ते हैं, तो हम पाएंगे कि शब्द विचारों के भार से दब जाते हुए प्रतीत होते हैं। परमेश्वर का आत्मा मनुष्य की भाषा को इस तरह से काम में लाता है कि हम बेहतर रीति से उसे समझ सकें। वह परमेश्वर को मानव रूप और व्यक्तित्व में प्रस्तुत करता है कि हम उसे समझ पाएं। वह व्यक्त न की जा सकने वाली बातों को व्यक्त करने के लिए समाप्त हो जाने वाली शब्दावली का प्रयोग करता है।

अय्यूब 26:14 को पढ़ें। इससे पहले के पदों में, अय्यूब ने प्रभु के विषय में एक अद्‌भुत वर्णन किया है। यह पुराना नियम में परमेश्वर के विषय में किए गए विस्मित कर देने वाले वर्णनों में से एक है, जिसमें सृष्टि के कार्य के विषय में उसकी बुद्धि और सामर्थ्य को प्रगट किया गया है। फिर यह कह कर अय्यूब के पास शब्द समाप्त हो जाते हैं,

> देखो, ये तो उसकी गति के किनारे ही है;
> और उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी सुन पड़ती है,
> फिर उसके पराक्रम के गरजने का भेद कौन समझ सकता है?

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर इतना महान है कि हम उसके मार्ग के किनारों और उसकी सामर्थ्य की फुसफुसाहट को ही सुन सकते हैं। यदि किनारा और छोर इतना विस्मित कर देने वाला है, तो फिर अपनी सारी परिपूर्णता में वह कैसा होगा? और यदि फुसफुसाहट को ही हमारे कान के पर्दे सह नहीं पाते हैं तो फिर गर्जन कैसा होगा?

इसी तरह से यदि हम भजन 104:32 को पढ़ें, तो हमें परमेश्वर की महानता के विषय में एक और बात पता चलती है। वह कहता है, ''उसकी दृष्टि ही से पृथ्वी काँप उठती है, और उसके छूते ही पहाड़ों से धुंआं निकलता है।'' परमेश्वर की तिरछी नज़र भी भूकम्प ला सकती है, और उसके छूने मात्र से ज्वालामुखी फूट सकते हैं। यही सामर्थ्य है! सर्वशक्तिमान यदि सिर्फ एक बार देख ले तो पृथ्वी की नेवें बुरी तरह से हिल जाएंगी, और उसके हाथों का हल्का सा स्पर्श ज्वालामुखी को पिघला कर टनों लावा उगल सकता है। यदि ये हल्के हल्के कारण ऐसा तहस–नहस कर देने वाला प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं, तो फिर यदि परमेश्वर अपनी सारी की सारी सामर्थ्य उण्डेलगा तो क्या होगा?

भजन 113:6 में लिखा है कि परमेश्वर ''आकाश और पृथ्वी पर भी, दृष्टि करने के लिये झुकता है'' या अपने को दीन करता है। यह परमेश्वर के लोकातीत और अनुभवातीत गुण का वर्णन करने का एक सुन्दर तरीका है – यह सच्चाई कि वह हमारे अनुभव या हमारे विश्व की सीमाओं से परे है। यदि हम अपनी एड़ी के बल खड़े हो जाएं, तब भी हम उन वस्तुओं को नहीं देख पाएंगे जो स्वर्ग में हैं। हमारा सबसे दूरस्थ विस्तार परमेश्वर के लिए हल्के से झुकाव के बराबर है। यह मानवीय मस्तिष्क कभी कल्पना नहीं कर सकता कि परमेश्वर सारी सृष्टि से कितना ऊँचा है।

भजन 147:4 कहता है, ''वह तारों को गिनता,और उन में से एक एक का नाम रखता है।'' यहाँ पर अचम्भित करने वाली दो बातें हैं – बिना रूके और संख्या की कमी महसूस किए बिना ही गिनते जाने और बिना दोहराए लाखों करोड़ों नाम रखने की क्षमता। हम नहीं जानते कि तारों की संख्या क्या है, और यदि हम जानते भी, तो इस संख्या को व्यक्त कर पाने के लिए हमारी शब्दावली में शब्द नहीं हैं। ब्रिटिश खगोलशास्त्री सर जेम्स जींस ने एक बार कहा था कि बहुत सम्भव है कि आकाश में उतने तारे हैं जितने कि सारे संसार के समुद्र के किनारे बालू के किनके हैं। इस बात के प्रकाश में, यह रोचक है कि जब परमेश्वर ने अब्राहम से अनगिनत सन्तान देने की प्रतिज्ञा की थी, तब उसने तारों और बालू के किनकों की बात एक ही साँस में कह दिया था (उत्प. 22:17)। तारों को गिनने में, परमेश्वर यह

दर्शाता है कि वह असीमित क्षमता रखने वाला परमेश्वर है। हर एक का नाम रखने में, वह यह दर्शाता है कि वह एक असीमित विविधिता वाला परमेश्वर है।

निश्चय ही, वह टेलीस्कोप वाला परमेश्वर है। परन्तु यदि हम अगले पद को देखें, तो पाएंगे कि वह माइक्रोस्कोप वाला परमेश्वर भी है: ''वह खेदित मनवालों को चंगा करता है, और उनके शोक पर मरहम पट्टी बान्धता है'' (भजन 147:3)। जो खगोलीय क्षेत्र के एक एक विवरण को जानता है वह अपने दु:खी प्राणियों की भी बहुत चिन्ता करता है। व्यक्तिगत रूप से ऐसी चिन्ता अद्‌भुत बात है जब हम यह ध्यान देते हैं कि विश्व में हमारा ग्रह एक बारीक सा तिनका है, और इस पृथ्वी की तुलना में भी हम कितने अदने हैं। तौभी वह परमेश्वर जो तारों को गिनता और उनमें से एक एक का नाम रखता है वही परमेश्वर अनुग्रह करके नीचे झुकता है और टूटे मन वालों को चंगा करके उनके घावों में पट्टी बान्धता है।

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, ''जिस वर्ष उज्जियाह राजा मरा, मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया'' (6:1)। उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया! इसका अर्थ क्या है? घेर वस्त्र का वह हिस्सा होता है जो पीछे नीचे की ओर लहराता रहता है। सिर्फ इसी स्थल में, यह वास्तविक वस्त्र के लिए नहीं, बल्कि, प्रभु की महिमा के लिए प्रयोग में लाया गया है – उसका तेज और उसकी नैतिक श्रेष्ठता। कल्पना करें कि एक कलीसिया भवन में एक विवाह हो रहा है जहाँ पर दुल्हन के गाऊन का घेर इतना लम्बा है कि यह पूरे भवन में लहरा रहा है। अब इस चित्र को प्रभु की महिमा के सन्दर्भ में देखें। यदि उसकी महिमा के घेर से मन्दिर भर जाता है, तो फिर उसकी सम्पूर्ण महिमा का प्रदर्शन कैसा होगा?

यशायाह 40 में, प्रभु के विषय में एक और अतिउत्तम वर्णन किया गया है। परमेश्वर अपने लोगों को उलाहना दे रहा है क्योंकि वे मूर्तिपूजक बन गए हैं। यह अपमान की अन्तिम हद है – इस महिमामय व्यक्ति से जिसका अब तक हम वर्णन कर रहे हैं, मुँह फेर कर मनुष्य के द्वारा पक्षी, चौपाए पशु, या साँप की खुदी हुई मूरत की उपासना। यदि कोई और होता तो वह मनुष्यजाति को काफी पहले ही समाप्त कर दिया होता, परन्तु प्रभु धीरज के साथ सहते हुए लोगों से आग्रह करता है:

> किस ने महासागर को चुल्लू से मापा
> और किस के बित्ते से आकाश का नाप हुआ,
> किस ने पृथ्वी की मिट्टी को नपवे में भरा
> और पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को काँटे में तौला है?

किस ने यहोवा के आत्मा को मार्ग बताया
वा उसका मन्त्री होकर उसको ज्ञान सिखाया है?
उस ने किस से सम्मति ली
और किस ने उसे समझाकर न्याय का पथ बता दिया
और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है?
देखो, जातियां तो डोल की एक बून्द
वा पलड़ों पर की धूलि के तुल्य ठहरीं;
देखो, वह द्वीपों को धूलि के किनकों सरीखे उठाता है।
लबानोन भी ईंधन के लिये थोड़ा होगा
और उस में के जीव–जन्तु होमबलि के लिये बस न होंगे।
सारी जातियां उसके सामने कुछ नहीं हैं,
वे उसकी दृष्टि में लेश और शून्य से भी घट ठहरी हैं (यशायाह 40:12–17)।

ध्यान दें कि अब तक हम जिस परमेश्वर के विषय में मनन कर रहे हैं उसके विषय में वह क्या कहता है। वह इतना महान है कि वह महासागरों – अटलांटिक, प्रशाँत, हिन्द महासागर, आर्कटिक, अंटार्कटिक और सारे समुद्रों और झीलों, और तालाबों और नदियों – को अपने चुल्लु से नापता है। वह इतना महान है कि वह आकाश को बित्ते से नापता है। बित्ता अंगूठे के सिरे से लेकर छोटी उंगुली के सिरे तक की दूरी है। परमेश्वर का बित्ता पूरे आकाश को समा लेता है। वह पृथ्वी की धूल को, नपुए के एक तिहाई से नापता है। वह अपने तराजू से प्रतापी पहाड़ों और पहाड़ियों को तौल सकता है; उसके लिए वे कोई महत्व नहीं रखते। संसार के ताकतवर साम्राज्य, बाल्टी में बची हुई अन्तिम बूंद के समान हैं – और उनका मूल्य दवा बेचने वाले के नपुए के तल के खादे से अधिक नहीं है। यदि हम लबानोन के सारे केदार को आग जलाने और यहाँ के सारे पशुओं को बलिदान चढ़ाने के लिए भी लें ले, तौभी ऐसे महान परमेश्वर के लिए होमबलि पूरी तरह से अधूरी रहेगी। नहूम ने लिखा है,

यहोवा विलम्ब से कोप करने वाला और बड़ा शक्तिमान है;
वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा (1:3)।
यहोवा बवंडर और आँधी में हो कर चलता है,
और बादल उसके पाँवों की धूलि हैं।

इस पर विचार करें! तूफान और आँधी हम पर अपने तरीके से हावी हो जाते हैं। परन्तु परमेश्वर उन्हें अपने तरीके से नियंत्रण में रखता है। हमारे लिए, बादल हिमालय की ऊँची ऊँची चोटियों के समान हैं, परन्तु वह इतना ऊँचा है कि वे उसके पाँव की धूल से अधिक नहीं

हैं। विलियम कूपर ने इसे इस तरह से व्यक्त किया है: ''वह अपने कदमों को समुद्र में रखता है और तूफान पर सवारी करता है। हवाएं और लहरें उसकी इच्छा का पालन करती हैं।''

इसी तरह से, हबक्कूक की पुस्तक में, हम परमेश्वर का, उसके अद्वितीय और अतुलनीय वैभव में एक और दर्शन देखते हैं:

> ईश्वर तेमान से आया,
> पवित्र ईश्वर परान पर्वत से आ रहा है।
> उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है,
> और पृथ्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है।
> और इन में उसका सामर्थ्य छिपा हुआ था (3:3–4)।

वह हमारे सामने विचार का यह प्रश्न रखता है कि, यदि यह उसकी छिपी हुई सामर्थ्य है, तो फिर इसका पूर्ण प्रगटीकरण कैसा होगा?

यह महत्वपूर्ण बात है कि परमेश्वर के विषय में हमारे विचार महान हों। यदि हम उसे अपने स्तर तक नीचे ले आएंगे, तो हमारा जीवन भी ऐसा ही नीचे आ जाएगा। यदि हमारा परमेश्वर बहुत छोटा है, तो हम कभी भी उसके राज्य में महानता तक ऊपर नहीं उठ पाएंगे। फ्रेड्रिक विलियम फेबर ने इसे सारांश में इस तरह से व्यक्त किया है:

> परमेश्वर के विषय में विचार हमारे हृदय को पृथ्वी से हटा कर उसकी ओर
> आकर्षित करता और खींचता है
> और पल पल बीतते जाते दृश्यों और क्षणभंगुर सुखविलास के प्रति
> घृणा उत्पन्न करता है!
> हमारे प्राण को बचा लेना, और अनन्त आग से दूर भाग जाना ही पर्याप्त नहीं है,
> परमेश्वर के विषय में विचार हृदय को और ऊँची आकांक्षाओं के लिए उभारता है।

टिप्पणी

1. नोवातियन, *ऑन द ट्रिनिटी,* 26–27 पृष्ठों में।

समापनः
ऐसा है हमारा परमेश्वर

अनन्तकाल तक तेरे लिए,
मैं एक आनन्द का गीत गाता रहूंगा;
परन्तु ओह! आदि से अनन्तकाल भी
तेरी स्तुति कर पाने के लिए कम पड़ जाते हैं!

– जोसफ़ एडिसन

परमेश्वर के गुणों पर लिखी गई पुस्तक कभी समाप्त नहीं हो सकती। कम्प्यूटर काम करना बन्द कर देगा और छपाई मशीन थम जाएगी, परन्तु इस विषय की सतह भी शायद ही समेटी जा सकेगी। यह इतना व्यापक है कि यह इस जीवन में कभी समाप्त नहीं हो सकता, और अनन्तकाल भी इसकी ऊँचाई, गहराई, लम्बाई, और चौड़ाई को नाप पाने के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

हम परमेश्वर को इतना ही जानते हैं जितना कि वह बाइबल और यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रगट किया गया है। और तौभी, हम उसके विषय में कितना थोड़ा जानते हैं! हम दर्पण में धुंधला सा देख सकते हैं, परन्तु हम पूरी तरह से उसे समझ नहीं सकते। उसे पूरी तरह से समझ पाना मनुष्यों या स्वर्गदूतों की क्षमता से बाहर है।

उसके गुणों की श्रेष्ठताओं का वर्णन करने के लिए सारे विश्व को छान मारने के बाद भी हम वापस आकर यही कह सकते हैं कि हम उसके विषय में एक बिन्दु भी न कह सके। उसकी श्रेष्ठताओं का वर्णन कर पाने के लिए सारी भाषाओं की सारी शब्दावलियाँ निर्बल हैं। जॉन डारवेल, अंग्रेजी भजन लेखक ने बिल्कुल सही कहा था कि यदि हम ''बुद्धि, प्रेम, सामर्थ्य के उन सारे महिमामय नामों को जोड़ दें जिन्हें मनुष्य ने अब तक जाना है, जिन्हें स्वर्गदूतों ने अब तक जाना है, तब भी ये सारे के सारे उसकी योग्यता का बयान कर पाने के लिए तुच्छ[1] ठहरेंगे, उद्धारकर्ता का वर्णन करने के लिए अत्यंत निम्न ठहरेंगे।''

जिस तरह से परमेश्वर असीमित है, वैसे ही उसके गुण भी हैं। उसकी पवित्रता पूर्ण और

परम है। उसकी सर्वसत्ता और सर्वाधिकार पूर्ण है। उसकी धार्मिकता सिद्ध है। वह पूर्णत: अपरिवर्तनीय, पूर्णत: विश्वासयोग्य, और सामर्थ्य में असीमित है। उसका ज्ञान समाप्त नहीं हो सकता, और उसकी उपस्थिति की कोई सीमा नहीं है। उसकी बुद्धि की कोई सीमा नहीं है, उसका प्रेम वर्णन से बाहर है, और उसका अनुग्रह कल्पना से परे है। यदि उसकी दया गिनती से अत्यंत परे है, तो उसका कोप माप सकना सम्भव नहीं है। उसकी भलाई, बिना किनारा वाला एक सागर है, और उसका धीरज, बिना छोर का एक आकाश है।

परमेश्वर के अस्तित्व का न कभी आरम्भ हुआ और न कभी अन्त होगा। उसके अस्तित्व से बाहर की किसी भी चीज़ पर वह अपने अस्तित्व के लिए निर्भर नहीं है, और वह अपने कल्याण या सुख के लिए अपने से बाहर के किसी भी व्यक्ति या वस्तु पर निर्भर नहीं है। वह पूरी तरह से अबोधगम्य है और इस लोक और हमारे अनुभव से पूरी तरह से ऊपर है। और इससे अधिक हम क्या कहें, वह अपने सारे के सारे गुणों से भी ऊँचा है।

परमेश्वर के सारे गुणों के बीच में एक सिद्ध संतुलन है। एक गुण को व्यवहार में लाने के लिए किसी भी दूसरे गुण से समझौता नहीं किया जाता, और उसका कोई भी गुण उसके किसी अन्य गुण से बड़ा नहीं है। हो सकता है कि हम प्रेम करने वाले हों, परन्तु साथ साथ धर्मी (न्यायसंगत) नहीं। हमारे पास बहुत ज्ञान हो परन्तु बड़ी बुद्धि नहीं। परन्तु परमेश्वर की सारी विशेषताएं सिद्ध हैं, और वे सिद्ध सामंजस्य के साथ एक साथ सह–विद्यमान रहती हैं।

. ईश्वर पवित्रों की गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य,
और अपने चारों ओर के सब रहनेवालों से अधिक भययोग्य है (भजन 89:7)।

क्योंकि यह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है,
वह मृत्यु तक हमारी अगुवाई करेगा (भजन 48:14)।

अर्न्स्ट लेंग के निम्नलिखित शब्द हमारे परमेश्वर के बारे में सारांश में काफी कुछ बयान करते हैं:

हे परमेश्वर, तू अथाह कुण्ड है!
तेरी सिद्धता का वर्णन कौन कर सकता है?
हे अपरिमित ऊँचाई! क्या तेरे लिए शब्द पर्याप्त हैं?
कि तेरे अनगिनत गुणों को दर्शा सकें?

तू अथाह गहराई है;
अपने दया के सिंहासन में मुझे डूबो दे!
मेरे हृदय में सच्ची बुद्धि नहीं है;
प्रेम से मुझे अपना ले और छिपा ले।

तेरा स्त्रोत आदि से है,
तेरे समान उसका कोई उद्‌गम नहीं;
जब समय आरम्भ हुआ तब भी तू था,
नीले आसमान में जब तारे जगमगाए
उससे पहले से तू है।

न बदलने वाला, पूर्णत: सिद्ध प्रभु,
जीवन के आधार का अपार सागर।
जो कुछ है और जो कुछ चलता-फिरता है
तेरे ही वचन से जीवित है;
यह जीवित है, और चलता-फिरता है,
और यह तेरी ही ओर से है।

तेरी महानता का वर्णन नहीं किया जा सकता,
तेरी महानता की किरण का अन्त नहीं,
जब क्षणभंगुर संसार खो जाता है, यह चमकता है;
तब भी जब पृथ्वी और आकाश भाग जाते हैं।

टिप्पणी

1. डेरवेल ने *तुच्छ* के लिए अंग्रजी के *मीन* शब्द का प्रयोग ''कम दर्जे,'' ''तुच्छ,'' और ''कम महत्व'' के अर्थ में किया था।

सहायक पुस्तकों की सूची

Baxter, J. Sidlow. *The Master Theme of the Bible Grateful Studies in the Comprehensive Saviorhood of Our Lord Jesus Christ* Wheaton Tyndale, 1973.

Blanchard, John, compiler. *Gathered Gold A Treasury of Quotations for Christians* Welwyn, England, Evangelical Press, 1984.

Brand, Dr. Paul, and Philip Yancey. *Fearfully and Wonderfully Made* Grand Rapids Zondervan, 1980.

Chafer, Lewis Sperry. *Systematic Theology* Vol 1 Dallas Dallas Seminary Press, 1953.

Charnock, Stephen. *The Existence and Attributes of God* 1969 Reprint Minneapolis Klock and Klock, 1977

Cutting, George. *Light for Anxious Souls* Oak Park, 111 Bible Truth Publishers, 1975.

Elliot, Elisabeth. *Shadow of the Almighty* New York Harper and Bros, 1958.

A Slow and Certain Light Waco Word, 1976.

Erdman, Charles R. *The Epistle of Paul to the Romans* Philadelphia Westminster Press, 1919.

Evans, William. *The Great Doctrines of the Bible* Chicago Moody, 1939

Hunt, Dave. *Global Peace* Eugene, Oreg Harvest House, 1990 ***Hymns of Truth and Praise.*** Belle Chasse, La Truth and Praise, 1971.

Julian of Norwich. *Revelations of Divine Love* London Methuen & Co, 1920.

Novatian. *On the Trinity* New York Macmillan, 1919.

Packer, J. I. *Knowing God* London Hodder and Stoughton, 1973.

Pierson, Arthur T. "The Gift of Righteousness" In *The Ministry of Keswick* 1st series Grand Rapids Zondervan, 1963

Pink, A. **W.** *The Attributes of God* Swengel, Pa Reiner Publications, n. d.

Spurgeon, Charles Haddon. *Treasury of the Bible* Grand Rapids Baker Book House, 1981.

Treasury of David Vols 4 and 5 Grand Rapids Baker Book House, 1981

Ten Boom, Corrie. *The Hiding Place* Washington Depot, Conn Chosen Books, 1971.

Thomas, I. D. E., compiler. *The Golden Treasury of Puritan Quotations.* Chicago: Moody Press, 1975.

Thompson, Francis. *Poetical Works.* London: University Press, 1913. **Tozer, A. W.** *The Knowledge of the Holy.* Reprint. Bromley, Kent, England: STL Books, 1981.

Periodical Articles

Davis, Malcolm. "The Transcendence of God." *Precious Seed Magazine,* May-June 1984.

Horlock, M. "The Eternal God." *Precious Seed Magazine,* Sept.-Oct. 1987.

Ponte, Lowell. "How Color Affects Your Moods." *Reader's Digest,* July 1982.

***Daily Notes of the Scripture Union* (Foreman).**